प्रकाशकीय

इस पुस्तक मे लेखक के चुने हुए एकाकी नाटको का सग्रह किया गया है। ये नाटक ऐसे विषयो पर लिखे गये है, जिनका हमारे निजी एव सामाजिक जीवन के साथ निकट का सबध आता है। बिना प्रेम, त्याग, पारस्परिक सहयोग, श्रम, कर्त्तव्य-पालन आदि के हमारा समाज और राष्ट्र आगे नही बढ सकते।

ये नाटक इन तथा ऐसे ही विषयो पर आधारित हे। इनकी सबसे बडी विशेषता यह है कि इनके पढने मे तो आनद आता ही है, साथ ही इन्हे मच पर भी आसानी से, बिना अधिक खर्चे के, खेला जा सकता है। इन नाटको की शैली और भाषा इस प्रकार की है कि सामान्य शिक्षित पाठक भी इनसे लाभ उठा सकते हे।

आशा है, इस पुस्तक का हिन्दी-जगत मे स्वागत होगा और यह अधिक-से-अधिक पाठको द्वारा पढी जायगी।

—मत्री

एकांकी-सूची

बरगद की छाया

१

बरगद की छाया

पात्र

विक्रमदेव	एक जमीदार
राकेश	दो अधेड उम्र के व्यक्ति
जीवन	
दु शासन	स्कूल-मास्टर
मुखिया	माधोदास
चरणदास	मुखिया
धरनीधर	गाव के पुरोहित
चन्दनसिंह	पहलवान
बालक	अन्य पात्र
रामू	
रघुवर	

[गाव की एक चौपाल के बाहर का लम्बा-चौडा चबूतरा, जिसपर एक तख्त पडा है। नीचे चटाइया बिछी हुई है। जीवन और राकेश का बाते करते हुए आना]

राकेश : दादा, यह हवेली बनकर बहुत अच्छी तैयार हुई है। कितनी वडी वैठक है, कितना वडा चवूतरा है। यहा पचायत और गाववालो की व्याह-शादिया अच्छी तरह

से हो सकती हैं। बस कमी है तो एक बात की

जीवन : क्या ?

राकेश : (मंच से नीचे की ओर इशारा करके) यहा एक बरगद का पेड लगाना चाहिए, जिसकी शीतल छाया मे हम सब सुख-चैन से बैठ सके, आराम कर सके ।

जीवन : क्या कहा ! बरगद का पेड ! बरगद की छाया ! **(फीकी हँसी)** बरगद की छाया बडे भाग्य से मिलती है, भैया ! अपने-आपको इन्सान कहना आसान है, पर इन्सान बनना बडा मुश्किल है ।

राकेश : बरगद की बात करते-करते आप तो इन्सान की बात करने लग गये, दादा ! आखिर आप कहना क्या चाहते हैं?

जीवन : मै जिस बरगद की छाह मे पला हू, राकेश, वैसा बरगद कही नही मिल सकता ! वैसा बरगद बन सको तो सारे गाव को बडी शीतल छाया मिल सकती है, स्नेहमयी छाया ।

राकेश : आप तो रहस्यमयी बात कह रहे है, जीवन दादा !

जीवन : नही, कोई रहस्यमयी बात नही । सच्चे-सीधे जीवन की कहानी है । सुनना चाहो तो सुना सकता हू । उस बरगद के साथ काटे हुए जीवन का एक-एक दृश्य मेरी आखो के सामने घूमने लगा है । बात आज से कोई दस-बारह साल पहले की है। मै जिस आदमी की कहानी कहने जा रहा हू, वह इस दुनिया मे है या नही, मै नही जानता, किन्तु यह जानता हू कि उनके यश की गाथा

आज भी सबके दिलो पर अकित है । उनका नाम था—विक्रमदेव ! वह जमीदार थे, लम्बा चौडा शरीर, छाती तक लहराती सफेद दाढी । लोग उन्हे भीष्म पितामह कहते । साठ बरस की उम्र मे भी साढे तीन मन के मुगदर बडी आसानी से घुमा लेते ।

राकेश : साढे तीन मन के !

जीवन · हा, साढे तीन मन के । पच्चीस गावो के मालिक । जाति के ब्राह्मण । वौहरे कहलाते । अपनी रियाया पर असीम प्रेम । ऊपर से वज्र की तरह कठोर, पर हृदय के मक्खन । बालक की तरह सरल । गाववाले अनुभव करते, उनपर पिता की छाया है । बरगद की छाया की तरह घनी । वह सचमुच वट-वृक्ष ही थे । सन्तान के नाम पर एक पुत्री थी । उसका विवाह करके वह निश्चिन्त हो चुके थे । पुत्र न होने का उन्हे कोई दु ख न था । सच बात यह है कि पुत्र के विषय मे सोचने का उन्हे अवकाश ही कहा था ! गाववालो के झगडे सुलझाने मे लगे रहते थे । पढे-लिखे विद्वान ब्राह्मण थे । सधे हुए शिकारी । बात कम करते । जरूरत पडने पर ही मुह खोलते । उनके स्वभाव मे कई विचित्र बातो का मेल था । दगल कराने और घोडे पालने का उन्हे बहुत शौक था । एक दिन शाम को उनके सामने से एक बालक रोता हुआ गुजरा ।

[**कहते हुए जीवन और राकेश एक ओर चले जाते है ।**

मंच की दूसरी ओर से एक बालक रोता हुआ आता है। दूसरी ओर से विक्रमदेव और जीवन आते हैं।]

विक्रम क्यो रोता है ? किसका बालक है ?

जीवन . भीमा धीवर का है, बापू ।

विक्रम . पर रोता क्यो है ? इसे चुप कराओ। बच्चे रोने के लिए नही, हॅसने-खेलने और खिलने के लिए होते है। **(पुचकारते हुए)** चुप हो जा, बेटा। बता, क्या बात है ? क्यो रोता है ? किसने मारा है, तुझे ? तेरे बाप ने ?

बालक · नही, बाप ने नही मारा।

विक्रम : मा ने ?

बालक : नही, मा ने भी नही ।

विक्रम : तो फिर किसने मारा है ?

बालक : मास्टरजी ने ।

विक्रम · मास्टरजी ने ? क्यो, किस बात पर ? पढता नही होगा, ठीक ढग से ? क्यो ठीक है न ?

बालक : नही, यह बात नही है, बापू। परसो मैंने घर से ले जाकर फीस उन्हे दे दी। पर आज फिर मागने लगे। मैंने कहा—मैंने तो परसो फीस के पैसे दे दिये थे। बस, यह सुनते ही लगे पीटने। बोले, नही दिये। जाओ, घर जाकर कहना, पैसे गुम हो गये हैं। और दो।

विक्रम : हू, यह बात है। बडा बेरहम आदमी दीखता है। **(माथा छुते हुए)** देखो तो, कैसी कनपटी सुजा दी है। जीवन, अस्तबल से हमारी सफेदा लाओ। 'अरे, जा जल्दी

कर ।

जीवन सफेदा तो चरने गई है, बापू । लोटन है, उसे ले आऊ ?

विक्रम . हा जा । लोटन को ही ले आ ।

जीवन · क्या आप गाव से बाहर जायगे ? यहा तो रात को पचायत बैठनेवाली है ।

विक्रम तबतक लौट आऊगा । जा, जल्दी से ला । (**जीवन जाता है**) क्यो रे, क्या नाम है तेरे मास्टर का ?

बालक दु शासन ।

विक्रम (**क्रोध से**) दु शासन ! समझा । इस नाम के कारण ही यह आदमी इतना क्रूर है ।

जीवन (**आते हुए**) यह लो बाबा, घोडा आ गया ।

विक्रम आ बेटा । अरे जीवन, इसे उठाकर जरा घोडे पर बिठा दीजिओ । और सुन, इस बालक के घर भी कह दीजियो कि बापू के साथ गया है ।

[**मच पर अन्धेरा छा जाता है । नेपथ्य मे घोडे की टापें उभरती है । प्रकाश होने पर गाव के लोग बैठे बाते कर रहे है, हुक्का पी रहे है, तभी विक्रमदेव आते है । बालक साथ है । गाववाले उठकर खडे हो जाते है ।**]

विक्रम जै राम जी की ।

मुखिया बडे भाग जो इधर की सुध ली । अरे, कलवा, भीतर से दरी लाकर खाट पर बिछा ।

विक्रम · नही, ज्यादा देर नही बैठना है । गाव जल्दी ही लौटना है । वहा पचायत होनेवाली है

मुखिया : अब आये हो तो थोडी देर तो बैठना ही पडेगा, बापू । दूध पिये बिना थोडे ही जाने देगे हम ।

विक्रम : कोई जरूरत नही, पर जिद्द करते हो तो पी लेंगे, थोडा-सा दूध । पर पहले दु शासन पण्डित को बुलाकर लाओ ।

दुःशासन : मै यही हू, बापू । मेरा ही नाम दु शासन है ।

विक्रम : हूं ! देखने-सुनने मे तो बुरे नही लगते । **(गुस्से से)** तुम्ही पढाते हो इन बच्चो को ?

दुःशासन : जी हा ।

विक्रम : इन्हे पढाने के लिए तुम्हे रक्खा है या पीटने के लिए ? **(प्यार से)** माली बनो, जगली बैल नही । पौधो को पनपाओ, उखाडो नही । सुनो, इसने तुम्हे फीस लाकर दी थी कि नही ?

दुःशासन : (चुप रहता है)

विक्रम : ठीक है, मै समझ गया । देखो कभी कुछ जरूरत हो तो मेरे पास आ जाया करो । अभी तो जिन्दा हू, भगवान की कृपा से । तुम्हारी सब मुसीबतो मे साथ दूगा । और सुनो ।

दुःशासन : जी बापू !

विक्रम : मै जानता हू, तुम बुरे नही हो, पर एक दिन हो जरूर जाओगे । यह सब तुम्हारे नाम का असर है । रावण, कुम्भकरण, कस, दुर्योधन और दु शासन ! भला ये भी कोई भले आदमियो के रखने के नाम है ! दुर्योधन

और दु शासन के असली नाम सुयोधन और सुशासन थे। पर बुरे काम करते देख लोगो ने उनके नाम दुर्योधन और दु शासन रख दिये। जल्दी बदलो इस नाम को **(सोचते हुए)** अच्छा, यह समझो कि अर्जुन हुआ आज से तुम्हारा नाम। मुखियाजी ।

मुखिया : आज्ञा करो, बापू ।

विक्रम : आज्ञा क्या करनी है, मुखियाजी । यह लो पाच रुपये। कल पाठशाला और गाव के लडको मे पण्डितजी का नाम बदले जाने की खुशी मे मिठाई वाट देना। क्यो भाई अर्जुन, तुमने नाम बदले जाने का बुरा तो नही माना ?

दु:शासन : नही बापू, आपकी आज्ञा सिर-माथे पर ।

विक्रम : जियो बेटा! हमारा यह पक्का विश्वास है कि नाम का असर आदमी के काम पर जरूर पडता है । अब हमीको लो। अगर हमारा नाम विक्रम न होता तो क्या साठ साल की उम्र मे साढे तीन मन के मुगदर घुमा लेते ? यह देखो, तुम्हारे सामने इस गाव के साहूकार भिखारी-दास बैठे हैं। चालीस की उम्र मे सत्तर के लगते है। हजारो रुपये धरती मे गढे होगे। पर यह नही कि उन्हे उखाडकर कुछ खाये-पिये, मोटे-ताजे बने। नाम का असर है। भिखारी नाम है, भिखारी की-सी जिन्दगी काटेगे। पहले तो दास शब्द से ही मुझे चिढ है। पर चलो, अगर दास बनना ही है तो किसी अच्छे का बनो।

भला भिखारी का दास बनकर क्या सुख पाओगे ! **(सब हँसते है)** हँसने की बात नही है, भाई । यह सोचने की बात है । मै तो कहता हू, मुखियाजी, सब गावो मे नाम बदलने का यज्ञ होना चाहिए । घूरेमल, कूडाराम, डगरचद इस तरह के सब नाम बदल देने चाहिए ।

मुखिया : ऐसा ही होगा, बापू ! और उसपर मिठाई आपकी ओर से बाटी जायगी ।

विक्रम : भला यह भी कोई पूछने की बात है । अच्छा, अब हम चलेगे ।

मुखिया : पर जाने से पहले दूध का एक गिलास तो पीते जाओ, बापू । ला रे, दूध इधर ला ।

विक्रम : हू ! यह तो हमारे लिए हुआ और हमारे इस नन्हे साथी के लिए ! क्या इसे दूध पीना नही आता ।

मुखिया : (घबराकर) अरे हा । **(बात बदलकर)** इसके लिए कुम्हार के घर से कुल्हड मगवाया है । यह धीमर है ।

विक्रम . ठीक ! और इसका जूठा वर्तन तुम्हारे घर मे कोई नही माजेगा ! अच्छी बात है । जल्दी से एक गिलास दूध और मगवाओ । हम इसके जूठे गिलास को माज देगे । ब्राह्मण के हाथ से मजने पर गिलास शुद्ध हो जायगा । जल्दी करो, मै जानता हू, तुमने कुम्हार के घर से कुल्हड मगवाने का बहाना बनाया है । सोचा होगा, बापू दूध पीकर चले जायगे, इसकी ओर ध्यान भी नही देगे । पर मै दूध पीऊ और बाल-गोपाल मुह देखे, यह

कैसे हो सकता है। असल मे दूध की तो इनको जरूरत है। **(अपना गिलास उसकी ओर बढाते हुए)** ले रे, पी, जल्दी पी। गाव पहुचना है **(बच्चा दूध पीने लगता है)** भगवान की और बच्चे की कोई जात-बिरादरी नही होती। लाओ, एक लोटा पानी ले आओ। गिलास माज दू।

मुखिया . भूल हो गई, बापू। हमे माफ कर दो।

विक्रम : नही मै कोई नाराज थोडा ही हू, भाई। **(बच्चे से)** क्यो दूध पी लिया रे ?

बालक · हा, पी लिया।

विक्रम · सवेरे का भूखा दीखता था, कम्बख्त। ला गिलास इधर दे।

मुखिया यह काम हम आपको नही करने देगे, बापू। भले-बुरे जब सबके जिम्मेदार आप है तो हमे जात-बिरादरी की कोई चिन्ता नही है। लीजिये, अब आप भी पीजिये।

विक्रम : (दूध पीकर चलते हुए) अच्छा मुखियाजी, नाम-यज्ञ जरूर होगा। और सुनो। मे बिना दक्षिणा ही पुरोहित का काम कर दूगा। मुझसे अधिक पढा-लिखा ब्राह्मण भी इस इलाके मे कोई नही मिलेगा।

[फिर रगमच पर अन्धकार छा जाता है। प्रकाश आने पर गाव की पचायत का शोर 'जैराम जी की, बापू' 'पालागन, बौरेजी' की आवाजे]

विक्रम . जै राम जी की, पचो। जै राम जी की, भाइयो। मुझे

कुछ देर हो गई, पर जिस काम के लिए गया था, वह भी जरूरी था। मैंने सोचा, आज का काम आज ही कर डालू। कल पर छोडा तो गया। मेरा विचार है कि अब पचायत का काम शुरू किया जाय। सुना है, बहुत-से मसले सुलझाने पडेगे आज।

जीवन : हा, बापू। काम की सूची बहुत लम्बी है।

विक्रम : चलो, कोई बात नही। काम शुरू करो। हा, तो मुखिया चरणदास! पहला मामला पचायत के सामने रक्खो।

चरण : पहला मामला तो रधिया और बिरजू का है, बापू। आपके पास इसकी कहानी तो पहुची होगी।

विक्रम : गाव मे कोई बात हो और मुझे पता न लगे, यह भला कैसे हो सकता है। यह मै मानता हू, जो हुआ सो बहुत बुरा हुआ। पर फिर भी इस बात का फैसला बहुत सोच-समझकर करना होगा। बिरजू का हुक्का-पानी छोड देने और गाव से बाहर निकाल देने से भी यह समस्या हल नही होगी।

चरण : पर रधिया के बाप गोपालदास का तो यह कहना है कि मै अदालत मे जाऊगा और बिरजू को कैद कराये बिना चैन नही लूगा।

विक्रम : पागल हुआ है, जग-हँसाई करायेगा। खुद तो बदनाम होगा ही, लडकी की जिन्दगी खराब होगी सो अलग। फिर हम पचो के होते हुए लोग कचहरी जाय,

इससे अधिक हम लोगो की और क्या वेइज्जती हो सकती है। कहा है गोपालदास ?

जीवन : वह यहा नही आये। वह तो बेचारे शरम के मारे घर से ही नही निकले। विधवा बेटी ने उनके मुह पर कालिख पोत दी है, वापू। वह घरवैठे अपनी किस्मत को कोस रहे हैं।

विक्रम · अरे, जो हुआ सो हुआ। भला-बुरा हरेक के साथ ही लगा रहता है। जा रे जीवन, गोपाल से कह तुम्हे बापू बुला रहे हैं। **(जीवन जाता है)** वैसे, चरणदास, तुम लोगो ने इस मामले मे क्या सोचा है ?

चरण · हम सबने तो यही सोचा है, वापू, कि बिरजू इस गाव को छोडकर चला जाय। यहा रहेगा तो और गन्दगी फैलायेगा। गाव की बहू-बेटियो की इज्जत का सवाल है।

विक्रम · बात वह कहो, मुखियाजी, जो किसीकी समझ मे आये। बेसिर-पैर की मत हाको। तुम्हारा मतलब है, जहा जायगा, वहा वहू-वेटिया नही होगी। वहा यह गदगी नही फैलायेगा। बाहर जाकर वह पूरे गाव को बदनाम करेगा। फिर किसीको उसके घर से निकालना इतना आसान भी नही है। साथ ही आप लोग यह भी न भूले कि ताली एक हाथ से नही, दोनो हाथो से बजती है। मै तो कहता हू कि इसे जजीर से जकड दो। इसका बस यही एक इलाज है।

चरण . पर इस आवारा को अपनी लडकी कौन देगा, बापू ?

विक्रम : और कौन देगा, वही देगा, जिसने पहले अपनी बेटी पर कडी नजर नही रखी। मै कहता हू, इसका और रधिया का विवाह होना चाहिए।

[**शोर मचता है "नही-नही, यह नामुमकिन है।"**]

चरण : यह बात तो नामुमकिन है, बापू।

विक्रम : पचायत फैसला करे तो कुछ भी नामुमकिन नही है। किसी शरीफ की बेटी को मीठी-मीठी बातो से बहका-फुसला लेना मुमकिन है और मुसीबत पडने पर जिन्दगी मे उसका साथ देना नामुमकिन है। भला यह कहा की इन्सानियत हुई ?

धरनीधर : इन्सानियत की बात इसमे क्या है, बौरेजी ? आप तो जानते ही है कि हम जाति के ब्राह्मण है। अब आप ही बताइये कि ब्राह्मण का लडका बनिये की लडकी से कैसे ब्याह कर सकता है ? एक तो जाति के बाहर, फिर विधवा लडकी ! इतना तो मुझपर अत्याचार न करो।

विक्रम : यह तो तेरे लडके को भी मालूम होगा कि वह ब्राह्मण है और लडकी बनिये की है। वह अन्धा तो नही था, कानो से भी ऊचा नही सुनता था। फिर इसमे किसका दोष है ? (**गरजकर**) क्यो रे बिरजू, महादेव की पिडी पर हाथ धरके कसम खा कि तूने रधिया को ब्याह का झासा दिया था या नही। (**रुककर**) क्यो बोलता क्यो नही ? अब क्यो बिजली गिर गई सिर पर ? कहो, धरनीधर ! अब क्या जवाब देते हो।

घरनी : **(ऊंचे)** अरे, इस बिरजू ने तो खानदान की नाक ही कटवा डाली है। **(रोते हुए)** तुम जो चाहो सो कर सकते हो, बौरेजी। पर मेरी बिरादरी तो मुझे जिन्दा नही छोडेगी। कोई मेरे साथ हुक्का-पानी नही पियेगा।

विक्रम : और कोई पिये, न पिये, मैं पियूगा। मैं तो तेरी जाति का ही हू न। अब बोल क्या कहता है ?

घरनी : **(रोते हुए)** मुझपर रहम करो, बौरेजी।

विक्रम : तुझपर रहम करू और उस छोकरी से कह दू कि तू आत्म-हत्या कर ले ! क्यो, है न यही बात ! जो करेगा सो भरेगा, पण्डित। यह तो कुदरत का नियम है।

घरनी : **(गुस्से से)** पचायत जब यही फैसला करने बैठी है तो करे। पर मैं बताये देता हू कि बिरजू मेरे घर पर नही रहेगा।

विक्रम : कोई बात नही, मेरे घर रह लेगा। चलो, अच्छा है। बेटे और बहू के आने पर मेरे घर पर भी रौनक हो जायगी। हा, तो बोलो, इस बात का कौन विरोध करता है ! नामुमकिन कहनेवाले अपने दिल साफ करके इस बात का जवाब द। **(रुककर)** कोई नही बोलता। कहो पचो, अब आप लोगो की क्या राय है। **(हलका कोलाहल)**

चरण : सब आपके साथ हैं, बापू। पर पहले गोपालदास से भी पूछ लिया होता।

विक्रम : उसकी जिम्मेदारी मुझपर छोडो। मैं उससे बात

कर चुका हू । मैं बडी मुश्किल से उसे मना पाया हू ।

चरण : सब पचो की राय से यही फैसला हुआ है कि बिरजू और रधिया का ब्याह हो जाय ।

[**"हमें मंजूर है, हमें मंजूर है" की आवाजें**]

विक्रम : और इस शुभ काम के साथ ही आज की पचायत की समाप्ति होती है । बाकी फैसले कल होगे ।

[**लोग बाहर जाते है । रंगमंच पर अंधकार छा जाता है । जीवन और राकेश बातें करते हुए आते है ।**]

जीवन इस तरह की अनेक घटनाए उनके जीवन के साथ जुडी हुई है । वह स्वय पुरातनपथी थे, पर दूसरो के लिए अपनी चिन्ता नही करते थे । बिरजू और रधिया को अलग से बुलाकर उन्होने उनकी इच्छा पहले से ही जान ली थी । गाव का हर छोटा-बडा यह समझता था, मानो वह अपने हमदर्द से, अपने सगे से वात कर रहा हो ।

राकेश : वास्तव मे वह बहुत सुलझे हुए व्यक्ति थे ।

जीवन : उन्हे धुन थी कि गाव के लडको की सेहत बने, उनमे कसरत का शौक पैदा हो । यह सोचकर उन्होने अपनी बगिया मे एक अखाडा बनवाया । कसरत के सब तरह के सामान मगवाकर रक्खे । काफी दूर से एक नामी पहलवान बुलाकर गाव मे बसाया, ताकि वह गाव के लडको को दाव-पेच सिखाये । गाहे-बगाहे इस उमर मे भी खुद अखाड़े मे उतरकर कुश्ती करते । भले के लिए किया

था, पर परिणाम बुरा निकलने लगा। एक दिन की बात है।

[**जीवन और राकेश जाते है। दूसरी ओर से विक्रमदेव आते है। उसी समय घास का गट्ठर लिये हुए मुखियाजी आते हैं।**]

विक्रम : (ऊचे स्वर मे) घर मे लडके-बाले ठीक-ठाक हैं न, जो यह दो मन घास का गट्ठर लादे लिये जा रहे हो ?

चरण : इसका उत्तर तो अपने-आपसे पूछो (**गट्ठर नीचे फेंकता है**)

विक्रम : क्यो, क्या बात हुई ? अरे जीवन, यहा आ।

जीवन : (आते हुए) आया, बापू। यह लीजिये, हुक्का ताजा कर लाया हू।

विक्रम : अरे, मुखियाजी के लिए पानी ला। और सुन पण्डिताइन से कहना, मुखियाजी आये हैं। कुछ खाने को भी भेजे।

चरण : इसकी कोई जरूरत नही है, भैया।

विक्रम : तुम्हे जरूरत नही, हमे तो है। जा रे, जीवन, जल्दी कर **(जीवन जाता है)** लो पहले हुक्के मे दम लगाओ। फिर बताओ, आखिर मामला क्या है। क्या तुम्हारे लडको को शर्म नही आई, जो इस उम्र मे यह दो मन का गट्ठर तुम्हारे सिर पर लाद दिया ?

चरण · इस पहलवान को गाव मे लाकर तुमने बुरा किया है।

विक्रम : क्यो, क्या बात हुई ?

चरण : बगिया मे सारा दिन निठल्ला बैठा ऊल-जलूल किस्से-कहानिया सुनाता रहता है। चौपड खेलता रहता है। गांव के किसी भी बडे-बूढे से सीधे मुह बात नही करता। लडके निकम्मे और आलसी हो चले हैं, सारा दिन उसके साथ बैठे चरस पीते रहते हैं।

विक्रम : (गुस्से से) क्या कहा ! गाव के लडके चरस पीने लग गये हैं ! पर मुझे तो आज तक किसीने नही बताया।

चरण : आज मैं जो बता रहा हू। इस उमर मे खुद बैलो के लिए घास उठाकर ला रहा हू। जवान बेटे भाग और चरस के नशे मे पड़े हैं और बूढा बाप हड्डिया रगड रहा है। मेरी ही नही, गाव के सब लोगो की यही दशा होगी।

विक्रम : यह तो सचमुच बुरा हो रहा है। कैसा जमाना आ गया है ! लक्खू पहलवान के अखाड़े मे पहलवानी तो हमने भी बहुत की थी, पर ऐसी नौबत तो कभी नही आई। **(ऊंचे स्वर में)** जीवन, ओ जीवन।

जीवन : (बाहर से) आया बापू ! **(पास आकर)** क्या बात है बापू ?

विक्रम : यह सामान तख्त पर रख दे और बगिया मे जाकर चन्दनसिह पहलवान को बुला ला। कहना बापू ने अभी बुलाया है।

जीवन : पर पहलवान तो जुम्मन तेली की बैठक मे बैठे चौपड खेल रहे हैं। **(व्यंग्य)** उनके सब पट्ठे भी उनके साथ हैं।

विक्रम : बुलाओ, उन सबको। कहना, बापू ने बुला रहे हैं। **(जीवन जाता है)** लो, तुम तो कुछ खाओ पियो, मुखिया। कम्बख्त एक मछली सारे तालाब को गदा कर देती है। चिन्ता मत करो। मै अभी सब ठीक किये देता हू। मै सब सिखा लूगा, लडको को। मुझसे अच्छे दाव-पेच कौन सिखावेगा। भीष्म पितामह युद्ध-कला के सबसे अच्छे ज्ञाता थे। वह कौरव-पाण्डवो को सबकुछ सिखा सकते थे। फिर भी वह द्रोणाचार्य को इसलिए लाये थे कि बच्चो को एक गुरु चाहिए। पर जब गुरु ही निकम्मा हो तो चेले क्या निकलेगे। मैने सोचा था, मुखिया, चन्दन-सिह नाम है तो थोडी-बहुत खुशबू तो होगी ही। बस नाम से ही धोखा खा गया था।

चन्दन : **(आते हुए)** जै रामजी की, बौरे!

विक्रम : जै रामजी की!

चन्दन : कहिये, क्या आज्ञा है?

विक्रम अभी बताता हू। पहले जरा अपना हाथ तो दिखाना मुझे।

चन्दन : क्यो, क्या बात है?

विक्रम : मैं कहता हू, पहले अपना हाथ दिखाओ।

चन्दन : यह लीजिये।

विक्रम : (उसका हाथ सूंघते हुए) हू ! तो तुम गाजा और चरस पीते हो !

चन्दन : (मुखिया की ओर देखकर) हा, पर इसमे किसीके बाप का क्या जाता है !

विक्रम : तुमने मुझे पहले क्यो नही बताया कि तुममे यह बीमारी है ।

चन्दन . कौन कहता है इसे बीमारी ? आपसे जिन लोगो ने शिकायत की है, मैं उन सबसे निपट लूगा ।

विक्रम : (गुस्से मे) क्या मतलब ! **(जोर-से चांटा मारते है)** यह तो उल्टा चोर कोतवाल को डाटेवाली बात हुई । जीवन, सुन्दर कुम्हार से कहो, अपना गधा लेकर आये । लदवा दो इसका सब सामान । और इसे उसपर चढा-कर निकाल दो, इस गाव से ।

चन्दन (गुस्से से) बौरे, यह बात ध्यान मे रखना, मैं बहुत बुरा आदमी हू ।

विक्रम : अबे भाग, यह आखे किसी और को दिखाना ! **(एक चांटा और जड़ते है)** चल, भाग यहा से । मुझे अपने गाव मे गुडे नही शरीफ चाहिए । और सुनो जब दिमाग दुरुस्त हो जाय तो फिर आ जाना । जाओ रे लडको, इसका सामान लदवाकर आओ । अच्छा, ठहरो, मै भी बगिया तक चलता हू ।

[भीड़ का शोर "क्या बात है ? क्या हुआ ?" कहते हुए सब जाते है, रंग-मंच पर अन्धकार छा जाता है । जीवन

और राकेश आते है]

जीवन : उनका व्यक्तित्व ही ऐसा था कि कोई सामने बोलने की हिम्मत नही रखता था । एक बार गाव के आस-पास जगली सुअरो ने अपना डेरा डाल दिया, किसान घबरा उठे । सुबह तक वह किसी-न-किसीका खेत उजाड डालते । किसान उनके सामने आकर रोते, फरियाद करते । बापू रात-रातभर बन्दूक लिये खेतो की रखवाली करते । पाच सुअरो को गोली का निशाना बनाया । आखिर सुअर भाग गये ।

राकेश : पूरे शिकारी थे ।

जीवन : गाववालो पर किसी भी तरह की कोई विपदा पडे, वह आगे रहते । हरेक के दु.ख-सुख मे हाथ बटाते । एक दिन शाम को शहर से आकर बैठे ही थे कि रामू गडरिया आकर रोने लगा ।

[**राकेश और जीवन जाते हैं । दूसरी ओर से विक्रम और रामू आते है]**

विक्रम : क्यो क्या बात है रे ? आखिर इतना घबराया हुआ क्यो है ?

रामू : बापू, बापू ! मेरी एक भेड को चीता उठाकर ले गया ।

विक्रम : तो छीन क्यो नही ली ? असल मे मेरी बन्दूक ने तुम लोगो को बुजदिल बना दिया है । बेच दूगा इस ससुरी को ।

रामू : अब तो रहम करो, बापू। अभी वह टीले के पासवाले खेत मे घुसा है।

विक्रम : सास भी नही लेने देते, कम्बख्त। अरे जीवन, गाव के छोरो से कहो, अपनी लाठिया और भाले लेकर आये। ला, पहले भीतर से हमे हमारा भाला लाकर दे।

जीवन : क्या बन्दूक नही ले जायगे साथ ?

विक्रम : नही ! सबके साथ मिलकर लाठियो से ही शिकार करेगे। कुछ मशाले और आग जलाने का सामान भी साथ ले लेना। रामू तो आज बता रहा है, पर मुझे परसो ही पता लग गया था कि चीता आ बसा है, टाले पर। उसके साथ उसकी मादा और बच्चे भी है। उसे मारना है और बच्चो को जीवित पकडना है। चलो, अब देर मत करो। चल रे रामू ! जा रे जीवन, सबसे कह दे, टीले की ओर आ जाय।

[**कहते हुए जाते हैं। रंगमंच पर अंधकार। फिर जीवन और राकेश आते है**]

जीवन : और वही हुआ। गाववालो मे उत्साह भरने के लिए भाले से ही उन्होने चीते का सामना किया और उसके दो बच्चो को जिन्दा पकडकर लाये। चीते की मादा उस दिन हाथ से निकल गई थी, अगले दिन वह भी चक्कर मे आगई। वास्तव मे साहस की तो वह सजीव मूर्ति थे। गाव के अमीर-गरीब किसीके यहा कोई ब्याह-शादी का या किसी तरह का उत्सव हो, वह सबसे पहले पहुचते।

छूत-अछूत का कोई भेदभाव उनमे न था। गाव मे किसी भी लडकी की शादी होती, बारात उनकी बगिया मे ठहरती। बारातियो की सुख-सुविधा का प्रबन्ध उनकी ओर से होता। एक बार एक विचित्र घटना घट गई। रघुवर कहार की बेटी का ब्याह था। बापू की चौपाल पर ही सब प्रबन्ध था। वह दरवाजे पर खडे बारात की अगवानी कर रहे थे। तभी लेन-देन की बात पर कुछ झगडा हो गया। लडके का बाप चिम्मा कहार रौब मे आ गया।

[कहते हुए जीवन और राकेश बाहर जाते है। कुछ क्षण के अन्धकार के बाद उजाला होता है और कुछ लोग मंच पर आते है]

चिम्मा : (ऊचे स्वर मे) सुनो भाई, बारात खाना नही खायेगी। अभी लौट जायगी। मैं ऐसे बेईमान के यहा अपने लडके का ब्याह नही करूगा।

["क्यों क्या बात है ?" "क्या हुआ ?" का शोर]

विक्रम : अरे रघुवर, क्या बात है ? क्या हुआ ?

रघुवर : मेरी किस्मत ही खोटी है, बापू। पहले तो इन्होने लेन-देन की कोई बात नही की, पर अब कहते है, पाचसौ रुपया नगद दो तब शादी होगी। मेरे पास तो इस समय फूटी कौडी भी नही है, बापू।

विक्रम · इसमे ऐसी बिगडने की क्या बात है ! जहा और बाते पहले तय कर ली थी, वहा यह भी तय कर लेते। अब इस तरह बारात का लौट जाना अच्छा नही लगता।

चिम्मा : ये बाते पहले खोलने की थोडे ही होता हैं, बौरेजी! सभी जानते है, नगद चार-पाचसौ होती ही है। सोने-सा लडका था। मुफ्त मे ही व्याह दू, इस भिखमगे के घर ?

विक्रम . उसे कुछ पता नही था। इशारा भी कर देते तो वह बेचारा सोच लेता। अब तो इस तरह बारात का लौटना ठीक नही। (**पगड़ी उसके पैरों पर रखते हैं**) यह मेरी पगडी और मेरे गाव की इज्जत का सवाल है।

[**शोर बढ़ता है–"बापू आप यह क्या कर रहे है ?"**]

रघुवर : बापू ? आप यह क्या कर रहे हैं ?

विक्रम : इसीमे मेरे गाव की बेटी की भलाई है। मान जाओ, चिम्मा भाई। बारात का लौटना मेरे दिल पर घाव कर जायगा।

चिम्मा : अजी, मै आपके दिल के घाव को क्या करू! मुझे तो रुपये चाहिए, रुपये। आपको गाव की इज्जत प्यारी है तो आप दे दे।

विक्रम : क्यो नही, भैया, तुम्हे जरूरत हो तो मैं जरूर दे दूगा।

रघुवर : यह नही होगा, बापू। इस तरह से गाव मे एक गदा रिवाज पड जायगा।

चरण : रघुवर ठीक कह रहा है, बौरेजी। फिर तो सभीकी बाराते लौटने लगेगी। आप किस-किसको रुपया देते फिरेगे!

विक्रम : (दुखित स्वर मे) अच्छा हुआ, भगवान ने बेटा नही दिया नही तो मैं भी एक दिन इतना ही कमीना बन

जाता।

चिम्मा : चलो, भाइयो, चलो! मैं भुक्खडो के इस गाव मे अपने लडके का व्याह नही करूगा। और देखूगा इसकी लडकी का ब्याह कहा होता है?

विक्रम : इस लडकी का व्याह तो अभी होगा, लाला। भावरो का मुहूर्त भी नही टलने दूगा। मुखियाजी।

चरण : क्या हुक्म है, बापू?

विक्रम : मेरे अस्तबल से घोडे लेकर कैथवारी जाओ। भीमा कहार और उसके लडके को लिवाकर लाओ। कहना, बापू ने बुलाया है। सब बात खुलासा कह देना। क्यो रे, रघुवर! तुझे भीमा का लडका पसन्द है।

रघुवर : मुझे पसन्द है, बापू, पर शायद भीमा न माने।

विक्रम : उसे मनाना मेरा जिम्मा है। मेरे लोग मेरी बात नही टालते। तू न जाने ये धामड कहा से पकड लाया था।

चिम्मा : देखता हू, कैसे भीमा अपने लडके का व्याह यहा करता है?

विक्रम : अच्छा जी, यह भी धौस है। **(ऊचे स्वर मे)** जीवन, ओ जीवन।

जीवन : क्या हुक्म है, बापू?

विक्रम : **(हँसकर)** जरा देखना, इन लोगो की खातिर अच्छी तरह से कर देना। ये भी याद रक्खे कि किसी बारात मे गये थे। बडे आये हैं ब्याह रोकनेवाले!

जीवन : अच्छा, बापू!

[रंगमंच पर अन्धकार छा जाता है। प्रकाश होने पर जीवन और राकेश आते हैं]

जीवन : बापू ने कहा तो पर उसकी नौबत नही आई। उनकी धमकी से चिम्मा और बारातियो की अक्ल ठिकाने आ गई। बापू ने भीमा के लडके को बुलाकर उसके साथ रघुवर की लडकी का व्याह कराया। उन्होने अपनी खुशी से पाचसौ रुपये दिये। सब काम धूम-धडक्के और हँसी-खुशी से हुआ। सबसे ज्यादा खुश थे बापू ! गाव मे मेल-मिलाप और भाईचारा रखना उनका काम था। वह इन्सान थे और इन्सान ही बनकर जीना चाहते थे। हमे चाहिए ऐसा बरगद। उसकी छाह मे हमारा गाव कितना सुखी होगा।

[पटाक्षेप]

: २ :

अग्रदूत

पात्र

शशिधर	.	एक तपस्वी महात्मा
मृदुला		शशिधर की पुत्री
केसरीसिंह		एक डाकू
चन्दर, सलीम	.	गाव के नवयुवक
लखनसिंह	.	गाव का जमीदार

●

पहला दृश्य

[समय . रात्रि , स्थान : शशिधर का आश्रम, आश्रम मे तपस्वी शशिधर का मकान । एक कोने में दीपक टिम-टिमा रहा है । शशिधर इधर-से-उधर घूम रहे हैं]

शशिधर . (स्वगत) जीवन मे कितना सघर्ष है । कितनी वेदना है । दु.ख भी प्रत्येक क्षण एक चरम सत्य की तरह साथ है । सफलता जीवन की पूजी है, लेकिन वह कितना परिश्रम चाहती है, इसे कोई नही जानता । लोग नारे लगाना जानते है, पर मै नारों मे विश्वास नही करता । मै कहना नही, करना चाहता हू । मेरा देश और समाज, मै इन्हे महान् बनाकर ही रहूगा । यह मेरा छोटा-सा

गाव, यह मेरा प्यारा-सा आश्रम। ये एक आदर्श उपस्थित करेगे। यह मेरी इच्छा है और मैं जानता हू कि मेरी इच्छा पूरी होगी।

मृदुला : (आते हुए) बापू! क्या कुछ देर विश्राम नही करेगे?

शशिधर : आराम करना तो चाहता था, पर करू क्या? मेरी आखो मे नीद ही नही है।। दुनिया सो रही है, कोई तो जागता रहे। तू सो जा, बेटी। मेरे कारण तेरी नीद भी असमय मे ही खुल जाती है।

मृदुला : नही बापू, ऐसी तो कोई बात नही। मै सोच रही थी कि आपसे आकर कुछ देर बाते करू! मैंने अभी-अभी सपने मे मा को देखा तो आचानक नीद उचट गई।

शशिधर : पगली कही की! जा, जाकर सो जा। मृत आत्माओ के बारे मे अधिक नही सोचते। तेरी मा देवी थी। बस इससे अधिक और मै कुछ नही जानता। वह चाहती थी कि उसके बच्चे राष्ट्र-हित मे लगे रहे। उसका पति देश, समाज और जाति का गौरव बनकर जिये। बस, मै यही चाहता हू कि तुम उसकी इच्छा पूरी कर सको।

[नेपथ्य मे किसीके दरवाजा खटखटाने की आवाज]

शशिधर : कौन है?

केसरी : मै हू, आपका एक सेवक। आपके दर्शनो की अभिलाषा मुझे यहातक खीच लाई है।

शशिधर : इतनी रात गये! ठहरो, मै आता हू।

मृदुला : (धीमे स्वर में) बापू! कोई शत्रु-पक्ष का न हो।

मेरे विचार मे इस समय दरवाजा खोलना ठीक न होगा ।

शशिधर : मेरा कोई शत्रु नही है, बेटी । मेरा द्वार सबके लिए खुला रहता है। **(सोचते हुए)** तुम बहुत छोटी थी, जब एक रात महान् क्रान्तिकारी वसुमित्र इसी तरह आये थे । पुलिस उनके पीछे थी । उन्हे भी इसी कुटिया ने आश्रय दिया था । वह रात भी इतनी ही गहरी थी ।

मृदुला : अच्छा, पर मै इस समय यहा से न हटूगी ।

शशिधर . तेरे जाने की कोई आवश्यकता नही है । तू मृदुला नही, मृदुल है । बेटी नही, बेटा है । **(जाकर दरवाजा खोलते है)** आओ भाई, कहो, कैसे आये हो ? क्या चाहते हो ?

केसरी : कुछ नही, बस आपके दर्शशन की लालसा यहातक खीच लाई है । बहुत दिनो से सोच रहा था कि आपके दर्शन करू । लेकिन कब और कैसे करू, यह आज समय ने बतलाया ।

शशिधर : भाई, क्या तुम्हारा नाम पूछ सकता हू ?

केसरी : मेरा नाम आप जानते है । **(मृदुला से)** बेटी, तू यदि

शशिधर **(मृदुला को जाने का संकेत)** अरी मृदुला, क्या तू भूल गई कि यह वाहर जाडे मे से आये हैं । कुछ दूध हो तो गरम करके ले आओ । **(आगंतुक से)** क्यो, दूध पियोगे न ? **(मृदुला जाती है)**

केसरी : किसीके यहा की मै कोई चीज खाता तो हू नही, पर

आपका प्रसाद अवश्य ग्रहण करूगा !

शशिधर : मै आपकी बातें समझ नहीं पा रहा हू । क्या आप छुआछूत मे विश्वास करते है ?

केसरी : अछूत तो एक तरह से मै स्वय हू ! इसलिए छुआ-छूत मे विश्वास कैसे करूगा ? पर डरता हू, कोई खाने मे विष न मिलादे ।

शशिधर : मैं सीधा-सादा किसान आदमी हू । पहेलिया सुलझाना नही जानता ।

केसरी : कौन कहता है कि आप पहेलिया सुलझाना नही जानते । जितनी पहेलिया आपने सुलझाई है, शायद ही कोई सुलझा सकता । फिर मै तो बलहारी हू उस मनुष्य पर, जिसके पास उलझने स्वय ही सुलझती चली आती है । **(धीरे-से)** सुनिये, मेरा नाम केसरीसिह है !

शशिधर : (प्रसन्नता से) केसरीसिह । न जाने क्यो, मेरा विश्वास था कि एक दिन तुम अवश्य मेरे पास आओगे !

केसरी : उस दिन आप जब किसानो की उस सभा मे बोल रहे थे तो मै वहा भेस बदलकर अपने साथियो के साथ आपका भाषण सुन रहा था । मेरा सिर शर्म से झुक गया था जब आपने कहा कि अपने गरीब भाइयो की रक्षा के लिए केसरीसिह मे जरा भी शर्म होगी तो वह डकैती का काम छोड देगा । मै स्वय कभी किसान था और एक दिन विदेशी सरकार के नये-नये अत्याचारो से तग आकर डाकू वन बैठा । तभी से शाही खजाने को

लूटकर गरीब जनता मे बाट देना अपने जीवन का का उद्देश्य बनाये घूम रहा हू ।

शशिधर : इससे जनता का क्या बना, बता सकोगे ? अच्छा होता यदि उन किसानो को अपने साथ लेकर सरकार की सगीनो का सीना तानकर सामना करते ।

केसरी : अब तो मै भी यह बात समझ गया हू। तन, मन, धन से, जिस तरह भी हो, जनता की सेवा करना चाहता हू । आप मुझे रास्ता दिखाइये ।

शशिधर : रास्ता दिखाया नही जाता, खोजा जाता है ।

केसरी : ठीक है, लेकिन क्या मै आपके समाज मे अपनाया जा सकूगा ?

शशिधर : क्यो नही ! तुम्हारे ही वर्ग से आकर एक दिन महर्षि वाल्मीकि हमारे समाज के नेता बने थे ।

केसरी : तो फिर आशीर्वाद दीजिये कि मै आपका साथ दे सकू । मै अब जाना चाहता हू ।

शशिधर : थोडा रुको । तुम्हारे लिए दूध आ रहा है ।

केसरी : फिर कभी सही ! अब पौ फटनेवाली है ।

शशिधर : समझा । जाओ, भगवान् तुम्हारा भला करें ।

[नैपथ्य में दूर होती हुई घोड़ो के टाप की आवाज]

मृदुला : (आते हुए) यह क्या ! क्या अतिथि चले गये ।

शशिधर : हा बेटी । जानती है, वह व्यक्ति कौन था ?

मृदुला : नही

शशिधर : वह केसरीसिंह था !

मृदुला : (भयभीत स्वर में) केसरीसिह ! वह आपसे क्या मागने आये थे, बापू ?

शशिधर : मागने नही, देने आये थे, बेटी !

मृदुला : क्या !

शशिधर : एक वचन ! और वह यह कि आगे से वह कभी डाके नही डालेगे । **(सहसा आकाश में प्रकाश होता है)** है, यह क्या ! सहसा इतना प्रकाश कैसा ! ऐसे लगता है, जैसे कही भीषण आग लग गई हो । **(भागने, दौड़ने, चीखने आदि की आवाजे आती हैं)** अवश्य कही बहुत बडी दुर्घटना घट गई है । तुम यही ठहरो, मै अभी आता हू ।

[सलीम का प्रवेश, सिर से रक्त बह रहा है ।]

सलीम : बाबा ! खुदा के वास्ते आप वहा न जाइये । जमीदार के कारिन्दो ने हरिया के खेत मे आग लगा दी है और बुझाने के लिए आई हुई जनता पर लाठिया लेकर टूट पड़े है ।

शशिधर : मृदुला, तुम सलीम का ध्यान रखो । इसे कही ठीक ढग से लिटाओ । मै अभी आता हू ।

सलीम : न बाबा, न ! आप वहा न जाइये । कम्बख्त आपके खून के प्यासे हो रहे है ।

शशिधर : रास्ता छोड़ दे, मेरे बच्चे । मै स्वय अपनी आखो से सबकुछ देखना चाहता हूं ।

सलीम : (बेहोशी-सी में) तो फिर मै भी तुम्हारे साथ

चलूगा। मै यहा बैठने नही, इत्तिला देने आया था।

शशिधर : तुम्हारा खून काफी वह चुका है। तन्दुरुस्त सिपाहियो के होते हुए घायल सैनिक मोर्चे पर नही जाते। मेरे बेटे, तुम आराम करो! **(शीघ्रता से चले जाते है)**

सलीम : ओह खुदा! **(बेहोश हो जाता है)**।

मृदुला : भैया! सलीम भैया! होश मे आओ!

दूसरा दृश्य

[वही स्थान। शशिधर के आश्रम में दुखी किसान और मजदूरो की सभा]

शशिधर : भाइयो, यह अत्याचार हमारे लिए नये नही है। तुम लोगो के देखते-देखते मै चार बार इस आश्रम को बना चुका हू। मै जब कभी सरकार का मेहमान बनकर जेल जाता हू, मेरे पीछे मेरी साधना का स्वर्ग मिट्टी मे मिला दिया जाता है। लेकिन यह मेरा ही नहीं, तुम्हारा भी है। मै अपने उन साथियो से, जो आज उस अत्याचार की भट्टी मे अपना सबकुछ होम चुके है, कहूगा कि वे इस आश्रम को अपना घर समझकर यहा रहे।

सलीम : बाबा! आप जानते है कि गाव मे क्या बात फैलाई जा रही है!

शशिधर : क्या?

सलीम : जमीदार और उसके कारिन्दे कहते फिरते है कि आश्रम मे जाना घोर अपराध है। जो यहा रहेगा उसे

जात-बिरादरी से निकाल दिया जायगा, क्योकि यहा चमार, ब्राह्मण, मुसलमान सब इकट्ठे रहते है और एक दूसरे के हाथ का छुआ खाते है ।

शशिधर : यह तो खाने की बात है, पर वे तो चमार, ब्राह्मण, हिन्दू और मुसलमान सबका खून चूसते है ।

सलीम : खून चूसना उनके धर्म मे पाक समझा जाता है, बाबा ।

शशिधर : अब उनसे साफ-साफ कह दो कि हमारे शरीर मे और खून नही रहा है ।

चन्दर : हा, जितना था, वह उन्होने चूस लिया । हम मर जायगे,पर फालतू कर नही देगे । हम जेलो मे जायगे, फासी के तख्ते पर झूलेगे, पर बेगैरतो की तरह जिन्दगी नही काटेगे !

शशिधर : तो तुम सब तैयार हो ?

सब : **(एक साथ)** हम लोग आपके साथ है । आप जो कहेगे हम सब वही करेगे !

शशिधर : अच्छी तरह से सोच लो । मै एक बार आगे बढकर पीछे हटना नही जानता । मेरे साथ वही आगे बढे, जिसके सिर पर कफन हो, जिसकी छाती लोहे की हो और जो आफतो मे भी हँसना जानता हो !

सब : हम सब तैयार है !

शशिधर : शाबाश ! अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोगो के सकट के दिन टल गये !

चन्दर : हम सदा से ही आपको अपना नेता मानते आये है,

आप हमारे लिए सबकुछ है ।

सलीम : आपका हुक्म हमारे सिर आखो पर । आप हमारे सरदार है । हम आपके इशारे पर अपना सबकुछ कुर्बान कर सकते है ।

शशिधर : मुझे आप लोगो से यही आशा थी । अब आप लोग शान्ति से आश्रम के भडारे मे भोजन बनाये और खाये । हमारे यहा छुआछूत का कोई प्रश्न नही है । मै चाहता हू, इन्सान इन्सान बनकर जिये । इन्सानियत से बडा और कोई धर्म नही है ।

चन्दर : **(एकदम)** बाबा ! जमीदारसाहब इधर आ रहे है । उनके साथ उनके कारिन्दे भी है ।

शशिधर : शुभ लक्षण है ! आने दो और हा, तुम सब अपने-अपने काम मे लग जाओ ।

[लोगो का जाना । जमींदार लखनसिंह का आना]

लखनसिंह : **(गुस्से में)** यह कैसा भीड-भडक्का इकट्ठा कर रखा था, तपस्वीजी ! यह आश्रम है या उचक्को के छिपने की जगह !

शशिधर : जमीदारसाहब, यह उचक्को के छिपने की जगह नही है, धरती के बेटो के लिए मा की ममतामयी गोद है ।

लखनसिंह : अच्छी तरह सोच लो, स्वामीजी ! कही ऐसा न हो कि लेने के देने पड जाय । उनमे कई ऐसे भी है, जिन्होने खून किये है ।

शशिधर : खून करनेवाले तो आपके मकान पर शराब के प्यालो

के साथ अट्टहास कर रहे है। मेरे पास तो दम तोडती हुई लाशे आई है ।

लखनसिंह : मै आपसे सीधे शब्दो मे यह कह देना चाहता हू कि ये लोग बागी है, इन्हे शरण देना आपके हित मे अच्छा नही होगा ।

शशिधर : मेरे हितो की आपको इतनी चिन्ता है, उसके लिए धन्यवाद ! वैसे मै आपको यह बतला दू कि मुझे आप-की धमकियो की जरा भी परवा नही है । जो ब्रिटिश-साम्राज्य की यातनाओ से नही डरा, वह आपकी इन गीदड भभकियो से क्या डरेगा !

लखनसिंह : अच्छा यह बात है । दो-चार बार जेल क्या काट आये हो, गोया दुनिया फतह कर ली है। तीन कौडी की हस्ती नही और

शशिधर : लखनसिह ! मेरे आश्रम मे इस प्रकार की मूर्खता-भरी बाते करने की मनाही है । मै आपको बतला दू कि यहा बोलते हुए आपको यहा के नियमो का पालन करना होगा । यहा आपकी बैठक नही कि जिसे चाहा लाल-लाल आखे दिखाकर डरा दिया । यहा आपको सभ्यता से बोलना चाहिए !

लखनसिंह : मै आपका भाषण नही सुनने आया, स्वामीजी ! मै आपको बतला दू कि इस तरह के आश्रम के ढोग यहा नही चलेगे । बहू-बेटियो को पढाना कौन-से शास्त्र मे लिखा है !

चन्दर : ओहो, तो आप शास्त्रो का ठेका लेकर यहा आये है।

शशिधर : चुप रहो, चन्दर! जब दो आदमी बाते कर रहे हो तो तीसरे को बीच मे नही बोलना चाहिए!

लखनसिह : चन्दर, तेरी खाल खिचवाकर भूसा न भरवा दिया तो मेरा नाम लखनसिह नही।

चन्दर : खुद ही खेंच के देदू। आपसे तो खिचने से रही। बाबा की आज्ञा नही, वरना अभी तुम्हारा

शशिधर : चन्दर, मैं कहता हू, जाकर अपना काम करो। हमे लाठियो से लडने की आवश्यकता नही है। इनकी लाठिया इन्हे ही मुबारक हो।

लखनसिह : यह तो समय ही बतायेगा, शशिधर, कि किस-की लाठी किसे मुबारक होती है।

सलीम : अग्रेजो का राज जा रहा है, जमीदारसाहब! रोटी-पानी भी नसीब होगा कि नही, इसकी फिक्र करे।

शशिधर : (कठोर स्वर मे) सलीम, चन्दर! जाओ अपना काम देखो।

दोनो : जो आज्ञा, बापू! **(जाते है)**

शशिधर : जमीदारसाहब, जाइये, आप भी अपने घर जाकर आराम कीजिये। मेरी आपसे कोई व्यक्तिगत शत्रुता नही है। मै आपके सुझाव मान सकता हू, लेकिन मैने किसीके रौब मे आना नही सीखा है। मै शान्ति का उपासक हू और इसीमे विश्वास करता हू। यदि शान्ति से बात करने की इच्छा हो तो आप किसी भी समय

आ सकते है, नही तो फिर अदालत मे मिलेगे ।

लखनसिह : तो फिर अदालत ही सही ।

शशिधर : आपकी इच्छा ।

तीसरा दृश्य

[आश्रम में एक ओर से शशिधर दूसरी ओर से मृदुला का प्रवेश । मृदुला खुश है]

मृदुला : बधाई हो, बापू ।

शशिधर : किस बात की बधाई !

मृदुला : मिठाई लाये हो कि नही, बापू ? फिर बताऊगी कि किस बात की ।

शशिधर : (हँसते हुए) पगली कही की ! जहा सच्चाई होती है, वही जीत होती है । पर मुझे खुशी इस बात की है कि अन्त मे लखनसिह को सद्बुद्धि आ गई और उन्होने अदालत के बाहर ही सब बाते मानली ।

मृदुला : खिसिया गये होगे ।

शशिधर : इसमे खिसियाने की कौन-सी बात है, बेटी । वे लोग अपने पैसे और रिश्वत के मान पर अकडते थे । उन्हे मालूम नही कि आज तर्क की दुनिया मे बहुत-सी बाते पिछड गई है । मैने उन्हे रास्ते मे बहुत समझाया, आखिर मान गये ।

मृदुला : अच्छा बापू, चलो, भीतर चलकर कुछ आराम करो । आपका स्वास्थ्य अब दिन-ब-दिन बिगडता जा रहा है ।

शशिधर : अब मुझे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता नही है, बेटी ! मेरा उद्देश्य पूरा हो गया। आज इस मुकदमे को लडते-लडते दो साल बीत गये। उनका पैसा लडता रहा और मेरी बुद्धि ! इसी अरसे मे देश भी स्वतन्त्र हो गया। न जाने किस तरह अपने जीवन को सभाले चला आ रहा हू। **(नैपथ्य मे गाय के रंभाने का स्वर)** दूध तो दुह लिया होगा इसका ?

मृदुला : अभी, कुछ देर पहले दुहा था ।

शशिधर : थोडा-सा देदो। शायद कुछ तबीयत सुधर जाय। ऐसे लगता है, जैसे यह धौरी गैया मेरे ही परिवार का एक प्राणी है ।

मृदुला : आपके ही परिवार की प्राणी है, बापू ! आप कैसे भूले जा रहे है।

शशिधर : भूल तो नही रहा हू। न जाने क्यो, मन अपने-आप-मे उदास होता जा रहा है। बहुत ही थक गया हू, आज।

मृदुला : अचम्भे की बात है ! आज आप भी थकान मान रहे है।

शशिधर : मान तो नही रहा, बेटी, महसूस कर रहा हू। मैने जीवन मे हारना नही सीखा। फिर अवस्था का भी तो तकाजा है, मृदुला। देखती हो, कितना बूढा हो गया हू **(नैपथ्य मे शोर)** लो, यह लोग भी शहर से आ गये। सलीम !

सलीम : आया, बापू !

शशिधर : चन्दर कहा गया है ?

सलीम : गाववालो को बुलाने गया है। आने ही वाला होगा। हमने उसे बीच रास्ते से पहले ही चलने को कह दिया था।

शशिधर : अच्छा किया ! देखो, लखनसिह को भी यहा आने के लिए कह देना। मैं उनसे कुछ बाते करना चाहूगा।

सलीम : अब तो वह बडे भले बन गये है। अपने किये पर पछता रहे थे। हो सकता है, वह खुद ही यहा आये।

शशिधर : अच्छा है। मै चाहता हू, सब लोग यहा एक होकर रहे। भाई-भाई की तरह एक दूसरे से कन्धे-से-कन्धा भिडाकर चले। मेरा अब कुछ पता नही है ! **(खांसी)** शायद अब मै अधिक दिन जी भी सकूगा या नही।

चन्दर : ऐसी बात नही कहते, बापू ! अभी हमको आपकी बहुत आवश्यकता है। हम सदैव आपके सरक्षण मे रहना चाहते है।

शशिधर : ऐसा सोचना कमजोरी है, चन्दर। मेरा काम पूरा होगया। मुझे हृदय-रोग है। क्या पता, मृत्यु कब धर दबाये। वैसे अब आजाय तो अच्छा ही है। बस

[खांसी, एकदम लेट जाते हें]

मृदुला : बापू **(घबरा जाती है)**

शशिधर : कुछ नही बेटी, घबरा मत अभी अभी

सलीम : (देखकर) तबीयत कुछ ज्यादा खराब है। मै डाक्टर को बुलाता हू। **(जाता है, मृदुला शशिधर को संभालती है)**

केसरीसिंह : (बाहर से) क्या शशिधर तपस्वी यहा है ? मैं उनसे मिलना चाहता हू ।

लखनसिंह : आइये ! भीतर आ जाइये । उनकी तबीयत बहुत अधिक खराब है । **(केसरीसिंह अन्दर आता है)**

शशिधर : (खांसी आती है) कौन आया है ?

केसरी : बापू, मैं केसरीसिंह हू ।

शशिधर : (स्वर में पीडा का अनुभव हो रहा है, साथ मे उल्लास भी है) बहुत ठीक अवसर पर आये, मित्र ! तुम्हारी ही याद कर रहा था । तुम्हारे समाचार सुनता रहा हू । कोई नही कह सकता कि यह वही पुराना केसरी-सिह है । इन दिनो आश्रम को तुम्हारी आवश्यकता है ।

[चन्दर, सलीम का घबराते हुए प्रवेश]

चन्दर : बापू का क्या हाल है, मृदुला ?

शशिधर : हाल ठीक है, चन्दर ! भगवान जिस हाल मे रखे, वही ठीक है **(देखकर)** लखनसिहजी !

लखनसिंह : जी हा । मै लज्जित हू

शशिधर : छोडो उन बातो को । मैंने तुम्हे बुलवाया है और बिना बुलवाये यह केसरीसिह भी ठीक समय पर आगये है । क्या मै आशा करू कि पुराने वैर-विरोध भूलकर आप सब लोग मिलकर आश्रम मे काम करेगे **(जोर की खांसी)**

लखनसिंह : भगवान आपको चिरायु करे । मैं किस योग्य हू । मैं सदैव आपकी आज्ञा मानकर अपना कर्त्तव्य पालन करूगा।

[मृदुला की सिसकियां]

: ३ :

सबसे बड़ी जीत

पात्र

सुजान	एक किसान, आयु ५० वर्ष ।
सुखिया	सुजान की पत्नी, आयु ३० वर्ष ।
केवल	सुजान और सुखिया का लडका, आयु ७ वर्ष ।
अविनाश	: सुजान का पहली पत्नी से पुत्र, आयु १६ वर्ष ।
हकीम	: गाव के बूढे हकीम ।
नम्बरदार	गाव के बूढे नम्बरदार ।
बैजू	एक गुडा ।

पहला दृश्य

[गांव में सुजान का घर । सुजान बहुत बीमार है । रह-रहकर खांसी उठती है, खांसते-खांसते खाट पर बैठ जाता है ।]

सुजान : (खांसते हुए) हे मेरे ईश्वर, अब क्या होगा !

मेरे पीछे इन बच्चो का कौन है ? **(ऊंचे स्वर में)** अविनाश, ओ अविनाश ! अरे कहा चला गया है ।

सुखिया : (चिड़चिड़े स्वर में) मै क्या जानू, कहा गया है ? मुझसे पूछकर कही जाता हो तब न । मुझे तो समझता है कि मै इस घर की नौकरानी हू । मेरी किसी भी बात की रत्तीभर परवा नही करता । आपने उसे इतना सिर चढा रक्खा है । मै क्या

सुजान : (खीझकर) हर बात की हद होती है, सुखिया । तुमने तो झूठ बोलने मे कमाल ही कर दिया है । तुम्हारी कई बातो को जानते-बूझते भी मैने उसे बिना कसूर डाटा है, पीटा है । पर उस बेचारे ने मुह से उफ तक नही की **(खांसकर)** और तुम दिन मे जबतक उसे पिटवा न लो, गालियां न दिलवा लो, या खुद न पीट लो तबतक चैन नही लेती । **(करुण स्वर मे)** सुखिया ! उसपर नही तो मुझपर रहम कर । अपने भविष्य की ओर आख उठाकर देख । अब इन दो बच्चो के सिवा इस दुनिया मे तुम्हारा रह ही क्या जायगा ?

सुखिया : (शांत होकर) भगवान के लिए ऐसा न कहो । मेरे सबकुछ तुम्ही हो । तुम्हारे बिना इस केवल का क्या होगा ? मेरा क्या होगा ? हम अनाथ कहा जायगे ? ऐसी बात मुह से निकालते हुए कुछ तो सोचो ।

सुजान : क्या सोचू ? जो दीख रहा, है उसके लिए सोचना कैसा ? अब तो कुछ ही घडी का मेहमान हू । मेरा दम

टूट रहा है, सास घुट रहा है। **(रुककर)** एक बात कहू, सुखिया ।

सुखिया : कहो ।

सुजान : अविनाश को प्यार करना । वही है, जिसने तुम्हारे दिये हुए कष्टो को हँस-हँसकर सहा है । **(खांसता है)** और कोई होता तो कभीका घर छोडकर चला गया होता । पर उसने घर की लाज को बट्टा नही लगने दिया । तुम्हारा सौतेला बेटा भले ही हो, पर है तो बेटा ही ।

सुखिया : (फिर तेज हो जाती है) मेरी उससे न कभी निभी है, न आगे निभेगी । सारा दिन आवारागर्दो की तरह इधर-उधर घूमता रहता है । उसने इस घर को सराय समझ रक्खा है ।

सुजान : (समझाते हुए) इसमे मेरा और तुम्हारा दोष है । हमी-ने उसे इस घर को सराय समझने पर मजबूर किया है । मेरी और तुम्हारी हर समय की डाट-फटकार ने ही उसे आवारागर्द बनाया है । फिर भी जरा सोचो तो कि वह किस आधार पर मेरी और तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध पढ रहा है, अपनी क्लास मे अच्छे नम्बरो से पास होता है । **(विकट खांसी)** अपने जेब-खर्च और किताबो के लिए स्वय दसवी मे पढता हुआ हकीमसाहब के बच्चो को पढाता है ।

सुखिया : यह सब कहते हुए आपको अच्छा लगता है । इतने

बडे बाप का बेटा और दूसरो के घर नौकरी करे, कितनी शर्म की बात है।

सुजान : अपनी-अपनी किस्मत है। उसका बाप उसके लिए उसी समय मर गया, जिस समय एक बच्चे के होते हुए वह दूसरी पत्नी घर मै ले आया। **(लम्बी सांस भरकर)** समझ लो, उस बाप ने उसी दिन बच्चे का गला दबा दिया। **(गला भर आता है)** मैने समझा था बच्चे का भविष्य सुधर जायगा, उसे मा की ममता मिलेगी, पर

सुखिया : जी मै, मै ही हू कुलच्छनी। मैने आते ही उसका गला दबा दिया! **(रोने लगती है)**

सुजान : **(समझाते हुए)** सुखिया, घर का भला इसीमें है कि तुम अविनाश और केवल को अपनी दो आखे समझो। टिमटिमाकर बुझनेवाले इस दीपक की आखिरी रोशनी मे अपना भविष्य देखो।

सुखिया : **(रोती हुई)** भगवान करे, आप अच्छे हो जाय। ऐसी-वैसी कोई बात हो गई तो मेरा कहा ठिकाना लगेगा? **(सिसकियां भरती है।)**

केवल : **(बाहर से आता है)** अम्मा, तुम क्यो रो रही हो? बोलती क्यो नही? बापू, अम्मा क्यो रो रही है? इसे किसने मारा है?

सुजान : आ, मेरे पास आ, बेटा। **(बड़बड़ाते हुए)** अविनाश, ओ अविनाश तू भी आ जा। **(कहते-कहते बहोश हो जाता है।)**

सुखिया : (चिल्लाकर) हाय-हाय। यह क्या ? इन्हे तो जरा भी होश नही रहा। इनकी आखे घूम रही है। जाने क्या-क्या कह रहे है! केवल, जा अविनाश को ढूढ ला।

केवल : भैया अभी आता है, मा। वह हकीमजी को लेकर आ रहा है।

सुखिया : वडा दुष्ट है। बाप के सिरहाने नही बैठा। हकीमजी को लेने चला गया। उन्हे तो तू भी बूलाकर ला सकता था।

सुजान : (होश मे आकर) अविनाश, ओ अविनाश, बेटा -

अविनाश : (बाहर से ही) आया, बापू। **(बूढ़े हकीम के साथ अविनाश अन्दर आता है।)** बापू, देखो मै तुम्हारे पास खडा हू। हकीमजी, बापू को अच्छा कर दीजिये।

हकीम : घबराओ नही। भगवान ने चाहा तो अच्छे हो जायगे। **(नब्ज देखते हैं)** अरे, नब्ज तो बहुत धीमी चल रही है। जुबान मे ऐंठन आ रही है। मुश्किल है, बेटा। तुम देर से पहुचे। देखो, फिर भी कुछ-न-कुछ करता हू। आगे भगवान मालिक है।

सुजान : अविनाश! **(कुछ होश में आता है।)** अविनाश!

अविनाश : हा बापू! आखे खोलो, देखो मैं तुम्हारे पास हू।

सुजान : तू कहा गया था, बेटा!

अविनाश : हकीमजी को लेने गया था, बापू। वह आ गये है। अब तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे।

सुजान : भगवान की इच्छा। बेटा, मेरा अब तुम सबसे साथ छूट रहा है।

अविनाश : ऐसी बाते मुह से नही निकालते, बापू। तुम अच्छे हो जाओगे।

सुजान : केवल और सुखिया तेरे ही सहारे है। तू हिम्मतवाला, समझदार है। इसीसे मै निश्चिन्त हू। देख बेटा, इस घर की इज्जत **(कहते-कहते चुप हो जाता है)**

अविनाश : बापू!

केवल : बापू!

सुजान : **(रुक-रुककर)** शान्ति, शान्ति, शान्ति!

सुखिया : **(चीखकर)** स्वामी!

[रोने-चीखने का स्वर]

दूसरा दृश्य

[स्थान वही। सुखिया अपने मायके जाने की तैयारी कर रही है। सामान बाहर जा रहा है।]

अविनाश : मां, यह क्या करने जा रही हो? अपना घर अपना घर ही होता है, मा। फिर बापू भी मरते समय यही आदेश दे गये थे।

सुखिया : **(डांटकर)** मैं दूधपीती बच्ची नही हू, जो तुम्हारी सलाह की जरूरत पडेगी। कम्बख्त, बाप को खाकर अब मुझे खाने चला है। तेरे बुरे ग्रहो के कारण ही उनकी मौत हुई।

केवल : तुम भी हमारे साथ चलो न, भैया।

सुखिया : क्यों, क्या इसे साथ लेकर अब मामा के घर का

भी सत्यानाश करवायेगा।

अविनाश : और भी जो कुछ कहना हो कह लो, मा। मैं तुम्हारी सब बाते सुनने को तैयार हू। पर तुम मेरी एक बात मानो। अपना घर मत छोडो।

सुखिया : वह भी तो मेरे मा-बाप का घर है। मेरा ही घर है। और फिर यहा रहकर हम खायेगे क्या ? तेरा सिर ! अब तो भैया लेने आये हैं। यह मौका छोडकर जीवनभर तेरी गुलाम बनकर रहू। क्यो यही चाहता है न ?

अविनाश : ऐसा मत कहो। तुम जो कहोगी, मै वही करूगा जैसे भी होगा, कही-न-कही से कमाकर लाऊगा।

सुखिया : अबतक तो रईसो की तरह रही। अब भिखमगो की तरह जिन्दगी बिताऊ ! अपनी नेक सलाह और अपने बाप-दादा का यह मकान अपने पास रख। लोग यह न कहे कि सुखिया सब अपने साथ ले गई, तेरे लिए कुछ न छोड गई !

अविनाश : मुझे इसकी जरूरत नही है, मा। तुम यहा रहो। मैं ही-कही चला जाऊगा।

सुखिया : मै जानती थी कि यह कलक भी तू मुझे एक-न-एक दिन देगा ही। कही चला जायगा अपनी इच्छा से। लोग कहेगे, मैंने घर से निकाल दिया ! इसलिए मैं पहले ही जा रही हू !

अविनाश : अच्छी तरह सोच लो, माँ। बाद मे कही पछताना न पडे !

सुखिया : पछताऊगी तो भी तेरे पास नही आऊगी। तू इस बात से बेफिकर रह। केवल, चल जाकर मामा के पास बैलगाडी मे बैठ। और देख, कोई सामान तो इधर-उधर नही रह गया। अविनाश, यह साईकल छोडे जाती हू। दस-पाच रुपया लगाकर ठीक करवा लेना। तेरे काम आयेगी।

केवल : मै भी भैया के पास रहूगा, मा।

सुखिया : चल-चल, बडा आया भैया का सगा! मामा से कह, चले।

अविनाश : मा, मान जाओ मेरा कहना, मैं तुम्हारे पाव पडता हू। **(पांव पकड़ता है)**

सुखिया : अरे, परे हट। क्या पागलो की तरह चिपटा जा रहा है।

[धक्का देकर चल देती है। नैपथ्य में बैलगाड़ी के चलने का स्वर]

अविनाश : (सांस भरकर) सब चले गये! अब इस उजडे हुए उदास घर मे मैं अकेला रहकर क्या करूगा। मैं भी कही चल दू। पर कहा? वाह री किस्मत! घर मे एक फूटा बरतन भी नही रहा। कितना डर लगता है अब इस घर मे!

[उसी समय हकीमजी आते हैं]

हकीम : (आते हुए) अविनाश, ओ अविनाश। **(अविनाश रोने लगता है। हकीमजी उसे रोते देखकर)** अरे रोता

है । रो मत । दुनिया मे जिसका कोई नही होता, उसका भगवान होता है । तूने ही हाथ जोड-जोडकर सब को चुप करा दिया, वरना गाववाले एक पैसे की चीज यहा से न जाने देते । देखते, हरिहर कैसे ले जाता । शर्म नही आई उस स्त्री को, एक फूटी कटोरी तक नही छोडी । चल उठ, हमारे घर चल ।

अविनाश : न बाबा, मैं नही जाऊगा । यही रहूगा । अपने बाप-दादा की झोपडी को नही छोड सकता ।

हकीम : वह भी तो तेरा घर है, बेटा । वहा तुझे हर तरह से आराम मिलेगा ।

अविनाश · सब समझता हू, पर रहूगा यही । मा जाती बार यह साइकल छोड गई है । इसे ठीक करवा लूगा । फिर शहर आने-जाने मे जो समय जाता है, वह बच जायगा । उस समय को उधर गाववालो के छोटे-छोटे बच्चो को पढाने मे लगा दूगा । **(स्वर भर आता है)** मा केवल को गवार बना देगी । मैं चाहता था, वह पढ-लिख जाता । यही शिक्षा बडे होने पर काम आती ।

हकीम फिक्र मतकर अविनाश । तेरी मा बडे चिडचिडे स्वभाव की है । अपने मायके मे उसका भाभियो के साथ गुजारा बडा ही कठिन है । फिर मैं तुम्हारे मामू को बडी अच्छी तरह जानता हू । बड़ा काइया आदमी है । उसका सब गहना-कपडा दबा बैठेगा । सुखिया को अपनी मूर्खता पर पछताना पड़ेगा । पर तू मेरी

बात मान, बेटा, मेरे घर चल ।

अविनाश : न बाबा, मैं यहा से कही नही जाऊगा ।

हकीम : किसी चीज की जरूरत हो तो बता। छोटे दे जायगा।

अविनाश : जरूरत की चीजो के नाम पर छोडा ही क्या है, अम्मा ने। पर धीरे-धीरे मैं सबकुछ जमा लूगा। पहले कुम्हार के यहा से एक घडा ले आऊ, फिर किसी-के खेतो की रखवाली करने की नौकरी पूछूगा ।

हकीम : तू नौकरी करेगा, बेटा !

अविनाश : पेट पालने के लिए कुछ-न-कुछ करना ही पडेगा, बाबा। हाथ तो कही फैला नही सकता ।

हकीम : तू इतने बडे बाप का बेटा है !

अविनाश : रोटी तो वह भी खाते थे, बाबा। काम ही तो कर रहा हू। कोई खराब चीज तो कर नही रहा, जिससे पिताजी की इज्जत को धक्का पहुचे ।

हकीम : अच्छा भाई, तुम हमारी एक बात मानो। यदि तुम्हे नौकरी ही करनी है तो हमारे यहा ही कर लो । दिन मे अपना पढ आये, शाम को यहा के बच्चो को पढा दिया । गाव के और लोग तुम्हारी कुछ-न-कुछ मदद करेंगे ही। फिर रात को हमारे खेत की रखवाली कर ली। बोलो, क्या लोगे ?

अविनाश : मेरी फीस माफ रही है, बाबा । आगे कॉलेज मे भी माफ करवा लूगा। सिर्फ खाने को रोटी और पहनने को कपडा चाहिए। कभी कुछ किताबो, कापियो

के लिए मिल जाय तो आपकी कृपा होगी।

हकीम : भगवान चाहेगे तो सबकुछ होगा (**हँसते हैं**) पर काम ईमानदारी से करना होगा।

अविनाश : काम मे ढील देखो तो निकाल देना।

हकीम : अच्छा उठो। मैं तुम्हे काम समझा दू। अपनी यह साइकल भी उठा लो। इसे भी आज ही शहर से ठीक करवा लेना। जितनी जल्दी घर पहुचोगे, उतना ही काम अधिक होगा।

अविनाश : चलो बाबा, तुम्हारी इस कृपा के लिए क्या कहूं ?

तीसरा दृश्य

[स्थान : खेत में मचान, रात का डरावना समय। सांय-सांय करती हुई हवा चल रही है। आस-पास से गीदड़ों के बोलने का स्वर। दूर-दूर बनजारों के कुत्तो की आवाज। अविनाश खाट पर लेटा लालटेन जलाये पढ़ रहा है। अचानक उठकर इधर-उधर घूमना शुरू कर देता है। साथ ही खेतों की रखवाली भीकर रहा है।]

अविनाश : महीनो बीत गये यह काम करते हुए। ऐसा लगता है, मानो बीता हुआ जमाना एक सपना था। मा और केवल किसीका भी तो कुछ पता नही लग सका। खुशी है तो बस इसी बात की कि पहली श्रेणी मे पास हुआ हू। आगे फीस माफ होने के साथ-साथ,

सभव है, कॉलिज मे कुछ और भी सहायता मिल जायगी। **(गीदड़ की अवाज और नजदीक आती जाती है)** हट बे हट! खबरदार, जो आगे बढा! एक खरबूजे के पीछे कही अपनी जान न दे देना। **(पत्थर फेंकता है। गीदड़ भागता है, हँसता है)** भाग गया। ओह, कैसी गहरी रात है! आसमान से स्याही बरस रही है, स्याही। पता नही क्यो? आज बिना बात रोगटे खडे हो रहे है। है, यह दूर से लालटेन लिये कौन आ रहा है? **(ऊचे स्वर मे आवाज देता है)** खबरदार, होशियार, कोई अपना जानवर भूल से भी मेरे खेतो मे छोडने की कोशिश न करे। नुकसान ऊठायेगा। कौन है, भाई!

हकीम : **(दूर से ही)** मै हू, मै, तुम्हारा बाबा, चुप रहो, ऊचा मत बोलो, मै तुम्हारे पास आ रहा हू।

अविनाश : क्यो, क्या बात है, बाबा? तुम इतने घबराये हुए क्यो हो?

हकीम : तुम जानते हो, जबसे तुम मेरे पास आये हो, बैजू और मोहन मेरे दुश्मन होगये है। वे नही चाहते कि तुम्हारी ईमानदारी के कारण मेरे खेतो की ठीक-ठीक रक्षा हो। वे तुम्हारी ज़ान के दुश्मन बने हुए है। भगवान के नाम पर तुम मेरा काम छोड दो। अपनी जान की रक्षा करो।

अविनाश : कैसी बहकी-बहकी बाते कर रहे हो, बाबा! दूसरो

की बातो मे आकर क्या मैं अपने बाबा को छोड सकता हूं ?

हकीम : तुम खेतो पर न आया करो, खेतो के लिए दूसरा नौकर रख लेगे । तुम घर का काम-काज सम्हाल लो ।

अविनाश : नही-नही मै किसीके डर से अपने कर्त्तव्य से मुह नही मोड सकता । मेरा और आपका खेती की रखवाली का वादा है । आप अपना काम सम्हाले, मै कही और काम करके पेट पाल लूगा ।

हकीम : समझदार होकर ऐसी बाते नही करते, बेटा, जिससे पीछे पछताना पडे । वे दुष्ट तेरे मामू के रिश्तेदार भी है । हो सकता है, तेरी मा और मामू के इशारे पर ही वे तुझे परेशान करना चाहते हो ।

अविनाश : मै किसीकी कोई परवा नही करता, बाबा । भगवान जिसका रक्षक हो, आदमी उसका कुछ भी नही बिगाड सकता । अभी कल ही मेरा और बैजू का झगडा हुआ था, मैंने आपको बताया नही ?

हकीम : किस बात पर ?

अविनाश : बात बडी ही मामूली थी । बैजू चोरी-चोरी नहर काटकर अपने खेत मे पानी दे रहा था । मैने उसे समझाया कि यह बुरी बात है । इसपर वह मुझे गालिया और पीटने की धमकिया देने लगा । मैने जाकर नम्बरदार को सब बाते बतला दी । उन्होने बैजू को बुलाकर मेरे सामने ही डाटा ।

हकीम : ये गाव के बिगड़े हुए लोग है। इनसे दुश्मनी करना अच्छी बात नही है, बेटा।

अविनाश : देश आजाद हो चुका है, बाबा। लूट-पाट का जमाना चला गया है। चीजो का राष्ट्रीयकरण हो रहा है। उसने नहर का पानी नही चुराया, बल्कि राष्ट्रीय सरकार को धोखा देना चाहा है। यह बात नम्बरदार तक पहुचानी बहुत जरूरी थी। हमे जैसे भी हो गाव के लोगो का चरित्र ऊचा उठाना है। समझा-बुझाकर डाट-फटकारकर, जैसे भी काम चल सके, चलाना है।

हकीम : तुम्हारा कहना ठीक है, भैया। पर फिर भी देख-भालकर चलना है। उठ, चल जल्दी घर पहुच जाय। आज रात को ही वे दुष्ट कुछ-न-कुछ उपद्रव करनेवाले हैं।

अविनाश : मै तो यहा से नही जाऊगा। बाबा, डरकर जाने का मतलब है कि उनके हौसले और बढ जायगे। उनके हमले का जवाब दूगा।

हकीम : बेटा, वे कई होगे। अब चल। गाव से और आदमी लेकर आयेगे।

अविनाश : नही बाबा, इतनी देर मे वे हमारी खेती उजाड देगे। मै यहा से कही नही जाऊगा। तुम जाओ, तुम्हारे पास लाठी है, जरा देख-भालकर जाना।

हकीम : (धीरे-से) फिर मै भी नही जाऊगा। खेत के उधर से किसीके चलने की आवाज है। ध्यान से सुनो, शायद जानवर है।

अविनाश : मैं अपनी लाठी ठीक कर लू । **(ऊंचे स्वर में)** कौन है रे ? किसकी मौत यहा खीच लाई है ? अपने जानवरो को काबू मे करो, नही तो सबको काजी हाऊस पहुचा दूगा ।

बैजू : **(आते हुए)** आज तो तेरी ही मौत यहा घूम रही है, अविनाश । आज देखना है, कौन तेरी रक्षा करता है ?

अविनाश : कौन, बैजू-भैया है ! इसमे ऐसी बिगडने की क्या बात है ? अपने जानवर खेत से निकाल लो । झगड़े की क्या जरूरत है ।

बैजू : कैसा सीधा होकर बात कर रहा है । नम्बरदार की शिकायत का मजा चखाने आया हू, बेटा । हा, एक बात पर माफ कर सकता हू कि आगे से तू हकीम के खेतो की रखवाली छोड दे ।

अविनाश : **(हँसता है)** ताकि तुम्हारे जानवर यहापर आराम से चर सके ।

हकीम : **(धीरे-से)** ये तो कई आदमी दीखते हैं ।

अविनाश : हा, देखो बाबा । मैं इन सबसे निबट लूगा । तुम सहायता के लिए मचान पर खडे होकर और लोगो को पुकारना । **(बैजू से)** अब भी तेरी भलाई इसीमे है कि जानवरो को लेकर घर चला जा ।

बैजू : लगा दो इनके खेतो मे आग ।

अविनाश : खबरदार, एक कदम भी किसीने आगे बढाया तो मुझसे बुरा कोई न होगा ।

बैजू : देखते क्या हो जी, जमाओ इसपर लाठी ।

अविनाश : बैजू, मेरे हाथ मे भी लाठी है। अच्छा ले। **(लाठी मारता है)** बैजू चीखकर गिरता है। लाठियो के चलने की आवाजे। हकीमजी "दौडो, भागो, बचाओ" की आवाजे दे रहे है।

हकीम : **(चिल्लाकर)** अविनाश के मचान पर डाकुओ ने हमला कर दिया है। रक्षा करो, भागो, बचाओ।

बैजू : मेरी तो आखो के आगे अन्धेरा छा रहा है। अबे मोहन, एक हाथ इस बुड्ढे के भी जमा दे ।

अविनाश : पहले मोहन अपनी खैर तो मनाले। आह, मर गया, मेरे राम, पर ले दुष्ट, तू भी मजा चख। **(मोहन की चीख)**

हकीम : क्या हुआ, बेटा ? चिन्ता मत कर। बुड्ढा हू तो क्या, पुराना लठैत हू। उधर गाव से लोगो के आने की आवाजे भी आ रही है। लालटेन लिये लोग आ रहे है। **("भागो, दोड़ो" का शोर।)**

बैजू : हमारा भला अब इसीमे है कि हम जानवरो को लेकर यहा से भाग चले। **(अपने जानवरों को भगाते हुए ले जाते है।)**

हकीम : अविनाश, अविनाश! आखे खोल बेटा, घर चले।

चौथा दृश्य

[स्थान : पहले दृश्यवाला। अविनाश खाट पर लेटा हुआ है। हकीमजी देख रहे हैं।]

नम्बरदार : (आते हुए) हकीमजी, अविनाश की तबीयत का क्या हाल है ?

हकीम : कौन नम्बरदारजी ! अन्दर आ जाओ। अब तो इसकी तबीयत कुछ अच्छी ही दीखती है।

नम्बरदार : अविनाश, मैंने उनसब बदमाशो को पकड मगाया है। मेरी चौपाल मे बैठे है। पचायत होने जा रही है। बस, वहा तेरा ही इन्तजार है। तेरी बहादुरी की सारा गाव प्रशसा कर रहा है। बेटा, चलकर उन बदमाशो को दड दे।

अविनाश : मुझमे वहातक जाने की ताकत नही है, काका। फिर मैं दड देने के पक्ष मे नही हू। मेरे कहने पर पचायत अबकी बार उन लोगो को समझा-बुझाकर क्षमा कर दे। उसका प्रभाव भी आप लोग देखे।

नम्बरदार : अरे बेटा, उन दुष्टो पर क्षमा का प्रभाव कुछ नही पडेगा। वे लोग बडे कमीन है। इससे तो उन्हे ढील मिल जायगी। समझेगे, पचायत डरती है उनसे। इसलिए तू उठकर चल और पचायत को अपना काम करने दे।

अविनाश : मैं पचायत को अपना काम करने से तो नही रोक

रहा, पर मै इतना जरूर चाहता हू कि एक बार उन्हे प्यार के मत्र से वश मे किया जाय तो कैसा रहे ? मुझ-मे वहातक जाने की हिम्मत इस समय नही है, नही तो मैं वही जाकर उन्हे क्षमा कर देता ।

नम्बरदार : हम एक-दो आदमियो के सहारे तुम्हे वहा ले चलेगे ।

हकीम : नही नम्बरदारजी, इसे हिलाने-डुलाने की कोशिश न की जाय तो अच्छा है। असल मे इसे चोटे काफी आई हैं । दो-चार दिन खाट पर रहकर ही आराम करे तो अच्छा है । फिर मै जो होऊ गा इसकी तरफ से, जानवर तो मेरे खेतो मे छोडे गये थे न ।

नम्बरदार : जैसी तुम दोनो की इच्छा । **(सोचते हुए)** ऐसा करो हकीमजी, पचायत यही बुला लो ।

हकीम : यह तो बहुत अच्छी बात है ।

अविनाश : मेरी बात को ध्यान मे रखना, काकाजी । हो सके तो एक बार उन्हे क्षमा कर देखना । क्षमा से शायद उनका हृदय बदल जाय ।

नम्बरदार : उनसे आशा करना बेकार है, बेटा। मैं उन्हे बहुत अच्छी तरह से जानता हू । वे लोग बहुत ही नीच है ।

अविनाश : स्नेह और प्यार से ही नीच को ऊपर उठाया जा सकता है, काकाजी । सच यह है कि हमे अपने यहा से अविद्या का अन्धकार दूर करना होगा ।

नम्बरदार : यह सब एकदम कैसे दूर होगा, बेटा ।

अविनाश : इसमे निराश होने की बात नही है । अच्छा होते ही अपनी चौपाल मे बडी उम्रवालो के लिए रात की पाठशाला खोल दूगा । रोज रात को एक-दो घण्टे पढाया करूगा । देखना कुछ ही महीनो मे गाव की दशा कैसे सुधरती है । मेरे विचार मे बजाय इन झगडो के आज यह बात पचायत के सामने रखे तो और भी अच्छा रहेगा ।

हकीम : भगवान तेरी उम्र बडी करे, बेटा । **(नम्बरदार से)** नम्बरदारजी, अबकी बार इसकी बात ही मान देखो । समझा-बुझाकर उन्हे क्षमा कर दो ।

अविनाश : इसका फल वास्तव मे बडा अच्छा होगा, काकाजी ।

नम्बरदार : तेरी इच्छा पूरी होगी, बेटा । अरे हा, यह तो बता, कबसे शुरू करेगा अपनी पाठशाला ।

अविनाश : बस, पाच-छः दिन मे ज़रा ठीक हो जाऊ ।

नम्बरदार : आओ हकीमजी, अब चले । लोग वहा इकट्ठे हो गये होगे । आज इसी बात पर फैसला कर लिया जाय ।

पांचवां दृश्य

[स्थान : अविनाश का कमरा । पचायत का शोर, लोगो का भीड़-भड़क्का)

हकीम : पचो और भाइयो, आप सब जानते ही है कि

पचायत मेरी ही प्रार्थना पर हो रही है। मोहन और बैजू की शरारत के कारण यह सारा झगडा हुआ है। उन्होने रात मेरे खेतो मे अपने जानवर चरने छोड दिये। अविनाश को, जो कि उन खेतो की देखभाल कर रहा था, उन्हे रोकने पर उन्होने मारा-पीटा। मुझे इस बात का पहले ही पता लग चुका था और मै वहा पहुच गया था। मेरे शोर मचाने पर आपमे से कई लोग मदद के लिए दौडे और आप लोगो को आता देखकर ये लोग वहा से भाग खड़े हुए। अगर मैं वहा न पहुचता और आप लोगो को मदद के लिए न पुकारता तो ये लोग उसको जान से मार देते।

नम्बरदार : क्यो बैजू और मोहन; क्या बात है ? तुम लोगो की गुडागीरी से सारा गाव परेशान है। यह रातवाली घटना तो बहुत ही शर्म की है, तुम्हारे लिए और सारे गाव के लिए। कुछ कहना चाहते हो इस बारे मे ? सारा गाव तुम्हारे खिलाफ है।

बैजू : भैसे रस्से तोडकर चली गई थी। हम उन्हे ढूढने गये थे। अविनाश हमे देखते ही गालिया देने लगा। बस, इसी बात पर झगडा हो गया। उसने लाठी मार-कर मोहन का सिर फोड दिया।

नम्बरदार : मरता क्या न करता ! आखिर उसे अपना बचाव भी तो करना था। एकदम सभी जानवर रस्सा कैसे तुडा गये ? फिर सीधे हकीमजी के खेतो मे ही

क्यो पहुच गये। रास्ते मे ही तुम्हारे खेत थे। उनमे वे क्यो नही चरने लग गये ? तुम्हारी दलील कुछ जची नही। असल मे देखा जाय तो तुम लोगो ने जान-बूझकर ही यह काम किया। तुम्हारी नीयत बुरी थी।

[लोगो का शोर बढता है। "ये है ही कमीन", "इन का हुक्का-पानी बन्द कर दो," "इनसे सब लोग बोल-चाल बन्द कर दें"।]

नम्बरदार : क्यो अविनाश, तुझे कुछ कहना है ?

अविनाश : मेरी ओर से हकीमजी बोल रहे है। मुझमे ऊचा बोलने की हिम्मत नही। इन्हे क्षमा कर दो।

नम्बरदार . भाइयो, शान्त हो जाओ। शोर मचाने की कोई जरूरत नही है। फालतू शोर मे असली बाते नही हो पाती। आप जो कहते है, वह ठीक है। मेरी अपनी भी राय यही है। आप सबने मुझे अपना सरपच चुना है। इसलिए आप मेरी बात जरा ध्यान से सुन ले। पचायत शुरू होने से पहले ही मै अविनाश से बाते कर चुका हू। इसका कहना है कि मेरी ओर से अबकी बार उन्हे क्षमा कर दिया जाय। सो मै चाहता हू कि एक बार अविनाश की बात भी मान ली जाय।

हकीम : मेरी फसल का नुकसान हुआ है, पर अविनाश की इच्छा को पूरी करने के लिए मैं अपने झगडे को समाप्त करता हू।

नम्बरदार : बैजू और उसके साथी कान खोलकर सुनले।

सजा के रूप मे एक बालक की ओर से क्षमा मिली है। यदि इनमे जरा भी शर्म होगी तो ये आगे से ऐसी हरकत नही करेगे। **(गांववालो की हल्की-हल्की आवाज)** अब एक बात मै आपसे और कहना चाहता हू, जो हम सबके फायदे की है। हममे से बहुत-से लोग ऐसे है, जो एक अक्षर भी नही पढ सकते। कही से एक चिट्ठी आ जाय तो उसे पढवाने के लिए उन्हे दस दरवाजे घूमना पड़ता है। यह सब सोचकर आप लोगो को पढाने की इच्छा से अविनाश अपनी बैठक मे रात की पाठशाला खोल रहा है। पाच-छः दिन बाद अविनाश के ठीक होते ही वहा पढाई शुरू हो जायगी। आशा है, आप सब लोग इससे लाभ उठाने की चेष्टा करेगे।

[सभा मे हर्षपूर्वक ध्वनियां, "जरूर पढ़ेंगे" "हम पढ़ेगे" इत्यादि आवाजे]

हकीम : कोई यह न समझे कि इसमे उसका कुछ स्वार्थ है या आप लोगो पर किसी तरह का कोई खर्च पडेगा। यह सब गाव की उन्नति के विचार से उसने सोचा है। यह सबकुछ पचायत की ओर से होगा।

नम्बरदार : अच्छा तो अब मै इस सभा को समाप्त करता हू।

[पंचायत समाप्त होती है। सब लोग घरो को जाते है। बाहर जाकर बैजू लौट आता है। अविनाश अपने कमरे में खाट पर तकिये के सहारे लेटा है]

अविनाश : आओ भैया, आओ। मेरे योग्य कोई सेवा हो तो

बताओ ।

बैजू : मुझे और अधिक शर्मिन्दा मत करो । मै सच्चे हृदय से कह रहा हू, अविनाश ! मै अपने किये पर पछता रहा हू । मुझे पचायत सख्त-से-सख्त सजा दे देती तो भी शायद मुझे इतना दु ख न होता, जितना मुझे तुम्हारी इस क्षमा से हुआ है । वास्तव मे तुम जीते मै हारा ।

अविनाश : आप मुझसे बडे है, मै आपका छोटा भाई हू । मेरा ऐसा विचार था, भैया, कि आपने यह सबकुछ अपनी इच्छा से नही, बल्कि किसीके बहकावे मे आकर किया है ।

बैजू : तुम्हारा विचार काफी हद तक ठीक है । मै पाच-छः दिन हुए सुखिया के गाव गया था । उसके भाई माधोसिह, तुम तो जानते ही हो, मेरे बहुत अच्छे दोस्त है । उनका इशारा था कि मै तुम्हे परेशान करू । उसीका परिणाम रात की घटना थी । पचायत मुझे सजा देकर शायद मेरा कुछ न बिगड पाती । मै आदी हो चूका हू, इस तरह की सजाओ का । पर तुम्हारी इस अनोखी सजा ने मुझे हमेशा के लिए हरा दिया ।

अविनाश : सबकुछ होते हुए भी इन्सान हो, तभी इतनी जल्दी पसीज गये, नही तो आज की दुनिया मे क्षमा की परवा कौन करता है !

बैजू : तू मेरे साथ मेरे घर चल । वहा तेरी टहल अच्छी तरह हो सकेगी । मै हू, तेरी भाभी है । अम्मा है,

बच्चे है। सबमे तेरा दिल बहला रहेगा।

अविनाश : सब आपकी कृपा है। यहा भी दिल बहला ही रहता है। दिन मे भी कोई-न-कोई आया ही रहता है। रात नबरदारजी का घनश्याम, हकीमजी का वशी यहा आकर सोये थे। एक बात तो बताओ, भैया।

बैजू : पूछो।

अविनाश : मा और केवल ठीक है, वहा ? केवल के बिना यह दुखी घर बडा ही सूना-सूना लगता है।

बैजू : भाई, अब तुमसे क्या छिपाना ! सुखिया वहा बडी ही दुखी है। पर बेचारी अब कर ही क्या सकती है ?

अविनाश : क्यो, क्या बात है ?

बैजू : बात क्या होगी, भाई। माधोसिह कोई उसकी पूजा करने के लिए तो ले नही गया था। घर मे नौकरानी न रखी, विधवा बहन रखली। चौका-बरतन कर, चक्की पीस, जानवरो को चारा खिला, पानी पिला, दिनभर इसीमे लगी रहती है। उस दिन रोने लग गई, मेरे आगे। कह रही थी, "गहना, कपडा, रुपया-पैसा जो भी लाई थी, सब माधोसिह और उसकी बीवी दबा बैठे है।" माधो की पत्नी मुरली बड़े सख्त स्वभाव की है।

अविनाश : और केवल कैसा था ?

बैजू : उस बेचारे का भी बुरा हाल था। दिनभर जगल मे पशुओ को चरा लाता है। बाकी सुबह-शाम मा की मदद पर लगा रहता है।

अविनाश : (भावावेश मे) बडा बुरा है, यह तो। मेरे जीतेजी ऐसा नही हो सकता। मै आज ही उनके गाव जाऊगा। मा आये चाहे न आये केवल को साथ ले आऊगा। इस तरह तो उसका जीवन बरबाद हो जायगा।

बैजू : मानता हू, तुम्हारी बात ठीक है, पर इतनी जल्दी की जरूरत नही। कुछ स्वस्थ हो लो, फिर चलना। मै भी तुम्हारे साथ चलूगा। माधोसिह तुम्हे खत्म कर देना चाहता है, ताकि यहा की जमीन-जायदाद पर उसका कब्जा हो सके। इसलिए वहा जरा तैयार होकर चलेगे। हा, यदि तुम कहो तो मै केवल को ले आता हू। सुखिया आना चाहेगी तो उसे भी साथ ले आऊगा।

[**तभी बैलों के गले की घंटियां बजती है और बैलगाड़ी आकर रुकती हैं। केवल भागता हुआ आता है।**]

केवल : भैया, हम आ गये। मामी से अम्मा लड पड़ी। मामी ने कहा, तुम यहा से चली जाओ।

अविनाश : आजा, मेरे पास आजा, केवल। हे भगवान, तुम सबकी सुनते हो। मा कहा है ?

केवल : बैलगाडी से सामान उतरवा रही है। मैं तुम्हे बहुत याद करता था, भैया। और तुम ?

अविनाश · तुझसे भी ज्यादा। **(इतने मे सुखिया आती है।)**

बैजू : राम-राम, काकी सुखिया।

सुखिया : राम-राम, भैया !

बैजू : अपने वीर बेटे को आशीर्वाद दो, उसने सारे गाव की

इज्जत को चार चाद लगा दिये हैं । अब इसे अपना प्यार दो, काकी ।

सुखिया : अब इसका प्यार पाने आई हू, भैया। बेटा अविनाश, **(रोती है)** अपनी पगली मा को क्षमा कर दो ।

अविनाश : मा, क्यो मुझपर पाप चढा रही हो ! मै तुम्हारा बालक हू, तुम माता । तुम्हारे लौट आने से मुझे कितनी खुशी हुई, इसका कोई भी अन्दाजा नही लगा सकता ! मैं तुम लोगो को लेने आनेवाला था ।

सुखिया : हम अपने-आप चले आये । कल शाम मुझे वहा किसीने बता दिया था कि माधो के इशारे पर तुम्हे लोगो ने बुरी तरह पीटा है । मेरा जी घबरा उठा। रात फिर मेरी उसकी घरवाली से इसी बात पर खूब लडाई हुई। सुबह पाच बजे ही जानकीदास की बैलगाडी जुडवा-कर वहा से मै चल दी ।

बैजू : अपना घर अपना ही होता है, सुखिया काकी । तुमने यहा आकर इसका और अपना सबका भला किया है ।

सुखिया : अरे बेटा, बता तो सही, वे कौन दुष्ट थे, जिन्होने तुझे मारा? वे लोग मुझे जानते नही । मै उनके मकान की ईट-से-ईट बजा दूगी ।

बैजू : **(हँसकर)** तू अब उनका नाम पूछकर क्या करेगी, काकी ? इसने खुद ही उन्हे सीधा कर दिया है । अब तो वे लोग इसके दास हो गये हैं ।

सुखिया : जो कुछ भी है, पर तू नाम तो बता उनके ?

अविनाश : अच्छा बताता हू, । पहले तू कुछ देर आराम कर ले ।

बँजू : अभी तुझे सारी कहानी सुनाये देते है । क्यो, अविनाश ।

(दोनो हँसते है)

अविनाश : और क्या ? तू मेरे पास बैठ, मा । बैजू भैया, सामान गाडी से उतरवा लाओ । आज इस घर की किस्मत फिर जागी है ।

सुखिया : (लम्बी सांस लेकर) अपना घर, अपना ही घर होता है, बेटा ।

[**पटाक्षेप**]

: ४ :

मिट्टी और सोना

पात्र

कस्तूरी	रामसिंह की पत्नी।
गोपाल	रामसिंह का पुत्र (अवस्था आठ-नौ वर्ष)।
धन्नो काकी	गाव की एक बूढी औरत, कस्तूरी की पडौसिन।
रामसिंह	अधेड उम्र का एक किसान।
बिरजू	धन्नो काकी का बेटा, एक युवक।
नम्बरदार	गाव के बूढे नम्बरदार।
हकीम	गाव के हकीम

पहला दृश्य

[स्थान : एक ग्रामीण-घर, एक तरफ एक-दो सन्दूक रक्खे है, एक कोने मे हल, फावड़ा इत्यादि खेती का सामान रक्खा है, दूसरे कोने में खाट खड़ी है, पीढ़ी पर बैठी कस्तूरी चक्की चलाती हुई हल्के स्वर में किसी लोकगीत की पंक्ति गुन-गुना रही है, दीवार पर दिया जल रहा है। तभी गोपाल बाहर से खेलकर आता है।]

कस्तूरी : (गोपाल की ओर देखकर) तू अबतक कहा था रे, गोपाल !

गोपाल : लडको के साथ कबड्डी खेल रहा था, मा ।

कस्तूरी : इतनी देर तक खेलते रहना अच्छा नही होता, बेटा। मै तुझसे कितनी बार कह चुकी हू कि दीये-जलते ही घर आ जाया कर और खाना खाकर कुछ देर पढा कर । अच्छे नम्बरो मे पास होगा तो मैं तुझे इनाम दूगी, समझा ।

गोपाल : जानता हू, मा । आज ही कुछ देर हो गई, नही तो हर रोज मै जल्दी ही आ जाता हू । अच्छा, अब रोटी दो, मुझे बडे जोर की भूख लगी है ।

कस्तूरी : देख, उस थाली के नीचे परोसकर रक्खी है । हाथ धोकर घडे मे से पानी भर ले और रोटी खाले। फिर थोडी देर पढना और तब सो जाना ।

गोपाल : तो क्या तुम अभी मेरे साथ रोटी नही खाओगी ?

कस्तूरी : तुम खालो, मुझे अभी भूख नही है । मै तुम्हारे पिताजी के आने पर उन्हे खिलाकर फिर खाऊगी ।

गोपाल . तब मै भी पिताजी व तुम्हारे साथ ही खाऊगा ।
(मां के पास बैठता है)

कस्तूरी कैसी पागलो जैसी बाते करता है । चल उठ, जा, खाना खा ले ।

गोपाल नही मा, मुझे भूख नही है । आज मै पिताजी के साथ ही रोटी खाऊगा । मैंने कितने ही दिनो से उनके साथ बैठकर खाना नही खाया ।

कस्तूरी : जिद नही करते, बेटा ! **(दुलार से)** जिद्दी बच्चों को लोग अच्छा नही समझते। चल, अब मेरी वात मान ! फिर सुबह तुझे उन्हीके साथ खिलाऊगी।

गोपाल : मुझे क्यो बहकाती हो, मा। वह सोकर उठते ही नही, तबतक मै मदरसे चला जाता हू। नही, आज तो मै उन्हीके साथ खाना खाऊगा।

कस्तूरी : (लम्बी सांस भरकर) हे भगवान् ! मैने ऐसे कौन-से अपराध किये है, जिनके लिए तू मुझे इतना सता रहा है।

गोपाल : ऐसी बाते क्यो करती हो, मा ? अच्छा मा, अगर मै पास हो गया तो तुम मुझे साइकिल ले दोगी न ?

कस्तूरी हा, ले दूगी बेटा ! अब तू मेरा कहना मान ले। खाना खाकर सो जा।

गोपाल : मुझे नीद नही आ रही। अच्छा, मै अपनी खाट पर लेटकर पढता हू। थोडी देर तू और चक्की चला ले। मा, सुबह से काम करते-करते तू थकती नही है ? जब देखो तब कुछ-न-कुछ करती ही रहती हो। कभी चक्की पीस, कभी चर्खा चला, कभी धान कूट। मा, आजकल पिताजी शहर मे इतनी देर क्यो रहते है ? किसी दिन मै भी उनके साथ शहर जाऊगा।

कस्तूरी : (घबराकर) नही, बेटा नही, तुझे मै शहर नही जाने दूगी। तू अपने खेतो को सम्हालेगा। तुझे मै दुकान नही करने दूगी। तू तो किसान बनेगा। हमे अपनी जमीन सम्हालनी है। **(हलकी आवाज मे)** इस शहर की

दुकान के पीछे ही तो हमने अपना सबकुछ बरबाद कर लिया है। शहर हमारे पीछे भूत बनकर चिपटा है।

गोपाल : अपने-आपमे ही क्या बोलती जा रही है, मा ? ऊचे-ऊचे कह न, मै भी कुछ सुनू ।

कस्तूरी : कुछ भी तो नही कह रही, बेटा । जा, जाकर प॰ । मुझे काम करने दे ।

गोपाल : अच्छा, मै जाता हू । मेरे साथ अब बात मत करना । मुझे पढना है ।

कस्तूरी · **(हाथ जोड़कर, आंखें बन्द करके)** हे भगवान, इस बच्चे का भविष्य तुम्हारे ही हाथ मे है । मै नही चाहती कि इसके ऊपर इसके पिता की काली छाया पडे । मै करू तो क्या । उन्हे समझाकर हार गई। पर मेरी बात कोई माने तब न ! मेरी हैसियत तो इस घर मे एक नौकरानी से भी गई-बीती है । **(रुककर)** यह पाच सेर नाज पीस लू । तब कही कुछ और काम शुरू करूगी । क्या मेरी जिदगी इसी तरह बीतेगी ? दूसरो का आटा पीसते और सूत कातते ! अपना भरा-पूरा सोने का घर इस आदमी ने मिट्टी मे मिला दिया ! **(दरवाजा खटखटाता है)** ओहो, गोपाल जाती बार साकल लगा आया दीखता है । शायद वह आ गये ।

[जाकर दरवाजा खोलती और थोडी देर बाद धन्नो काकी के साथ लौटती है ।]

धन्नो : कहो बहू, सब ठीक-ठाक तो है न ?

कस्तूरी : सब तुम्हारी दया है। आओ, इस मूढे पर बैठ जाओ।

धन्नो : मै घर मे हरनामसिह को रोटी खिला रही थी कि ऐसा मालूम पडा, मानो तुम्हारे घर से चक्की चलने की आवाज आ रही हो। मैने सोचा कि हो-न-हो, तुम्ही अकेली बैठी चक्की के सहारे अपना वक्त काट रही होगी।

कस्तूरी : अकेली बैठी कुछ-न-कुछ तो करना ही हुआ, धन्नो-काकी। ठाली बैठे जी ऊब जाता है।

धन्नो : कभी हमारे यहा ही चली आया करो, बहू।

कस्तूरी : घर के काम-धन्धे से फुर्सत ही कहा है! गोपाल, ओ गोपाल! लो, पढने बैठा था। भूखा ही सो गया दीखता है।

धन्नो : रामसिह अभी नही आये क्या?

कस्तूरी : नही, बस अब आने ही वाले है।

धन्नो : बिटिया, रामसिह को ये बुरी आदते कहा से लग गई। गाजा, शराब और चरस

कस्तूरी मैं क्या जानू, काकी? हमारे भाग! अब तो जब देखो ठर्रा चढाये रहते हैं! मैं तो समझाते-समझाते हार गई। मेरी माने तब न!

धन्नो तुझे तो बडा माने था, बहू! न जाने अब यह उल्टी गगा कैसे बहने लगी है। आज आने दो, मै उसे समझाऊगी।

कस्तूरी न, काकी। अपनी इज्जत आदमी के अपने हाथ होती है। चौबीसो घण्टे गुस्से मे भरे रहते हैं। तुम्हीपर बरस पडे तो अच्छा थोडा होगा?

धन्नो : (अकड़ से) जी हा, मजाक है, मुझपर बरस पडना ? लाला की अक्ल न ठिकाने कर दू तो मुझे कहना । समझ क्या रक्खा है उसने मुझे ! उसकी मा के मरने के बाद मैंने ही तो उसे पाला था ।

[**तभी रामसिह नशे में चूर आता है ।**]

रामसिह : यह पालने-वालने की क्या बाते हो रही थी, काकी !

धन्नो : आओ बेटा, बैठो । मै कह रही थी कि यह छोटा-सा था, जब इसकी मा मर गई थी । तबसे मैंने ही इसे पाला है ।

रामसिह : (बिगड़कर) हा-हा, पाला होगा, पर इसमे ऐसी अहसान जताने की कौन-सी बात है । जब देखो तब तुम यही बात कहती रहती हो !

धन्नो : अरे बेटा, मैंने ऐसी बात तो नही कही, जिसपर तुम इतने बिगड उठो । खैर, जो तुम्हारी मर्जी ! अगर तुम्हे बुरा लगता है तो मै तुम्हारे घर नही आया करूगी ।

रामसिह : नही आया करोगी तो मत आया करो । बात तो ऐसे करती है, जैसे इसके आये बिना मेरा काम ही नही चलेगा ।

कस्तूरी : आज क्या हो गया है, तुम्हे, जो बिना बात लडे जा रहे हो !

रामसिह : बिना बात लडे जा रहा हू ! बहुत ठीक, तो सुनो मै बहुत दिनो से देख रहा हू कि यहा लोग मेरे पीछे आ-आकर मेरी हॅसी उड़ाते हैं, तुमसे झूठ-सच बाते

भिडाते हैं ।

कस्तूरी : कोई मै दूध-पीती बच्ची हू, जो दूसरो के बहकावे मे आ जाऊगी ।

धन्नो : अच्छा भैया, अब तो माफी दे दो । आज के बाद फिर कभी तुमने मुझे अपने घर मे देखा तो कहना! **(गला भर आता है)** अच्छा बेटा, भगवान् तुम्हे राजी रक्खे । खुश रहो । **(जाती है)**

कस्तूरी : तुमने यह अच्छा नही किया । काकी बेचारी बडी दुखी होकर गई है । तुम्हे कम-से-कम उनकी बडी उमर का तो खयाल रखना चाहिए था ।

रामसिंह मुझे किसीकी परवा नही । ला, रोटी ला, मुझे बहुत जोर की भूख लगी है । तुमने खाई कि नही ।

कस्तूरी बस, तुम्हारा ही इन्तजार कर रही थी ।

रामसिंह : इसमे मेरा इन्तजार करने की क्या बात थी ! मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि खाने-पीने मे मेरी राह मत देखा करो ।

कस्तूरी : तो और क्या करू ?

रामसिंह : अच्छा, जा जल्दी कर । मुझे अभी फिर जाना है । मै बहुत जल्दी मे हू !

कस्तूरी : कहा जाना है ?

रामसिंह : तुझे हर बात बतानी जरूरी है क्या ?

कस्तूरी · तब फिर इस आने से तो न आना ही अच्छा था !

रामसिंह : मै बहस नही करना चाहता, कस्तूरी । मै जो काम

कहता हू, वह करो। जल्दी से मुझे पचास रुपये निकालकर दो। मुझे चिम्मा की बैठक पर जाना है। वे लोग मेरा इन्तजार कर रहे होगे।

कस्तूरी : (**व्यग्य**) हू, तो यह कहो कि अब इस बीमारी को शहर से उठाकर गाव मे भी ले आये है। गाव मे तो थोडी-बहुत इज्जत बनी हुई है, वह भी आपको अच्छी नही लगती। (**समझाते हुए**) किसीकी बैठक-ऐठक मे जाने की जरूरत नही है।

रामसिह (**गुस्से से**) कस्तूरी !

कस्तूरी : मै ठीक कह रही हू। आपको अपनी इज्जत का ध्यान नही है तो न सही, पर मुझे तो है। बेटी ब्याहने लायक होगई है। लडके की पढाई को रुपया चाहिए। ये सब काम कैसे होगे। अगर तुम्हारी ये आदते रोज-बरोज बढती गई तो एक दिन यह घर बरबाद होकर रहेगा। दो साल होने को आये, खेतो मे एक दाना नही उगा। जो खेत सोना उगलते थे, अब मिट्टी बनकर रह गये है। तुमने कभी इन बातो पर भी सोचा है ?

रामसिह अच्छा-अच्छा ! ज्यादा बाते मत करो। मै जो कह रहा हू, वह करो। इन बातो पर फिर कभी सोचूगा।

कस्तरी सोचेगे आप खाक। आपने इस घर को घर समझ रखा हो तब न ! सुनिये, शहर की आढत-वाढत की दुकान पर लगाइये आग। यहा रहकर अपनी खेती-बाडी शुरू कीजिये।

रामसिंह : कस्तूरी, मुझे दीखता है कि आज तुम्हारी पिटने की इच्छा है।

कस्तूरी यह कोई नई बात नही है, मेरे लिए। तुम्हारी दया से अब मार खाने की आदत-सी पड गई है। इच्छा हो तो आज भी अपने अरमान निकाल लो।

रामसिंह : कस्तूरी !

कस्तूरी : मै कहती हू, वे लोग मिल-जुलकर आपको लूट रहे है। अच्छा, लो रोटी खालो।

रामसिंह : अब मै रोटी-वोटी कुछ नही खाऊगा। मुझे वहा जाने की जल्दी है। कही वे लोग वहा से चले न जाय ! यह न समझ ले कि मैं मैदान छोडकर भाग गया। आखिर इन्सान की जुबान भी तो कुछ होती है !

कस्तूरी : **(व्यंग्य)** बहुत खूब ! इन्सान की जुबान की कीमत भी अब जुए, शराब और दूसरी बुरी बातो मे ही तो रह गई है ! उस समय तुम इन्सान की जुबान की कीमत भूल जाते हो, ज़ब मेरे सामने खाई हुई ये कसमे कि अब मै कभी शराब नही पियूगा, अब मै कभी जुआ नही खेलूगा, कुछ ही देर मे थोथी साबित हो जाती है !

रामसिंह : बस कस्तूरी, मेरे सबर की हद हो चुकी है।

कस्तूरी : और मेरी भी। तुम आखे रखते हुए भी अन्धे बने हुए हो। मेरे पास रुपयो की खान नही लगी हुई है। धीरे-धीरे तुम मेरा सब सोना भी बेचकर खा गये हो। बाप के यहा से जो कुछ लाई थी वह भी स्वाहा हो गया।

तुम यह सबकुछ जानते हुए भी कि मै सुबह से शाम तक दूसरो का अनाज पीसती हू, सूत कातती हू, तब कही जाकर अपना और अपने बच्चो का पेट पालती हू, अनजान बने हुए हो। मै समझती थी, तुम्हे किसी दिन अपनी करनी पर शर्म आयगी। पर अब तो मुझे पक्का यकीन है कि तुमने अपनी शर्म घोलकर पी ली है।

रामसिह : क्या बकती हो ? क्यो करती हो यह सब काम, गाववालो का ! काम करने से पहले तुम कही डूब मरती तो अच्छा होता। अपनी बनी-बनाई इज्जत पर कालिख पोतने से पहले तुम्हे मौत भी नही आई।

कस्तूरी : मौत आ जाय तो और फिर चाहिए ही क्या ! अभी तो हर बात पर पर्दा पडा हुआ है। पर आखिर तो एक-न-एक दिन यह बात गाववालो के आगे खुलेगी ही। बेचारी धन्नो काकी अपने नाम पर गाववालो से काम लाकर मुझे देती हैं। पर कबतक चलेगा यह सब ?

रामसिह : अच्छा, कल सुबह इन सब बातो पर विचार करूगा। उस धन्नो की बच्ची से भी निबटूगा। बस, अब तू जल्दी से मुझे पैसे निकालकर दे, नही तो मेरा हाथ खुल जायगा।

कस्तूरी : खुलने दो अपना हाथ। मै अपने हाथो अपने बच्चों के पेट पर लात नही मार सकती।

रामसिह : **(थप्पड़ मारकर)** बडी आई बच्चोवाली ! मार-मारकर हड्डिया न तोड दू तो मेरा नाम रामसिह नही। सीधी तरह से बता, किस सदूक मे रुपये रखे है **(पीटता है)**।

कस्तूरी : **(रोते हुए)** मुझसे क्या पूछते हो ! सब सन्दूक तुम्हारे सामने हैं । तोड लो, खोल लो, देख लो ।

रामसिंह : तालिया कहा हैं, इन सन्दूको की ?

कस्तूरी : मुझे नही मालूम ।

रामसिंह : हा-हा, तुझे काहे को मालूम होगा । अच्छी बात है ! **(ताले पर पत्थर मारता है)** दिन निकलने दे एक-एक से गिन-गिनकर बदला चुकाऊगा ।

[गोपाल दूसरे कमरे से जागकर आता है ।)

गोपाल : पिताजी ! पिताजी ! आप आ गये ।

रामसिंह : चुप रह, पिताजी के बच्चे, नही तो यह पत्थर तेरे सिर पर दे मारूगा ।

कस्तूरी : ले, खाले पिताजी के साथ रोटी । अभागा कही का ! तेरे लिए यह तमाशा देखने को बाकी था, सो आज तूने भी देख लिया ।

रामसिंह : **(चीखकर)** तेरी यह कैंची की तरह चलती ज़बान बन्द होगी कि नही ? चुप हो, नही तो यह पत्थर तेरे सिर पर दे मारूगा ।

कस्तूरी : तो फिर मेरा मुह क्या देख रहे हो । दे मारो न ! लो, यह मेरा सिर हाजिर है । **(पत्थर से ताला टूट जाता है और रामसिंह सन्दूक खोलता है ।)**

रामसिंह : समझती थी, यह ताला टूटेगा ही नही । हू, तो यह है गहने की पोटली ! यह है रुपये की गाठ ! **(अट्टहास)** अब देखूगा, मेरे साथ जुए मे कौन जीतेगा ! हाथ मे खुला

धन हो तब जुआ खेलने का मजा आता है ।

कस्तूरी : **(पोटली छीनती हुई)** भगवान् के नाम पर इस बच्चे पर रहम करो। हमें अब भीख मागने पर मजबूर न करो।

रामसिंह : हट जाओ मेरे रास्ते से ।

कस्तूरी : नही, मैं अपने जीतेजी यह नही होने दूगी । **(रोती है ।)**

गोपाल : पिताजी ! पिताजी ! आप कहा जा रहे हैं ? मैं आपको नही जाने दूगा। **(पैरो से लिपट जाता है)** । मा, तू मत रो। मैंने पिताजी को पकड लिया है। अब नही जा सकते ।

रामसिंह : परे हट, (उठाकर फैकता है) ले, अब तो छोडेगा मेरा रास्ता । **(अट्टहास)** बडा आया तीसमारखा का बच्चा ! **(जाता है।)**

कस्तूरी : हाय राम, यह क्या अनर्थ हो गया ! यह बाप है या कसाई ! अब हम अनाथो का यहा क्या होगा ! **(बच्चे को गोद में उठाकर रोती। तभी फिर धन्नो काकी आती है।)**

धन्नो : बहू ! बहू ! क्यो क्या हुआ ! अरे राम, यह क्या ! गोपाल को क्या हुआ ? उसके सिर से खून कैसे निकल रहा है। मैं सब-कुछ देख-सुन रही थी, बेटी, पर मजबूर थी। कम्बख्त कैसा राक्षसो की तरह हँसता गया है। हिम्मत रख बेटी, इस तरह के रोने-धोने से कुछ नही होगा। लडके के मुह मे गर्म दूध डाल, जिससे उसे होश आये।

कस्तूरी : दूध यहा कहा धरा है, काकी !

धन्नो : ठहर, मै अभी आई। तू रो मत। भगवान् सब-कुछ देखते है। **(जाती है।)**

कस्तूरी : गोपाल ! गोपाल ! आखे खोल। **(रोती है।)** होश मे आ। हम आज ही यहा से तेरे नाना के यहा चल देगे। अब हमारा इस घर मे गुज़ारा नही है। **(सुबकती है। धन्नो कटोरे मे दूध लिये आती है।)**

धन्नो : ले, इसके मुह मे दूध डाल और इसे खाट पर लिटा दे। फिकर मत कर। जल्दी ही होश मे आ जायगा। बिरजू भी आया जाता है। अभी खेतो की मेड बाधकर आया है। **(बिरजू आता है।)**

बिरजू : क्यों, गोपाल का क्या हाल है, भाभी ? तुम चिन्ता मत करो। भगवान ने चाहा तो मै सब ठीक कर दूगा। खाना खाने बैठा ही था कि अम्मा ने बताया। किधर गया है, यह रामसिह ?

कस्तूरी : चिम्मा-इम्मा की बैठक मे आज जुआ लग रहा है। वही गये है।

बिरजू : मै अभी वहां जाता हू। लाला की अकल ठिकाने कर दूगा।

कस्तूरी : नही लाला, ऐसा भूलकर भी मत करना। मुझपर रहम करो। इस व़क्त वह गुस्से मे है, समझेगे, अपने हिमायती भेजकर मुझपर रौब डालना चाहती है।

बिरजू : अम्मा, तुम गोपाल को दूध पिलाओ। इसमे हिमायत

की कौन-सी बात है। एक पडोसी के नाते, एक गाव-वाले के नाते, मुझे सबकुछ करने का हक है। मैं अभी नम्बरदार के पास जाऊगा, उन्हे जाकर सारी कहानी सुनाऊगा। चिम्मा-इम्मा जैसे आदमियो को इस गाव मे नही रहना चाहिए। किसीका घर बरबाद हो रहा हो और हम खडे तमाशा देखते रहे, यह कहातक उचित है। कम्बख्त ने डेढ-दो साल मे ही सोने जैसी गृहस्थी को मिट्टी बनाकर रख दिया।

धन्नो : एक दिन था जब गाववाले इसकी तारीफ करते नही थकते थे। आज कोई भी उससे बात करना नही चाहता, सिवा इन पाच-चार लफगो के। तुम जाओ, उसको जाकर देखो। कही मिल जाय तो समझा-बुझाके घर ले आना।

बिरजू : अच्छा अम्मा, मैं जाता हू। वैद्यजी को भी भेजता जाऊगा। गोपाल को देखते जायगे। (**कहते-कहते जाता है।**)

धन्नो : बहू, रो मत। भगवान् ने तेरी सुन ली है। गोपाल ने आखे खोल दी।

गोपाल : अम्मा, पिताजी कहा गये है?

कस्तूरी : बेटा, दूध पी ले, और चुपचाप सो जा। सबेरे, तुमको तुम्हारे नाना के यहा ले चलूगी। अब वही रहेगे हम।

धन्नो : बहू, यह तू क्या कह रही है! यह तूने क्या सोचा है?

कस्तूरी : मैंने ठीक ही सोचा है, काकी। आज तो बच्चे का

सिर फटा है, किसी दिन नशे मे वह जान भी ले सकते है।

धन्नो : पर बेटी, तुम्हारा यहा रहना बहुत जरूरी है, नही तो किसी दिन तुझे अपनी इस बात पर पछताना पडेगा।

कस्तूरी : सबकुछ समझती हू, काकी। पर अब मै मजबूर हो गई हू। उनके इस वहशीपन से डर गई हू।

धन्नो : तेरे पिता इतने अमीर नही है कि तुम लोगो को पाल सके। वे इस उमर मे अपना और तेरी बुढिया मा का पेट ही मुश्किल से भर पाते है। चम्पा वहा पहले ही से है। तुम दोनो भी वहा पहुच जाओगे तो इतना बोझ वह कैसे सम्भाल पायेगे।

कस्तूरी : इसमे बोझ काहे का है, काकी ! मुझे सिर छुपाने भर को जगह चाहिए। मेहनत-मजूरी करके अपना और अपने बच्चो का पेट भर सकती हू। मैं बापू पर बोझ नही बनूगी।

धन्नो : हाय री किस्मत ! वह भी क्या सोचेंगे, मेरे कहने से ही उन्होने तेरी शादी यहा की थी ! **(सांस भरकर)** यह सब मेरा ही दोष है, बेटी।

कस्तूरी : इसमे अपनेको क्यो कोसती हो, काकी ! जब तुमने शादी कराई थी, तब तो इनमे कोई ऐब नही था। यह तो शहर मे जाकर अन्धाधुन्ध कमाने की हविश ने इनका सत्यानाश कर दिया।

धन्नो : भगवान की बाते भगवान ही जानते है, बिटिया ! सोना बनाने गया था, मिट्टी लेकर आया।

कस्तूरी : अपनी-अपनी तकदीर है, काकी ।

धन्नो : तू धीरज रख। भगवान के यहा देर हो सकती है, पर अन्धेर नही । मिट्टी को सोना करते उसे देर नही लगती। कौन जाने, तुम्हारे फिर अच्छे दिन आ जाय । अब हमी-को लो । बिरजू पहले इसीके खेतो पर काम करता था। इससे झगडा हो गया । इसने हमे अलग कर दिया । तुम तो सब कहानी जानती हो, बेटी । नम्बरदार की मेहर-बानी से बिरजू को कुछ बीघे जमीन जोतने को मिल गई । अपनी मेहनत और ईमानदारी से अब हम पहले से अच्छा ही खाते-पीते है । मेहनत से काम करने पर ज़मीन सोना उगलती है ।

कस्तूरी : इसी बात का तो रोना है, काकी । अपने खेत न खुद जोतते है और न किसीको जोतने देते है । दुकान के नाम पर शहर मे सट्टा खेलने का ढोग बना रखा है ।

गोपाल : अम्मा, मै पढना छोड दूगा। अब मैं अपने खेतो को सम्भालूगा ।

कस्तूरी : हा, अब हम यही करेगे । पर तू पहले पढ-लिख ले । पढा-लिखा किसान और भी अच्छा होता है । फिर यह तेरे छोटे-छोटे हाथ अभी हल की मूठ कहा पकड सकेगे, बेटा । अब तू सो जा । तुझपर मेरी बडी-बडी उम्मीदे हैं ।

[कुछ देर बाद बिरजू आता है । साथ में नम्बरदार भी है ।]

बिरजू : भाभी, चिम्मा-इम्मा किसीकी बैठक मे तो ये लोग दीखे नही। ताऊजी भी मेरे साथ-साथ घूमते रहे।

नम्बरदार : तू दुःखी मत हो, बहू। दिन निकल आने दे। मैं सब ठीक कर दूगा। गाव मे मेरे होते जुआ नही चल सकता। जबतक मै जिन्दा हू तबतक यह बीमारी गाव-वालों को नही लग सकती।

धन्नो : पर यह तो कल अपने बापू के यहां जाने की बात कर रही है।

नम्बरदार : हू ! यह कभी नही हो सकता। मै अपने गांव के सुख-दु ख की बाते दूसरे गांव मे नही जाने देना चाहता। तू मुझपर यकीन कर, बिटिया। अब तुझे यहां कोई कष्ट नही होगा। तू समझ ले, मैं तेरा बापू यही तेरे पास हू।

कस्तूरी : यह तो आपकी मेहरबानी है, ताऊजी। पर मैं चाहती हूं कि वह भी इस बात को महसूस करे कि उन्होने हमारे साथ ज्यादती की है। देख रहे हैं आप। बच्चे का क्या हाल करके गये हैं।

बिरजू : ओहो, रामसिह को ढूढने की जल्दी मे वैद्यजी के घर जाने का ध्यान ही न रहा। अभी जाता हू।

धन्नो : अब तो गोपाल होश मे है।

गोपाल : दर्द बड़ा हो रहा है, अम्मा, और मुझे भूख लगी है।

नम्बरदार : क्यो बहू, इसे रोटी क्यों नही खिलाई ? जा बिरजू, मेरे घर से भागकर रोटी ले आ।

कस्तूरी : वह तो सब आपकी दया है, ताऊजी। रोटी तो कभी की बनी पडी है। जिद्द कर रहा था कि पिताजी के साथ खाऊगा। अपने पिता को प्यार करने का उसे यह नतीजा मिला है।

नम्बरदार : तुम्हारी गल्तिया तुम्हारे सामने आ रही हैं, बिटिया! बात जब यहातक बढ गई तो हमारे सामने आई। तू हमसे हर बात को छिपाती रही, यह समझकर कि रामू की बदनामी न हो। वह चिनगारी आग बनती गई (**लम्बी सांस लेकर**) और अब इसे एकदम सख्ती से बुझाना होगा, नही तो उन चार-पाच आदमियो के कारण सारे गाव मे इन बीमारियो के फैल जाने का डर है। सबेरा होते ही मै सबका दिमाग ठिकाने लगा दूगा।

धन्नो : रामू के खेत रहन पडे हैं। और जो अपने पास थोडे-बहुत हैं, दोस्तो को बटाई पर दे रखे हैं। वे इसके पल्ले कुछ नही डालते। आप इस बात का कुछ इन्तजाम कर दीजिये।

नम्बरदार : हमसे कोई बात करे, तब न धन्नो! आज पता लगा है। सब ठीक कर दूगा। वैसे कानो मे कुछ भनक तो पहले भी पडती रही है, पर ठीक बात का पता नही लग पाया था। अरे बिरजू, जरा बगिया मे जाकर तो देख। कही वहा न इन लोगो ने जुआ का अड्डा बनाया हो।

बिरजू : विचार तो कुछ मेरा भी ऐसा ही है, ताऊजी। अच्छा

तो मै जाऊ ?

नम्बरदार : चल, मै भी तेरे साथ चलता हूं ।

बिरजू : आप क्या करेगे इस अन्धेरे मे चलकर । बूढा शरीर, कही ठोकर लग गई तो वैसे ही लेने के देने पड जायगे । मै अभी आता हू, पता लगाकर । मुझे तो ऐसा लगता है कि इसमे कुछ बाहरवालो का भी हाथ है ।

नम्बरदार : हो सकता है । कोई बडी बात नही । जो कुछ भी है, सब पता लग जायगा । पर देखो, अकेले मत जाना । चार-पाच आदमी ले जाना अपने साथ । क्या पता कि वे लोग लडने को ही तैयार हो जाय ।

बिरजू : मै पहले ही यह सब सोचे हुए हू । अभी कल्लू आदि को साथ लिये जाता हू ।

नम्बरदार : ठीक, साथ मे एक-दो लठैत हो तभी मजा आयगा । मिल जाय तो सबकी मुश्के बाधकर लाना । अच्छा ।

बिरजू । ऐसा ही होगा । **(जाता है ।)**

नम्बरदार : अच्छा धन्नो ! मै चलू । बात का पता लगाता हू । कस्तूरी बिटिया, तू कुछ खा-पी ले और गोपाल को भी खिला दे । अपनी तबीयत को ठीक कर । सवेरे ही तेरी सारी जमीन किसीको आध-बटाई पर दे दूगा । हकीम-जी को लेकर आता हू । गोपाल को दिखा देना चाहिए । इस वक्त ताजी-ताजी चोट है, ठीक अदाज नही हो रहा है । बाद मे कही दर्द बढ न जाय । **(जाते है ।)**

धन्नो : उठ बिटिया, खाना खाले ।

कस्तूरी : इच्छा नही होती, काकी । गोपाल को खिलाये देती हू । मैं तो अब उनके आने पर ही खाऊगी ।

धन्नो : नही-नही, यह नही होगा । (**कुछ देर बाद ही बिरजू रामसिह को लेकर आता है**) ।

बिरजू : भाभी, जल्दी से बिस्तर लगा । भैया की हालत ठीक नही है ।

कस्तूरी : हाय मेरे राम ! यह सब कैसे हुआ ? तुम लोगो ने यह क्या किया ?

बिरजू : हमने कुछ नही किया, भाभी, कुछ नही किया । पहले मै जो कह रहा हू, वह करो । फिर सारी कहानी सुनाऊगा । नम्बरदार कहा गये, अम्मा ?

धन्नो : तुम्हारे पीछे-पीछे ही चले गये थे । कहते थे, हकीमजी को लेकर अभी आ रहा हू ।

बिरजू : चलो, यह भी अच्छा ही हुआ । हकीमजी को तो बुलाना ही पडता ।

[**खाट पर रामू को लिटाते हैं । तभी हकीमजी के साथ नम्बरदार आते है**]

नम्बरदार : क्यो, क्या बात है, बिरजू । पकडे गये बदमाश ।

बिरजू : हकीमजी, तुम जरा भैया को देखो, इनकी हालत बडी खराब है । (**हकीमजी रामू को देखते है ।**) बात यह हुई ताऊजी, कि हमारे जाने से पहले ही वे बदमाश इन्हे लूट-पाटकर या जीत-जातकर जो भी समझो, जा चुके थे, और इनका बुरा हाल करके कोनेवाले कुए के पास डाल

गये थे । यह वहा औधे मुह जमीन पर बेहोश पड़े थे । हमने बुलवाने की बहुत कोशिश की, पर ये बोले ही नही । हमने उनका पीछा करना ठीक न समझा । इनकी बुरी हालत देखकर पहले इन्हे घर लाना ही ठीक समझा ।

नम्बरदार : ठीक किया तुमने । उनसे तो फिर भी निपटा जा सकता है । उन बदमाशों की चमडी न उधेड दू तो मै नम्बरदार नही । रामू, ओ रामू !

रामसिह : **(होश मे आते हुए)** मै कहा हू । हैं, घर मे ! यहा मुझे कौन लाया है ? वह चिम्मा और दूसरे लोग कहा गये ? मै आज उन सबका खून पी जाऊगा ।

नम्बरदार : होश मे आओ । क्या बहकी-बहकी बाते कर रहे हो । चिम्मा-इम्मा सबसे तुम्हारा बदला हम लेगे ।

रामसिह : मैं उन सबसे लडा तो बहुत, पर मै अकेला उन चार-पाच के मुकाबले मे कर ही क्या सकता था ?

नम्बरदार : तुम चिन्ता मत करो, सब ठीक हो जायगा, पहले यह बताओ कि गहने और रुपये कहा हैं ?

रामसिह : उन्हे तो मै जुए मे हार गया, ताऊजी । उन्हीपर तो सारा झगड़ा हुआ ।

नम्बरदार : यह तुमने बहुत बुरा किया, रामू । तुमने खुद अपने पाव पर कुल्हाडी मारी । तुमने हम लोगो से कभी किसी बात मे सलाह नही ली । अपनी बहू और बेटे तक को तुमने अपना दुश्मन समझा । तुम बाप हो या राक्षस ?

देखो तुमने गोपाल की क्या दशा की है ? कितनी खराब हालत है इसकी ? ईश्वर न करे अगर इसे कुछ हो जाय, तब क्या होगा ? तुम्हे शर्म आनी चाहिए, रामू ।

रामसिंह : (रोता हुआ) गोपाल ! गोपाल ! कैसी तबीयत है, बेटे ?

नम्बरदार : लक्ष्मी-सी बहू हमने तुम्हे लाकर दी और तुम उसे मिट्टी मे मिला रहे हो ।

धन्नो : वह कल अपने मायके जा रही है ।

रामसिंह : क्यो, ऐसी क्या बात होगई ?

धन्नो : यह अपनी करतूतो से पूछो । कुछ देर पहले इसका खून किये दे रहे थे ।

रामसिंह : शराब ने मुझे अन्धा कर रखा था, काकी ।

नम्बरदार : तो जा, और पी आ दो-चार चुल्लू । मै पूछता हू, तू आदमी बनकर रहना चाहता है कि नही ? आज के बाद कभी मैंने सुना कि तूने बहू और बेटे पर हाथ उठाया है तो मुझसे बुरा कोई नही होगा । शहर की दुकान का जो तूने ढोग बना रखा है, उसे छोड ।

बिरजू वह तो थोडे दिनो मे खुद ही बन्द हो जायगी । उसमे अब रखा क्या है !

नम्बरदार और कस्तूरी बेटी, तू हम गाववालो पर यकीन कर । आगे तुझे इसके खिलाफ कोई शिकायत हो तो हमे बताना । तू समझ ले, यहा तेरे बापू मौजूद हैं । रामू, तू मर्द होकर बच्चो की तरह रो रहा है । बहू से वादा

कर कि आगे उसे प्यार से रक्खेगा और अपना पूरा ध्यान खेती-बारी पर लगावेगा ।

रामसिंह : ऐसा ही होगा, ताऊजी । मैंने अपनी सोने-सी जमीन को मिट्टी बना रक्खा है । अब मै इसी मिट्टी मे से सोना पैदा करके दिखाऊगा । बिरजू, तू मेरा साथ देगा । भैया मेरी-तेरी आध-बटाई रही ।

बिरजू : मै तुम्हारा पहले जैसा ही बिरजू हू, भैया । जो चाहोगे वही होगा ।

धन्नो : रामू, क्या अब भी यही मानते हो कि मैने तुम्हे नही पाला था ?

रामसिंह : मुझे माफ करो, काकी । तुम भी माफ करो, कस्तूरी । मै आप सबके सामने बहुत ही शर्मिंदा हू । अब मेरी आखे खुल गई हैं ।

[काकी स्नेह से रामू के माथे पर हाथ फेरती है ।]

[पटाक्षेप]

: ५ :

मेल-मिलाप

पात्र

मंगलसिंह	: गाव का एक खाता-पीता किसान
किशनसिंह	मगलसिंह का चचेरा भाई
रघुराजसिंह	गाव का एक वेकार, मगलसिंह का दोस्त
हीरा पडित	गाव का पुरोहित
राधा	मगलसिंह की पत्नी
चन्दो	किशनसिंह की पत्नी
रामू	. मगलसिंह का बेटा

पहला दृश्य

[स्थान : गांव का एक गलियारा। एक ओर को मंगलसिंह की चौपाल। गलियारे के दूसरी ओर किशनसिंह की। दोनो की चौपालो के आगे चबूतरे। चौपालो के भीतर से ही घरों में भी रास्ते निकल जाते है, वैसे ये चौपालें दोनो के मकानों के पिछवाड़े हैं। किशन की चौपाल का दरवाजा बंद है। मंगलसिंह अपनी चौपाल के चबूतरे पर बैठा हुक्का पी रहा है। नैपथ्य में बैलों की घंटियो की आवाज। साथ ही कुछ दूरी पर शहनाई का स्वर। राधा का प्रवेश]

राधा : **(समझाते हुए)** मै कहती हू, कुछ तो समझ से काम लो। इस तरह से हठ करना ठीक नही। किशन की बेटी की शादी है। तुम न पहुचे तो दुनिया क्या कहेगी!

मगल : किशन मेरा क्या लगता है, जो उसके यहा न जाने पर दुनिया मुझे कुछ कहने आयेगी?

राधा कैसी बात करते हो! चाचा के लडके और सगे भाई मे क्या अन्तर होता है! फिर बेटिया तो सबकी साझी होती हैं। मै कहती हू, गुस्सा दिखाने के और भी बहुत मौके आवेगे जिदगी मे। लोग कहेगे—बेटी का ब्याह था, कुछ देना पड जाता, इसीलिए नही आये।

मगन : लोगो को जो कहना है, कहते रहे, मै किसीका दिया नही खाता। जो इच्छा होगी, करूगा। और तुझे भी बता दू—मुझे तेरे व्याख्यान की जरूरत नही है।

राधा : हाय राम! तुम तो बिना बात ही बिगड उठते हो! देखो, बिरादरी का मामला है। आज तुम न जाओगे उसके यहां तो कल वे भी तुम्हारे यहा नही आयेगे। आखिर तुम्हे भी तो बेटे-बेटियो की शादी करनी है। तीन-चार महीने मे ही सीता की शादी होनी है। देख लेना, फिर कौन आता है, तुम्हारे यहा।

मंगल : अच्छा, ज्यादा बाते मत बना। कोई नही आता तो न आये। जा जरा आग ले आ। चिलम ठण्डी होने लगी है। बिरादरी, बिरादरी! बिरादरी न हो गई, भूत हो गया मै नही करता परवा बिरादरी-फिरादरी की।

राधा : फिर कहोगे कि मुझे व्याख्यान दे रही है। पडोस की परवा नही करते तो क्या गाव से भी तुम्हारा कोई सरोकार नही है ? गाव को छोडकर जगल मे बस जाना चाहते हो क्या ? आखिर हमे गाव मे ही तो रहना है। इनके साथ मिलजुलकर नही रहोगे तो कैसे काम चलेगा ?

मंगल : अपना तो सब काम आनन्द से चल रहा है। भगवान् की कृपा चाहिए।

राधा : शहरवाली आढत की दुकान के बलबूते पर फूले-फूले फिरते हो। जिसे गाव मे रहना है उससे पूछो। याद रखना, तुम जिनके बहकावे मे आ रहे हो, वे तुम्हारे दोस्त नही है। वे किशन से अपनी पुरानी दुश्मनी निकाल रहे हैं और बदनाम हो रहे हो तुम।

मंगल : चार अक्षर क्या पढ लिये है तुमने, अपने-आपको जाने क्या समझ वैठी हो ! बाप के ज़माने का झगडा है। उसे भुलाकर कैसे शामिल हो जाऊ बारात की आगवानी मे। सगी-साथी सुनेगे तो क्या कहेगे ?

राधा भाड मे झोको ऐसे साथियो को, जो दूसरो की बनती देखकर रोते है। ऐसो ही के कारण तो गाव की जिंदगी बरबाद हो रही है। इसको उससे लड़ा, उसको इससे लडा, यही तो काम है उनका। मैं कहती हू, तुम्हारे पास पैसा है तो यह सब तुम्हारे बने हुए है। आफत पड़ने पर इनमे से एक भी साथ नही देगा। क्या करते हैं ये तुम्हारे रघुराजसिह ? यही न कि लाठी ली, तेल चुपड़ लिया,

किसीकी बाड में आग लगा दी, लोगो के घरो मे झगडे करवा दिये ! उसने जरूर तुम्हे किशन के यहा शादी मे जाने से रोका होगा।

मंगल : यह लो, बिना बात ही उस भले आदमी पर बरस पडी। भला उसे क्या पडी है, जो वह हमारी घरेलू बातो मे पडे ! मेरे न जाने से कौन किशन की बेटी की शादी रुक जायगी !

राधा : यह तो ठीक है, पर आदमी का अपना फर्ज होता है कि ऐसे मौको पर अपने पडोसियो को, गाववालो को, साथ-वालो को मदद दे। उनके काम मे हाथ बटाये। बात असल मे यह है कि तुममे मदद की भावना ही नही है। किसीका साथ देना तुम्हारी आदत मे ही नही है। इतनी अकड तुममे तुम्हारे पैसे ने भर दी है।

मंगल : हो सकता है। पैसे का गुमान किसे नही होता! फिर किशन के पास भी तो पैसा कम नही है। अपनी इन फालतू बातो को छोडो ! उनके पीछे चिलम मे आग रखना भी भूल गई।

राधा : अच्छा, मैं फालतू बाते कर रही हू ! आज न सही, किसी दिन इन बातों की कीमत जानोगे। (**चिलम में आग भर-कर लाती है। नैपथ्य में शहनाई**) मै कहती हू, अब भी मान जाओ। अब भी कुछ नही बिगड़ा।

मंगल : जाओ, मुझे चैन से हुक्का पीने दो। एक बार नही सौ बार कह दिया, नही जाऊंगा, नही जाऊगा ! तुमसे भी कहे देता हू, वहा गई तो मुझ-सा बुरा और कोई नही

होगा ।

(नैपथ्य से) मगलसिंह है क्या ?

मंगल : (ऊंचे स्वर से) आ जाओ भाई, रघुराजसिंह ! अच्छा, अब तुम जाओ, रघुराजसिंह आ रहा है। (राधा जाती है, रघुराज आता है, शक्ल-सूरत से ही उसका काइयांपन झलक रहा है) ।

रघुराज : कहो भाई, क्या हो रहा है ?

मंगल : कुछ भी नही । अभी हुक्का पीने बैठा था कि तुम आ गये । तुम सुनाओ, बाहर की क्या खबरे हैं ? किशन के यहा क्या हो रहा है ?

रघुराज : बस अभी बारात की अगवानी होकर हटी है। तुम्हारे वहा न पहुचने की बड़ी चर्चा है ।

मंगल : सो तो होगी ही । गाववालो का ख्याल था कि इस लडकी के विवाह पर सब झगडे निपट जायंगे। हमारे खानदान मे कितनी ही पीड़ियो बाद एक लड़की का ब्याह हो रहा है ।

रघुराज : तुम अपनी बात के पक्के निकले ! मैंने तो कह दिया था सबके बीच मे कि चाहे आकाश धरती पर आ जाय, पर मगलसिह ब्याह में शामिल नही होने का। (रुककर) क्या बात है, आज किशन ने इधर का दरवाजा नही खोला ?

मंगल : सब बडे दरवाजे की ओर लगे हुए होगे, बारात के चक्कर मे । हो सकता है, उसने यह भी सोचा हो कि

हम उनके ठाट-वाट न देखले । लो, हुक्का पियो । थोडी देर पहले किशन आया था, पर मैंने साफ कह दिया कि मैं नही आने का । मैंने रधिया को नही बताया कि किशन आया था, नही तो वह सिर-दर्द बनकर चिपट जाती ।

रघुराज : (हुक्का पीते हुए) रधिया ने तो कहा होगा तुमसे जाने के लिए । न जाने क्यों, अपनेको तो तुम्हारी पत्नी से बड़ा डर लगता है । है कुछ अक्खड-सी । कौन जाने कब डांट दे ! परसो की बात है । तुम शहर गये थे । छिद्दा यहां था नही । हम लोगो ने सोचा कि चलो, तुम्हारी बैठक में ही कुछ देर बैठकर समय काट ले और कौड़ियां फेंक लें । रामू यहां बैठा था । हम भी आ बैठे । तुम्हारी घरवाली को पता लग गया । लडके से कहलवा दिया कि यहां से उठकर चले जाय, इसीमे भला है । यह भले आदमियों के बैठने की जगह है । भैया, बात लगी तो बुरी, पर सबर का घूट पीकर चले गये ।

मंगल : हां भाई, वह है ही कुछ सख्त तबीयत की । बात यह है कि स्त्री से हर वक्त लड़ाई करके भी घर का गुजारा नहीं चलता ।

रघुराज : यह तो ठीक है, पर फिर भी औरत को जरा डरा-धमकाकर ही रखना चाहिए । चलो, थोड़ा घूम-फिर आयें । हीरा पंडित की चौपाल पर ही चलकर बैठे । वहा से बारात का तमाशा भी देखते रहेंगे और बात-चीत मे समय भी कट जायगा ।

मंगल : तुम्हारा कहना ठीक है। तुम चलो। मैं राधा से कह-
कर आता हूं।

[रघुराज जाता है, मंगल चौपाल की सांकल अंदर से लगा लेता है।]

दूसरा दृश्य

[स्थान वही, पर अबकी बार किशन की बैठक का दरवाजा खुला है। बाहर चबूतरे पर लालटेन जल रही है। एक-दो बच्चे खेल रहे हैं, तभी किशन और चन्दो आते हैं]

किशन : जाओ रे, कही और जाके हुड़दंग करो। चलो, घर के भीतर जाकर खेलो।

चन्दो : ब्याह-शादियो मे ऐसा ही होता है। रामजी की दया से सब काम अच्छा ही हो रहा है, पर आज औरतो मे बडी चर्चा है कि जेठजी ब्याह मे शामिल नही हुए।

किशन : आदमियो मे भी सबके मुह पर यही बात है, पर लोग तो हमे ही दोषी समझते हैं। उनका ख्याल है कि हम उनसे कहने ही नही गये। किस-किसको समझाते फिरे! मै तो मगल से बात भी करने को तैयार नही था, पर तुम्हारे बार-बार कहने से गया। सोचता हूं, तुम ठीक ही कहती थी, इन बेसिर-पैर की दुश्मनियो से क्या लाभ। पर वह इतनी बुरी तरह पेश आया कि क्या बताऊ?

चन्दो : चलो जी, हमने अपना फर्ज पूरा कर दिया। किसीसे हमें क्या ! बेटियां सबकी होती हैं। न कहना भी तो बुरा लगता। और मेरा तो अदाज था कि यह दुश्मनी आगे के लिए मिट जायगी।

किशन : कोई बात नही। अभी उनके दिमाग मे यह बात नही आई तो क्या हुआ। अपने-आप कुछ दिनो के बाद समझ जायगे। अगला जमाना ऐसा आ रहा है कि आदमी का अकेले जीना दूभर हो जायगा। अडोस-पड़ोस की तो कौन कहे, गांव-के-गांव एक कुनबा बनते जा रहे है। मिल-जुलकर खेतिया होने लग गई हैं और आगे एक दिन ऐसा आयगा जब ये पानी-वानी के झगडे बिल्कुल ही खत्म हो जायंगे।

चन्दो : सो तो है ही। उनका न आना इतना नही अखरता, पर पता नही राधा भाभी क्यो नही आई।

किशन : मंगल ने रोक दी होगी, नही तो राधा भाभी जरूर आतीं। उन्हीके कारण आज इतना भी है कि तुम दोनो आपस में बोल लेती हो। बच्चे भी मिल-जुल के खेल लेते हैं। पुरानी सिर-फोड़ बाते दब गई हैं।

चन्दो : सो बात तो है ही। सीता ननिहाल गई है। यहा होती तो ज़रूर आती। उसके मामा कुछ ज्यादा बीमार हैं। राधा बहन भी जा रही थी। लक्ष्मी के व्याह के लिए ही रुक गई, एक-दो दिन।

किशन : आखिर भाभी है बडे घर की बेटी। खानदान का कुछ-

न-कुछ असर तो होता ही है ।

चन्दो : मैने एक बात तुमसे छिपा रक्खी थी, डर के मारे । उस दिन राधाबहन लक्ष्मी के लिए दो जोडे कपडे दे गई थी । मैने बहुत मना किया, पर मानी नही । बोली, जैसी मेरे लिए सीता, वैसी लक्ष्मी । झगडे होगे तो हमारे-तुम्हारे होगे । बच्चे तो हम सबके लिए एक-जैसे हैं । जेठजी से छिपकर जहातक उनसे हो सकता है, हमारा ध्यान रखती ही है ।

किशन : मैं सब जानता हू । इसीसे तो अब मेरे दिल मे उन लोगो के लिए इतना प्यार है । तुमने तो यह बात नही कही, पर लक्ष्मी ने मुझसे कह दी थी कि ताई दो जोड़े कपडे दे गई हैं । भला मैं इसमे बुरा क्या मानूगा !

[**इतने मे अपनी बैठक का दरवाजा खोलकर राधा आती है**]

राधा : बधाई तुम दोनो को !

चन्दो : हमसे ज्यादा तुम्हे ।

राधा : मुझे सबसे पहले । आखिर मै ताई हू न लक्ष्मी की ।

चन्दो : देर लगा दी, राधाबहन । गली-मुहल्ले की औरते जाने क्या-क्या कह रही थी ।

राधा : हमे उनकी बातो पर कान देने की जरूरत नही है । मै तो कबकी आ जाती । उनसे कुछ कहा-सुनी हो गई ।

किशन : क्यो, बात बहुत बढ तो नही गई !

राधा : नही तो, बात क्या बढती । वह कलमुहा रघुराज आया और उन्हे अपने साथ ले गया । हीरा पण्डित की

चौपाल पर। वैसे मुझे किसीका डर तो है ही नही, फिर भी मै सब औरतो के बीच आना नही चाहती थी। कई ऐसी कुलच्छनिया होती है कि उन्हे दूसरो का मिलना भी अखरता है और वे बेकार की बाते बनाकर इधर की उधर फैलाती रहती है। ऐसी बातो से बात बनने के बजाय बिगडती ही ज्यादा है।

किशन : सो तो है ही।

चन्दो : पर मैं तो सौ की एक बात जानती हू, जलते को जलाओ और हलुवा पूरी खाओ। किसीका दिया थोडे ही खाते है, जो डर के चलेगे इनसे !

राधा : तू तो ठीक कहती है, पर इन्हे कौन समझाये। अच्छा, तो मै चलू। लो, ये पाच रुपये लक्ष्मी को दे देना मेरी ओर से विदा के। मै उसे ही दे जाती, पर वह अपनी सखी-सहेलियो मे घिरी बैठी है।

किशन : पर इसकी क्या जरूरत थी, भाभी।

राधा : अजी, तुम मत बोला करो, हमारी घरेलू बातो मे।

किशन : (हँसकर) लो, मै चुप हुए जाता हू। चन्दो, जरा लक्ष्मी को बुला ला। दो मिनट को अपनी ताई से मिल लेगी।

राधा : अच्छी बात है। मिलती ही चलू, बिटिया से।

किशन : अच्छा भाभी, मै चलू। बारात का इतजाम देखना है। अबतक तो गाववाले ही सब-कुछ कर रहे है।

राधा : हा, हो आओ। बडी अच्छी बात है कि गाववाले

सब कर रहे है । मैं भी कुछ सालों से देख रही हू, हमारे गाव मे एक-दूसरे की मदद करने की भावना वढ रही है । यह वड़ी खुशी की वात है ।

किशन : एक दूसरे के सहयोग से ही जिन्दगी है, भाभी । मगल और रघुराज, इस तरह के दो-चार आदमियो को छोड-कर सभी गाववाले अपने घर की वात समझकर मेरा हाथ वटा रहे है ।

राधा : पास-पडोस का मतलव ही यह है, भैया ।

किशन : उनके यहा ऐसे मौके आयेगे, भाभी तो मै भी जी-जान से उनका साथ दूगा । इसी तरह जिन्दगी चलती है । वे मेरे हैं, मैं उनका हू । तुम तो जानती ही हो, हीरासिह ने आमो के दो बाग लगवाये हैं । अवकी वार उसे कोई दिक्कत नही हुई । गाव के छोरो ने चुटकियो मे सव काम करके धर दिया । महीनो का काम दिनो मे हो गया । कोई पूछे, इससे हमे क्या फायदा ? फायदा ! फ़ायदा क्यो नही, गाव के आस-पास घनी छाया हो जायगी । गरमी के दिनो की दोपहरिया वहा अच्छी तरह से कटा करेंगी ।

राधा : और नही तो क्या ! वाहर से आम आता है, महगा पडता है । अपने गाव मे होगा तो कुछ तो सस्ता मिलेगा !

किशन : अगर भाभी, इसी तरह से हम आगे वढते चले गये तो एक दिन गाव स्वर्ग वन जायगे । मैं भी सोच रहा हू, एक छोटी-सी वगिया लगवाने की । वीच मे एक पक्की

कुइया बनवा दूगा। लोगो के नहाने-धोने के काम आती रहेगी, बगिया मे पानी भी लगता रहेगा।

राधा : यह तो बहुत अच्छा विचार है तुम्हारा।

किशन : पहले सोचा था, मगल से कहू कि आओ दोनो मिल-कर पुरवाईवाले दोनो खेत मिलाकर एक अच्छा-सा बाग बना ले। फिर सोचा, उनके मगज मे यह बात बैठेगी नही।

राधा : आजकल वैसे भी वह हवा के घोडे पर सवार हैं। शहर मे कोई काम खोल रहे हैं, अपने सगो के साथ मिलकर।

किशन : किन सगो के साथ ? रघुराजसिह और छिद्दू के साथ ! अरी भाभी, ये तो अपने बाप के भी सगे नही निकले, इनके सगे कहा से निकलेगे। मुझे तो हँसी आती है, जब मै देखता हू कि लोग आखे होते हुए भी उन्हे मूद-कर चलते है। उन्हे समझाओ कि इन लोगो के फेर मे न पडे।

राधा : मेरी कौन मानता है, लाला ! मै भला किस खेत की मूली हू।

किशन : अच्छा अब मै चलू, भाभी (जाता है)।

राधा : चन्दो, मै भी चलती हू। तेरे जेठजी आ गये तो बुरा मनायेगे।

चन्दो : मैं भी जाती हू।

[दोनों जाती है। कुछ ही देर बाद गलियारे में बातें करते हुए हीरा पंडित, रघुराज और मंगल आते है]

हीरा : भई, किशनसिह ने तो ठाठ कर दिये। बारात को ऐसे बढिया ढग से खिलाया-पिलाया कि दूसरे गाववालो के आगे अपने गाव की इज्जत रख ली। लडकेवाले भी तारीफ करते नही थकते। कहते है, इतना मेल-मिलाप हमने किसी गाव मैं नही देखा। खाना-पीना तो सब जगह होता है, पर इस तरह से प्यार-प्रीत से हरेक का मिलना तो कही-कही ही देखा जाता है।

रघुराज : तुम्हे तो आदत है, बिना बात किसीकी तारीफ करने की। मै जानता हू, तुम किशन की तारीफ क्यो कर रहे हो, इस समय!

हीरा : क्या जानते हो, जी ?

रघुराज : यही कि किशन की तारीफ करके इस वक्त मगल-सिह को चिढाना चाहते हो। व्याह मे जो कुछ हुआ है वह हम सब जानते हैं।

हीरा : खाक जानते हो तुम! गये भी हो उधर, जिधर बारात ठहरी है। या घरबैठे ही ज्योतिप लगाया करते हो ?

रघुराज : क्या हुआ, थोडी-बहुत खातिर कर दी। आदमी कितने आये हैं बारात मे ? मुश्किल से बीस-पच्चीस। भला कही बीस-पच्चीस आदमियो की भी बारात होती है ?

हीरा : यह तो अपनी-अपनी समझ की बात है। मैं तो कहूगा, दोनो ने अक्लमदी की। लडकीवालो ने भी और लडके-वालो ने भी। इस महगाई के जमाने मे सैकडो की बारात

लेकर चलना अक्लमदी की बात नही है ।

रघुराज : तुमने तो कसम खा रक्खी है, किशनसिह की तारीफ करने की । कही अच्छी-सी दक्षिणा-वक्षिणा तो नही मिल गई, हीरा पडित ?

हीरा : मुह सम्भाल के बात करो, रघुराजसिह ! तुम जैसे हो, वैसा ही दूसरो को भी समझते हो ।

मंगल : इसमे बुरा मानने की क्या बात है, पडित ।

हीरा : वाह ! बुरा मानने की बात कैसे नही । तुम सब जानते हो कि मै पण्डिताई नही करता, खेती-बाडी करता हू । फिर इस तरह की बेतुकी बाते करना बदतमीजी नही तो और क्या है ।

रघुराज : अच्छा, तो बदमीजी ही सही । लो कर लो क्या करते हो !

हीरा : देख रहे हो तुम, मगल । अब यह बिना कारण ही बात को बढाये जा रहा है । इसका सब गुण्डापन निकाल के धर दूगा। बाद मे दोष मत देना ।

मंगल : आज तो बडी जवानी छा रही है । कही ज्यादा तो नही खा लिया, किशन के यहा ।

रघुराज : मै बुड्ढा समझकर लिहाज किये जा रहा हू और यह सिर पर ही चढा चला जा रहा है !

हीरा : बुड्ढा हू तो क्या, तेरे जैसे तो पाच को अब भी काफी हू । लाठी बगल मे दाबकर अकडा-अकडा फिरता है । न ठौर, न ठिकाना, आवारागर्द कही का ! जाओ, अपना

रास्ता नापो, नही तो

रघुराज : बडा घमड दिखाता है ! अगर तेरी हड्डिया न चटका दी तो मेरा नाम

हीरा : अबे कौन डरता है तेरे जैसो से । तीनसौ पैसठ मिलते है गाव-गाव मे । ले, करले मेरा जो कुछ करना है । **(ऊंचे स्वर में एक ओर देखकर)** अरे मनसुखा, लाना, जरा मेरी लाठी ।

[लोगों की उठती हुई आवाजे, आदमियों के इकट्ठे होने का शोर, भीतर से किशन का अपने चबूतरे पर आना]

किशन : क्या हुआ, हीरा काका ? क्या बात है, सबके सामने कहो । डरते क्यो हो ?

हीरा : कुछ नही, भैया । तुम सब लोग एक तरफ को हट जाओ और मेरी लाठी मुझे दे दो । मै इस पहलवान रघुराजसिह को देख लू । मगलसिह, याद रखना, तुमने आज ईमानदारी का साथ नही दिया तो अपने किये पर किसी दिन खुद पछताओगे ।

मंगल : तुम जो करना चाहो, कर लो, हीरा पडित । दिल मे कोई अरमान न रह जाय । बुला लो, अपने हिमायतियो को ।

किशन : इसमे तो हिमायती का कुछ नही है, भैया । तुम्हे मेरा आना बुरा लगा हो तो मै चला जाता हू । पर रघुराजसिह, तुम्हे बताये देता हू कि हीरा पडित की ओर आख उठाई तो तुम्हारी खैर नही है । सब पहलवानी निकाल-

कर रख दूगा । क्या बताऊ किन-किन कारणो से तुम्हारा इतना लिहाज किया है । तुम गाव के नाम पर बट्टा लगाते हो। तुम्हारा यहा रहना गाव के हित मे नही है।

रघुराज : बात तो ऐसे अकडकर कर रहे हो, जैसे गाव के मालिक तुम्ही हो ।

किशन : मै जो कुछ हू सो मै जानता हू, पर तुम्हे बता दू कि गाववाले तुम्हे अच्छा आदमी नही समझते ।

हीरा : तुम जाओ, भैया, अपना काम करो । तुम्हे और भी बहुत से काम है । ऐसे लोगो से निपटने के लिए मैं ही बहुत हू । इससे और इसके हिमायतियो से हम अच्छी तरह-से निपट लेगे, तुम जरा गोपाल को भेजते जाना । बस । **(किशन जाता है)**

मंगल : चलो, रघुराजसिह, चलो । अपनी बैठक मे चलकर बैठे । । लडाई-झगडे से क्या फायदा !

रघुराज : अच्छा, चलो । पडितजी, जरा सावधान रहना । तुम्हारी फिर किसी दिन खबर लूगा ।

हीरा : अबे जा, धमकाता किसे है ! तेरे जैसे पचासो छोकरे पढाकर छोड दिये । जब जी आवे तब आ जाना । ऐसे समझते है, जैसे पडित हीरामन ने तो हाथो मे चूड़िया पहन रक्खी है । जाओ, ओ छोकरो, अपना काम करो । **(सब जाते है, मंगल और रघुराज बैठक के चबूतरे पर आकर बैठ जाते है ।)**

मंगल : आजकल गाववाले तुम्हारे विरुद्ध कुछ ज्यादा हो गये

हैं, रघुराजसिह ।

रघुराज : देख तो मै भी यही रहा हू

मंगल : अच्छा इसीमे है कि तुम शहर चले जाओ, कुछ दिनो के लिए और अपना लकडी का काम शुरू करो । जितना भी रुपया मेरे पास है, मै उस काम मे लगा दूगा ।

रघुराज : दीखता तो यही कुछ है । अब कुछ दिनो के लिए यहां से जाना ही पडेगा । अच्छा, तुम जो कहते हो, ठीक है ।

मंगल : तो फिर कल ही शहर चले चलते है ।

तीसरा दृश्य

[स्थान : वही । मंगल चबूतरे पर बैठा बहियां देख रहा है । राधा का प्रवेश]

राधा : कुल बीस दिन रह गये है अब लडकी के ब्याह मे । न तो कुछ कपडे-लत्ते खरीदे है और न कोई गहना ही बनवाया है । आखिर यह सब कब बनेगा ।

मंगल : अरी, तो क्या बीस दिन कम होते है !

राधा : कम तो नही होते, पर पैसा भी तो लौट रहा हो । अच्छा-भला घर मे पडा था रुपया, निकालकर उस निगोड़े को दे दिया । मै कहती ही रही, पर मेरी कौन सुनता है ! मैं तो जैसे इस घर मे कुछ हू ही नही !

मंगल : कौन-सा तेरा रुपया मारा जा रहा है वहा ! जब दूना

होकर आयगा तब पता लगेगा ।

राधा : आ लिया दूना होकर । मुझे तो यह भी लौटता नहीं दीखता, तुम दूने की बात कहते हो ।

मंगल : क्यो ? कहा चला जायगा ? कल ही जाकर ले आऊगा उससे ।

राधा : महीनेभर से यही कल-कल सुनती आ रही हूं । राम जाने वह तुम्हारी कल कब आयेगी । तुम मागने जाते होगे, 'भैया-भैया' कहकर वह कोई बहाना बना देता होगा । तुम लौट आते होगे । तुम्हारे पैसे से यह छिद्दा-विद्दा सभी शहर मे जाकर रघुराजसिह के पास मजे उड़ा रहे है । सुनती हू, रोज शराब पीते है, जुआ खेलते हैं और भी जो बुरे ऐब है, सब करते है ।

मंगल : तुझे घरबैठे इन सब बातो का पता चल जाता है ! हम तो कुछ जानते नही !

राधा : जानते भी होगे तो जान-बूझकर आखे मूदे रहते होगे । मुझे तो कुछ-कुछ तुमपर भी सन्देह है ।

मंगल : **(गुस्से से)** रधिया, होश से बाते कर । कैची की तरह जीभ चलाना ठीक नही ।

राधा : जिसके घर मे लड़की ब्याहने को बैठी हो, उससे ऐसे समय होश की बातो की आशा नही करनी चाहिए । दूसरे लोग पाच-छ महीने पहले से ही सारा सामान जुटा लेते है, और यहा रह गये है गिनती के बीस दिन । तुम-ने तो अपनी घोलकर पी ली है ! जाओ, अभी जाओ

और शहर जाकर उससे रुपये लेकर आओ, नही तो मैं सिर पटक-पटककर जान दे दूगी। लडकी का ब्याह करना है, हँसी-खेल नही है। मै तुम्हे अब भी कहती हू कि मुझे तो उसकी नीयत पर सन्देह है।

मगल: लगता है, रघुराजसिह के विरुद्ध किशन और हीरा पडित ने तुम्हे खूब भरा है। एक दिन तुम्हे अपने-आप पता लग जायगा कि कौन बुरा है, कौन भला।

राधा: हा-हां, देख लेना, एक दिन तुम न पछताये तो मुझसे कहना। तुम्हे तो आदमी परखना भी नही आता।

मगल: अच्छा बाबा, मुझे नही, तुम्हें तो आता है। जब कोई ऐसी-वैसी बात होगी तब कहना, अभी से मेरा सिर क्यो खाये जा रही है।

[नैपथ्य मे घोड़े की टाप। घोडा आकर रुकता है। तभी रगमच पर घबराये हुए रामू का प्रवेश]

रामू: बापू, ओ बापू, गजब हो गया, गजब हो गया, बापू!

मगल: क्या हुआ?

रामू: हमारे शहरवाले लकडी के कारखाने मे आग लग गई।

मगल: है, क्या कहा!

राधा: हाय राम, हम लुट गये!

मगल: कुछ बचा या

रामू: कुछ नही, बापू। सबकुछ जलकर राख हो गया

मंगल: रघुराजसिह कहा है?

रामू: वही है, शहर मे, पर कल वह कारखाने मे नही सोये

थे। मेरे पास दुकान पर आ गये थे। जब कारखाने मे आग लगी तो बडा शोर मचा, मैंने उन्हे बहुत जगाया, पर वह उठे नही। रात उन्होने बहुत शराब पी रखी थी। लोग कहते है, यह आग उन्होने ही लगवाई है। दो रातो से वह लगातार कारखाने से तैयार माल निकालकर बाहर भेजते रहे। पता नही, वह माल कहा भेजा है उन्होने ? जब वह उठे तो पूछने पर बोले—जलकर सबकुछ खाक होगया। कुछ भी नही था उसके बाहर। उन्हे आग लगने का मलाल नही मालूम होता, बल्कि वे अपनी चीजो का रोना लेकर बैठे हुए है। कहते है, रुपये-पैसे भी वही एक लकडी की अल्मारी मे रखे हुए थे।

राधा हाय राम ! हमारा सबकुछ लुट गया। मैं तो पहले ही कहती थी कि ऐसे कमीनो के साथ मिलकर काम मत करो। एक दिन तुम्हे जरूर धोखा दे जायगे। पर यहा मेरी कौन सुनता है।

मंगल : अरी,चुप भी रह। मै शहर जाकर देखता हू, आखिर मामला क्या है। इस तरह आसू बहाने से तो कुछ नही होने का।

राधा : हे भगवान, अब क्या होगा !

रामू : बापू, उनकी बातो से साफ मक्कारी टपकती थी। छिद्दा वगैरा सबेरे आये। कहने लगे, बुरा हुआ। मुझे देखकर साथ-साथ मुस्कराते भी जाते थे। आपस मे एक-दूसरे से मजाक कर रहे थे। मेरा जी जला जा रहा था, उनकी

बाते सुन-सुनकर। उनकी बातो से पता चल रहा था की वे सब जल्दी ही इस शहर को छोड देगे।

राधा मै तो सबकुछ पहले से ही जानती थी।

मंगल रामू, घोडो को पानी-वानी पिला ले। चल, शहर चलकर देखे, आखिर बात क्या है। राधा, तुम बेकार का शोर न मचाना। सारे गाव मे इस कहानी को फैलाने की कोई जरूरत नही है।

राधा बात तो ऐसे करते हो, जैसे गाववालो से यह बात छिपी ही रहेगी। **(दोनो जाते है)**

चौथा दृश्य

[स्थान वही। किशन अपनी चौपाल पर बैठा है।]

हीरा किशन भैया! आखिर वही हुआ, जिसकी तुम्हे उम्मीद थी।

किशन राम-राम, पण्डितजी! **(ऊचे स्वर मे)** चन्दो, हीरा पंडित आये ह। जरा कुछ खाने को हो तो ले आओ। पानी भी लाना। मै भी प्यासा हू। हा, अब कहो, आखिर बात क्या है?

हीरा मगलसिहवाले लकडी के कारखाने मे आग लग गई।

किशन है! कैसे? अपने-आप?

हीरा मै आज शहर गया हुआ था। वही वह मिल गये। सुबह ही गये थे। सारी छानबीन के बाद मालूम हुआ है कि रघुराजसिह ने यह आग अपने आदमियो से लगवाई है

और वे सब यह शहर भी छोड गये। रामू इधर कहने आया, उधर वे सब रफूचक्कर हो गये।

किशन : मगल कहा है ? चन्दो, इधर आना, जरा जल्दी।

हीरा : पुलिस मे रिपार्ट दर्ज कराके गाव आ गये हैं। बेचारे बडे परेशान थे। इधर सिर पर बेटी का ब्याह है, उधर नई आफत आ गई। मुझसे बाते करते आये सारे रास्ते। बोले, भैया, कल समधी के यहा जाऊगा। लडकी के ब्याह से इकार कर दूगा। इसके सिवाय और कोई चारा ही नही दीखता। जो कुछ था सबकुछ इसीमे लगा दिया था। **(चंदो आती है)**

चंदो क्यों ? क्या कहते हो ?

किशन सुनती है, मगल के साथ कैसी बुरी बीती है !

चंदो मै सबकुछ जानती हू। मुझे सबकुछ बता दिया था, भाभी ने। मै अभी कुछ देर पहले वही से आ रही हू।

किशन पर हीरा पडित तो और भी बुरी बात कह रहे है। वह सीता का ब्याह हटा रहे है।

चंदो इसके अलावा और चारा ही क्या है। अब तुम्ही बताओ, करे तो बेचारे क्या करे ! उन्होने तो शादी के नाम पर कुछ भी नही बनवाया। अब शादी के दिन ही कितने रह गये है। वह कल ही लडकेवालो के यहा जा रहे है। कोशिश करेंगे, ब्याह दो साल पीछे हट जाय। नही हटा तो फिर मना कर आयेगे। भाभी आज सारा दिन रोती रही है। उनकी आंखे सूज गई है। मैंने बहुत दिलासा

दिलाया पर जबानी जमा-खर्च से कही धीरज बधता है !

किशन · कुछ भी हो, भाई ! अब आपस की लडाई नही चल सकती । खान्दान का सवाल है, फिर गाव की बात है ! मै चौधरी से इस बारे मे बात करूगा । रघुराज के पीछे वह सबके दुश्मन बने हुए थे । उस दिन हीरा पडित से वह रघुराज की ओर से न बोलते तो रघुराज की मस्ती वही झाड दी जाती और वह इस आफत मे पडने से भी बच जाते ।

चदो भाभी कहती थी कि मुझे रुपये जाने का तो कोई मलाल नही है । अच्छा हुआ, इन्हे किसी तरह सबक तो मिला, पर लडकी का ब्याह सिर पर है, इसकी चिन्ता है ।

हीरा : मगलसिह ने भी इन लोगो के पीछे हरेक से दुश्मनी मोल ले रक्खी थी । उस दिन झगडा रघुराज से था, बीच मे वह पड गये ।

किशन कुछ भी हो पडित, पुराने झगडो को कुए मे डालो । इस वक्त की बात करो । गाव के एक आदमी पर आफत आ जाय तो गाववालो का क्या फर्ज हो जाता है । वही हमे करना है ।

हीरा : तुम ठीक कहते हो, भैया । मै तो सारे रास्ते बडे प्यार से उनसे बात करता आया । उनसे मेरी कोई दुश्मनी थोडे ही है । तुम जो कहोगे, मैं करने को तैयार हू । जिस तरह की भी सहायता वह चाहे, मैं दूगा । पर सवाल यह है कि वह गाववालो की मदद लेगे ?

किशन ' उन्हे इन्कार करने का क्या हक है ? बेटिया किसी एक की नही, सबकी होती है। फिर, हीरा पडित, तुम्हारी दया से इतना पैसा तो है ही कि सीता का ब्याह कर सकू ।

चन्दो न हो तो तुम उनसे मिल ही देखो ।

किशन कहती तो ठीक हो । अच्छा, अभी जाता हू । आओ, पडित ।

[**मगलसिह के घर के दरवाजे को जाकर खटखटाते है, मंगलसिह बाहर आता है**]

मगल : कौन, किशनसिह ?

किशन : एक गाववाले की हैसियत से आया हू । दो मिनट बात करनी है ।

मंगल : आओ, बैठो । अरी रधिया, रामू से कहना, जरा हुक्का ताजा करके दे जाय, किशनसिह आया है । कहो, कैसे आना हुआ ? हमारे साथ जो बीती है, वह तो तुमने सुनी ही होगी ?

किशन वही सब सुनकर तो आया हूं । जो हो गया, उसपर आसू बहाने से काम नही चलेगा । सुना है, तुम सीता के ब्याह के लिए समधियो से मना करने जा रहे हो !

मगल : हा, जा तो रहा हू ।

किशन : यह नही हो सकता । मेरे होते हुए लडकी की शादी नही रुकेगी ।

मंगल : यह कैसे हो सकता है ! क्या मै अपनी जग-हँसाई

करवाऊ ? मेरी तुम्हारी आजतक दुश्मनी रही और अब एकदम आफत पडने पर मै तुम्हारे आगे झुक जाऊ !

किशन : इसमे झुकने की कोई बात नही। आप मुझसे जिदगी-भर मत बोलिये। और भी जो सजा देनी हो दे लीजिये, पर मुझपर ऐसा अत्याचार मत कीजिये, जो मुझसे सहा न जाय। बच्चे सबके एक-से है।

[इतने मे रामू हुक्का भरकर लाता है]

रामू . राम-राम, काका।

किशन . जियो भैया। जा रामू, तू अपना काम कर। (**रामू जाता है**) मुसीबत के वक्त अगर आदमी आदमी का साथ न दे तो कब देगा ! फिर सीधी बात है, भैया, सह-योग के बिना जिन्दगी चल कैसे सकती है ! आज मैं आपको आपके काम मे मदद दे रहा हू, कल आप किसी और को देगे।

मगल : बात यह है कि मै कर्ज लेने के हक मे नही हू।

किशन : राम-राम ! मै और तुम्हे कर्ज दूगा ! और सो भी बेटी के व्याह के लिए ! मै सीता का व्याह करूगा, अपने-आप। तुम न जाओ, मै जाऊगा समधियो के यहा। वे दोनो भाई मेरे साथ पढे है, कुछ तो गये का लिहाज करेगे !

मगल : तुम उनसे क्या कहोगे ?

किशन : कहूगा कि बरात जितनी कम ला सके, अच्छा है। जिन्दगी सारी पडी है, लडकी को देने के लिए।

मगल : अरी रधिया, सुनती हो किशन क्या कहता है ?

राधा : मै सब सुन रही हू । देवरजी ठीक कहते है ।

मंगल : तुम जो करना चाहो, तुम्हारी इच्छा । थोडी देर पहले नम्बरदार आये थे । हीरा पडित आये थे । वह भी कहते थे कि सीता की शादी तो होगी ही । किशन भैया, तुम सबके सामने मै एक अपराधी मालूम होता हू ।

किशन : क्यो लज्जित करते हो, भैया । अच्छा, मै अभी गाडी जोडकर लाता हू । तुम दोनो नाश्ता करके तैयार हो जाओ । मैं चन्दो को भी लेता आऊगा । आज ही शहर चलकर कुछ कपडा-लत्ता खरीद लावेगे ।

मगल : जैसी तुम्हारी मर्जी । **(राधा बाहर रंगमच पर आती है)**

राधा : इसे कहते है भाई । दिल मे कसक उठी तो आया भागा-भागा । और इसे कहते है सहयोग । गाव के मुखिया दो-दो बार हो गये । मै समझती हू, तुम्हारी लडकी का व्याह बहुत अच्छे ढग से होगा ।

किशन : तुमने भी तो लक्ष्मी के व्याह मे भैया से छिपाकर लक्ष्मी को बहुत-कुछ दिया था, भाभी ।

राधा : क्या दिया था ! वह तो कुछ भी नही था, लाला !

किशन : समय पर इतनी ही मदद काफी होती है, भाभी । सहयोग के बल पर ही दुनिया चलती है । अच्छा, अब शहर चलने की तयारी करो । मै अभी आया । **(जाता है)**

[**पटाक्षेप**]

: ६ :

हमारा कर्त्तव्य

पात्र

हरनामसिह	एक समृद्ध किसान
कालू (कल्याणसिह)	हरनामसिह का पुत्र
रामो	हरनामसिह की पत्नी
रूपसिह	अन्य किसान
नाहरसिह	अन्य किसान
विजयपालसिह	अन्य किसान
भोपालसिह	अन्य किसान

पहला दृश्य

[हरनामसिह और उसका पुत्र कल्याणसिह (कालू) अपने खेतो की मेड़ बना रहे है। नैपथ्य से रहट चलने की आवाज आ रही है]

कालू · (पसीना पोछते हुए) काका, अब तो बस करो। शरीर पसीने से तरबतर हो गया है। देखते नही हो, धूप कितनी चढ आई है।

हरनामसिह : अरे, धूप से भी कही डरते है! यह धूप तो कुछ भी नही है, बेटा। हमने भयकर लू-भरी दोपहरियो मे काम किया है। पसीने की जगह शरीर से तेल निकलने

लगता था। न जाने आजकल के छोकरो को क्या हो गया है ! दस फावडे मारे नही कि हाफने लगे। कहने लगते है, मेरा जिस्म टूट गया। मेरे हाथ थक गये। हमने अपने बाप-दादा की कहानिया सुनी है। सोचता हू कि वे कैसे जवान होगे, जिन्होने इस बजर भूमि को हरियाली से लाद दिया था ! फावडा मारते थे तो धरती कापती थी ! हमारा ही जमाना ले लो, सुबह से शाम तक काम करते रहते, थकावट नही व्यापती, और जिस दिन काम न करो, ऐसे लगता है, जैसे शरीर टूटता हो।

कालू . पर काका, अपने तो अजर-पजर ढीले हो गये है। अपने बस का तो यह काम है नही। मै तो सोचता हू, काका, शहर मे जाकर कोई नौकरी कर लू।

हरनाम (**क्रोध**) क्या कहता है रे ! शरम नही आई तुझे यह सब कहते हुए ! जिस दिन किसान का बेटा नौकरी करेगा, धरती सूख न जायगी उस जिन ! हल कौन चलायेगा ? अन्न कौन पैदा करेगा ? दुनिया खायेगी कहा से ?

कालू : तुम्हारी बाते भी बडी अजीब होती है, काका। देखते हो, छिद्दू कहार के लडके शहर गये थे। कल ही लौटे है दो-तीन साल के बाद। चाय का काम करते थे, इतना सारा पैसा कमा के लाये है !

हरनाम : तुझे कहते हुए लाज नही आई रे, कालू। कहा कहार के लडके और कहा तू किसान का लडका ! पैसा ही

तो जिन्दगी मे सबकुछ नही है। धरती की गोद मे पलने-वाला दूसरो के जूठे टुकडो पर पले ! धरती की सेवा कर, देख धरती तुझे कितना पैसा देती है, सोने की तरह अन्न उगलती है कि नही। पूरी ताकत से हल चला। खेतो को पानी दे, इनके चारो ओर मेड बना, देख खेत सोना उगलते है कि नही। मेहनत के बिना तो दुनिया मे कुछ भी नही होता, बेटा। मुझे पता होता कि तू इतना काम-चोर हो जायगा तो तुझे तेरे मामू के यहा कभी भी न भेजता।

कालू काम तो कर रहा हू, काका। आप यह तो नही कह सकते कि मै कामचोर हू। अपनी-अपनी बात है। मामू काम ही नही करने देते थे। वह कहते थे, कुछ पढ ले, बेटा, जिन्दगी मे काम आयेगा ! वहा मामू की आज्ञा सिर माथे, यहा आपकी। वहा मामू का राज था, यहा आपका। हम तो जो कहोगे वही करेगे। मामू सोचते थे कि छोरा पढ-लिखकर होशियार हो जाय।

हरनाम : वह तो ठीक है, बेटा। आज की दुनिया मे पढाई-लिखाई की किसान को बडी जरूरत है, पर पढाई-लिखाई यह तो नही कहती कि आदमी अपने घर का काम-काज भी छोड दे। अब देख, तूने जितनी देर मे इतनी मेड बनाई है, मैने उससे चौगुनी बना ली है।

कालू · अभ्यास की बात भी तो होती है, काका। कुछ ही दिनो मे देखना, तुम्हारे बराबर काम करता हू कि नही।

हरनाम : (खुश होकर) अरे, सो तो मैं जानता हू कि आखिर तू बेटा किसका है ! पचास बरस का हो गया हू तो क्या, किसी अच्छे-भले जवान के चाटा जमा दू तो वही ढेर हो जाय ! **(थपकी देकर)** अच्छा चल, थोडा-सा काम और कर ले। तेरी मा रोटी लाती होगी, फिर बैठकर खायेगे। यह एक मेड तबतक पूरी हो जायगी।

कालू : खेतो के आस-पास यह मेड और बाध बनाने का फायदा क्या है, काका ?

हरनाम : अरे, वाह ! तू किसान होकर इतना भी नही जानता ! बेटे, खेतो के आसपास मेड बनाने से उनकी बडी रक्षा होती है। अब आगे बरसात आ रही है। बारिश का जो पानी इन खेतो मे से होकर गुजर जाता है वह खादवाली ऊपर की बढिया मिट्टी को बहाकर ले जाता है। खेत को बेडौल कर देता है। खेत के आस-पास यह चौकोर बाध बनने से अब ऐसा नही हो सकेगा। वह पानी यही रुक जायगा और जमीन को तर रखेगा। फसल अच्छी होगी। हरेक खेत के आस-पास मेड होने से किसी भी खेत की खाद दूसरे खेत मे नही जायगी। धारा के रूप मे पानी के न बहने से खेतो की समतल धरती मे गड्ढे भी नही पडेगे। यह जो पास का बरसाती नाला है न, बिल्कुल सूखा-सा

कालू : वही जो हरीसिह के खेतो मे से होकर बहता है।

हरनाम : हा वही, वहा की सारी धरती पहले उपजाऊ थी।

खेतो मे मेड न होने से हर बरसात मे पानी नाले का रूप धारण करके बहता रहा ।

कालू : पर काका, अब उसके आस-पास मेड बनाकर उस धरती को खेतो मे शामिल क्यो नही कर लिया जाता ?

हरनाम : अरे, नही बेटे, उसके ऊपर की सारी बढिया मिट्टी बह गई है । अब उसमे रेतीली मिट्टी आ रही है और फिर बहुत बडे-बडे गढे भी पड गये है । चौदह-पन्द्रह साल से तो मैं ही उसे देख रहा हू । दूसरे, मौसम मे कुछ बो भी दिया तो वह ज्यादा फलता-फूलता नही है ।

कालू : तब तो, काका, बरसात से पहले-पहल हमे अपने सभी खेतो के बाध ठीक करने होगे ।

हरनाम : हा रे, और इसके साथ-ही-साथ घर और चौपाल के छप्पर भी बनाने है, बेटा ! मैं सोच रहा हू कि तेरे लिए एक बढिया-सी चौपाल बनवा दू । वहा बैठे-बैठे अपनी पढाई करते रहना ।

कालू : तब तो बहुत काम करने को पडा है, काका !

हरनाम : हा, पर ऐसी घबराने की कोई बात नही है ! इसी खेत की नये सिरे से मेड बनानी है । बाकी की तो बस कुछ मरम्मत ही करनी है ।

कालू : पछाहवाले खेत का भी तो बुरा हाल है, काका । आप ही तो कल मा से कह रहे थे ।

हरनाम : हा, पर क्या हुआ, वह खेत भी तीन-चार दिन की मार है, फिर सब हल्के-हल्के काम है । निराई करना

और पानी देना ही तो बाकी रह जायगा ।

कालू : काका, रहट चलाने का काम मै अपने जिम्मे लूगा । मामा के यहा भी मै पढकर आता था तो अपनी किताब लेकर रहट की गद्दी पर बैठा-बैठा पढता रहता था ।

हरनाम : हा-हा, ठीक है, बहुत अच्छी बात है, एक पथ दो काज ।

कालू : एक बात कहू, काका । बहुत दिनो से कहना चाह रहा था, पर कुछ झिझक-सा रहा था ।

हरनाम : **(हँसकर)** हा-हा, कह । मुझसे नही कहेगा तो और किससे कहेगा । तेरे दु ख-सुख का साझीदार मैं और मेरे सुख-दु ख का साझीदार तू ।

कालू : मुझे एक अखबार मगवा दो, काका । घर बैठा-बैठा दुनियाभर के समाचार बाचता रहूगा । मामा के यहा रोज पढने से आदत-सी बन गई है ।

हरनाम हा-हा, पर इसमे झिझकने की क्या बात थी, रे ! मै तो खुद ही पहले से यह सोच रहा था, पर सोचा कि हम इतने पढे-लिखे नही है । दुनिया मे हो रही बडी-बडी बातो को क्या समझेगे ! पर अब तो तू सबकुछ समझा दिया करेगा । **(सोचकर)** क्यो रे कालू, क्या मै इस उमर मे भी और पढ सकता हू ।

कालू : क्यो नही, काका । आप जैसे मेहनती आदमी के लिए दुनिया मे कौन-सी बात मुश्किल है ।

हरनाम : तो ठीक है, हम भी कुछ और पढेगे । **(एक ओर**

देखकर) लो, वह तेरी मा आ रही है। बातो-ही-बातो मे हमने कितना काम कर लिया है।

कालू : हा, तो काका। हम मेहनत करे तो हमारी धरती सोना उगल सकती है ?

हरनाम : हा बेटा, वडे-बूढो का कहना है कि मेहनत करने से बालू से भी तेल निकल सकता है।

[एक ओर से रामो और दूसरी ओर से रूपसिह आता है]

हरनाम सुनाओ, रूपसिह ! क्या हाल-चाल है ?

रूपसिह : सब आपकी दुआ है, काका। कितनी बना ली मेड ? कल्याणसिह को भी लगा लिया साथ।

हरनाम और क्या भैया, किसान का बेटा है, खेती का काम नही सीखेगा तो कैसे काम चलेगा !

रूपसिह : सो तो है ही, पर अभी इसे और पढाते तो ठीक रहता।

हरनाम : सोच तो मैं भी रहा हू, भैया। आगे रामजी की मर्जी। क्यो रामो, तेरा क्या विचार है ?

रामो : मैं क्या कहू, अपने आगे तुम किसीकी सुनते थोडे ही हो। चादर देखकर पाव फैलाओ। और क्या करेगा पढ-लिखकर।

हरनाम पढा-लिखा किसान बनेगा, नये-नये ढग से खेती करेगा। आज की दुनिया मे हर काम के लिए पढे-लिखे आदमी की जरूरत है।

रामो : **(व्यग से)** तो खुद भी किसी स्कूल मे दाखिल हो

जाओ न ?

हरनाम : हा-हा, सो तो करूगा ही। कालू से अभी यही बाते कर रहा था, कुछ देर पहले। पचायत ने बच्चो के लिए तो स्कूल खोला ही है। अब एक रात की पाठशाला बूढो के लिए भी खोल दे। जो-जो फुरसत पायेगा और जिसकी तबीयत होगी, पढ आयेगा वहा जाकर।

रूपसिह . यह तो बडा उत्तम विचार है, काका। मै भी कुछ पढने की सोचता हू।

रामो हा, तुम और तुम्हारे काका यही तो दो अच्छे विचार-वाले है न इस गाव मे।

हरनाम अरे भई, गुस्सा क्यो होती हो। तुम भी पढ लिया करना। तुम्हारे लिए भी पाठशाला खुलवा देगे **(तीनो हँसते है)**।

रामो तो मै बूढी अब पढने बैठूगी ?

हरनाम : कौन कहता है कि तू बूढी होगई है। **(तीनो हँसते है)**

रामो : शरम तो नही आती। सुनो, मेरी बात मानो तो एक बात कहू।

हरनाम : आजतक मैने तुम्हारी कौन-सी बात नही मानी, भला बताओ तो सही।

रामो : (धीमी आवाज मे) हाय राम, कैसी बाते करते हो छोरो के सामने **(ऊंचे स्वर में)** मै कहू, इसका व्याह कर डालो, कालू का। कल ही मुझे नम्बरदार की बहू कह

रही थी उसकी भानजी ब्याह के लायक होगई है। सुना है, बडी खूबसूरत है वह छोरी।

हरनाम : रहने दे, रहने दे। औरतो के पास इसके सिवाय और कोई बात होती ही नही। फलाने का लडका ब्याहने जोग, फलाने की लडकी जवान !

रामो : व्याह न करोगे तो सारी उमर इसे कुवारा ही बिठाये रक्खोगे। घर मे वहू आयेगी तो मै भी कुछ चैन की सास लूगी।

हरनाम : "चैन की सास" तो ऐसे कह रही हो, जैसे जिन्दगी-भर फावडा चलाती आई हो।,

रामो : कहते हुए लाज भी नही आती। पच्चीस साल होने आये तुम्हारे साथ व्याह हुए। खुद ही सोचो, कभी हाथ-पर-हाथ रखकर बैठे देखा। सुबह से शाम तक मशीन की तरह काम करती हू। पाच सेर अनाज पीसा है, सबेरे ही। पीसो तो जानू। हाथो मे छाले न पड जाय तो मुझे कहना ! बडी फावडे की हेकडी दिखाते है।

रूपसिह : काकी, असल मे काका समझते नही कि औरतो को कितनी मेहनत करनी पडती है, अपने काम मे।

कालू : **(रोटी खाते हुए)** अरी अम्मा, क्या आज कही से मिर्चे उधार लाकर डाली है, दाल मे।

हरनाम : अरे, नही रे, इतनी वात भी नही समझता। तेरी मा ने सोचा होगा, रोटी रहट के पास वैठ के खायेगे। मिर्चे लगेगी तो पानी पीते जायगे। जब पानी का इतना

इन्तज़ाम है तो मिर्चे क्या कर लेगी।

रामो : तुम्हारी तो आदत है, हर बात की हँसी उडाना। क्या हुआ, जो बच्ची से मिर्चे कुछ ज्यादा पड गई। **(लोटे से पानी देती है)** अरे हा, एक बात मै कहना भूल गई थी। तुम्हे पता है न, विजयपालसिह की चौपाल मे आज रात को पचायत हो रही है।

रूपसिह : काका को न पता होगा तो और किसे होगा। काका खुद भी तो पचो मे है। वैसे ज्यादती तो भोपालसिह की है, काका। बिना बारी के नहर का पानी काटकर अपने खेत मे दे दिया।

हरनाम : भैया! जब लोग जानते हुए भी ऐसा करते है तो क्या किया जाय?

रूपसिह : किया क्या जाय! भरी पचायत मे पहले तो मारो सौ जूते और फिर पिलाओ हुक्के का पानी! तब देखो, अकल ठिकाने आती है कि नही।

हरनाम : इससे कुछ भी नही होने का, रूपा। जबतक हम लोग अपना-अपना कर्त्तव्य नही पहचानेगे तबतक हमारा उद्धार होना मुश्किल है। पच की बात मानना तो अलग, लोग समझते हैं कि बूढा सठिया गया है।

रूपसिह : राम-राम, कैसी बात करते हो, काका। किसमे इतनी ताब है कि पचपरमेश्वर की बात टाल सके!

हरनाम : मै तो समझता हू कि सबको मिलकर सामूहिक रूप से खेती करनी चाहिए, फिर देखेंगे, कौन कितने पानी मे

है । तू शाम को तो होगा ही वहा पचायत मे । इस सवाल को जरा उठाना ।

रूपसिह : पर मै तो वहा उस समय नही होऊगा ।

हरनाम : क्यो, कौन-सा ऐसा काम आ पडा है तुझे ? जब सारा गाव वहा होगा तो तू घर बैठा क्या करेगा ?

रूपसिह : नही काका, मैं वहा कभी नही जाने का । मेरी और विजयपालसिह की बडी पुरानी दुश्मनी है । मै कभी भी उसकी चौपाल पर पैर नही रखने का ।

रामो : ठीक तो कह रहा है रूपा । पर इन्हे तो अपनी इज्जत का रत्तीभर भी ध्यान नही है । वही विजयपालसिह है न, जिससे दो साल पहले तुम्हारी लाठिया चल चुकी है । शरम न आयेगी तुम्हे उसकी चौपाल पर जाते ? किस मुह से जाओगे वहा ?

हरनाम (मूछो पर ताव देता हुआ) इसी मुह से जाऊगा । तुम दोनो के तो दिमाग खराब हो गये है । जरा-जरा-सी बात को खीचने की तुम्हारी आदत है । अभी तक दुश्मनी की बू तुम्हारे दिल मे पडी सड रही है ! मै तो, भई, जो बात हो, मुह पर कह लेता हू और जो उस वक्त होता है, कर लेता हू । दुश्मनी पालने को मेरे पास समय नही है और फिर मै कोन-सा हरनामसिह की हैसियत से जा रहा हू । मैं तो एक पच हू और पच को जहा गाववालो की आज्ञा होगी वही पहुचेगा ।

रूपसिह · पर मै वहा नही आने का, काका ! तुम्हे बताये

देता हू ।

हरनाम : (हँसते हैं) हा रे बेटा, तेरे तो फरिश्तो को भी आना पड़ेगा । जब पंचपरमेश्वर गवाही के लिए तुझे बुलायेंगे तो क्या तू नांही कर देगा । भई, अपनी ये दुश्मनिया अब हम लोगो को छोडनी ही पडेगी । मै आज पचायत मे इस मसले पर भी बात करूगा । एक गाव के रहने-वाले आपस मे बरसो न बोले, कितना बुरा लगता है !

रामो : तुम्हारी बाते मेरी समझ मे तो कुछ आती नही । न जाने क्या ऊट-पटाग बोलते रहते हो ?

हरनाम : तेरा इसमे कोई दोष नही है । तेरी अकल ही मोटी है । पर धीरे-धीरे सबकुछ समझ मे आ जायगा । हा, देख, शाम की रोटी जरा जल्दी बना लेना । अरे रूपा, जरा हुक्का ताजा कर ; यार, एक-आध दम मार ले, फिर काम पर लगे ।

रूपसिह : वहीं रहट पर ही चलो न, काका । वही तुम्हे हुक्का पिलायेंगे ।

हरनाम : तो चलो, भाई, पानी भी वही का पियेगे । चलो, कालू, चल रामो ।

[**सब जाते हैं**]

दूसरा दृश्य

[**विजयपालसिह की चौपाल के बाहर मैदान में पंचायत हो रही है । बहुत-से लोग बैठे हैं ।**]

नाहरसिंह : भाइयो, सब अपनी-अपनी जगह पर बैठ जाओ। अब पचायत अपना काम शुरू करती है। हमे वडे दुःख के साथ कहना पडता है कि हमारी दो साल की कोशिशो के बावजूद लोग अपना-अपना कर्त्तव्य नही पहचान सके। हमारी पचायत को हम सबसे यह आशा थी कि हम अपने गाव को एक आदर्श गाव बनाकर दिखायेगे। पर हम देखते हैं, लोग जहा थे, वही है—वही झूठ, वही मक्कारी, वही ठगी और वही फरेब। समझ मे नही आता कि इन सबसे हमारा छुटकारा कब होगा ? अब भी गाव मे ऐसे लोग है, जो एक-दूसरे से नही बोलते, बल्कि एक-दूसरे की जान के गाहक है और इधर हम सारे गाव को एक कुनबा बनाने का सपना देख रहे है।

हरनाम : (बात काटते हुए) नम्बरदार, मै भी कुछ कहना चाहता हू।

नाहरसिंह जरूर-जरूर।

हरनाम भाइयो, मै देख रहा हू कि इस पचायत मे गाव के सभी लोग हाजिर नही है। कुछके न आने का कारण तो यह है कि भोपालसिंह उनका दोस्त है और पचायत भोपालसिंह पर जो दण्ड लगायेगी उससे वह सहमत नही हो पायेगे—जैसे कि पदमसिंह। और कुछ इसलिए नही आये कि यह पचायत विजयपालसिंह की चौपाल पर हो रही और उनकी विजयपाल से दुश्मनी है। ऐसो मे से है रूपसिंह। मै सरपच से प्रार्थना करूगा कि ऐसो को उनके

घरो से बुलवाये ।

नाहरसिह मै चौधरी हरनामसिह की बात से पूरी तरह सहमत हू, पचायत की यह आज्ञा थी कि सबको यहा उपस्थित होना चाहिए और जिन्होने इस आज्ञा की अवहेलना की है, उन्होने खुद मे एक बडा अपराध किया है। कल्याणसिह, जाना बेटा, पदमसिह और रूपसिह को बुला लाओ। अब भाइओ, तुम अपनी आखो से ही देख लो, हम लोगो के हृदय एक-दूसरे के लिए कितने उदार हुए है। मै कहता हू, पुरानी दुश्मनिया छोडकर हम लोगो को अपने-आप एक-दूसरे से गले मिल जाना चाहिए ।

विजयपालसिह : (उठते हुए) पचो और भाइयो, मुझसे कुछ लोगो ने कल कहा था कि चौधरी हरनामसिह कल तुम्हारी बैठक पर आने के नही है, क्योकि दो साल पहले सभीको मालूम है कि मुझमे और उनमे कुछ झगडा हो गया था, जिसमे लाठिया चलने तक की नौबत आ गई थी। मै कल ही से सोच रहा था कि पचायत मे एक पच को भी आने मे अडचन हो तो मुझे अपनी चौपाल पर पचायत नही बुलानी चाहिए । पर हरनामसिहजी ने अपनी उदारता का परिचय देकर हम सभी लोगो के सामने एक सुन्दर उदाहरण रखा है कि पुराना बैर-भाव भूलकर यहापर पधारे है। मैं और मेरे परिवारवाले उनकी इस नई मित्रता का खुले हृदय से स्वागत करते है ।

[लोगो मे खुशी की लहर दौड़ जाती है। उल्लास में

'बहुत सुन्दर', 'बहुत सुन्दर' की आवाजें]

नाहरसिह : इसे कहते है जिन्दादिली ! मै दोनो से प्रार्थना करूगा कि भरी सभा मे दोनो एक-दूसरे के गले लग जाय। अरे, इलायची और मिसरी निकाल के लाना। भई, हुक्के भी ताजे करके लाना। आज पचायत का श्रीगणेश बडे शुभ काम से हुआ है। **(दोनो उठकर एक-दूसरे के गले मिलते है, 'पचायतराज की जय', 'पच-परमेश्वर की जय')** असल मे हमे इन दोनो की दुश्मनी बडी अखर रही थी।

कालू : ताऊ, मै इन्हे ले आया हू। **(रूपसिह आता है)**

नाहरसिह . लगे हाथ यह भी हो जाय, भैया। रूपसिह, तुमने अपनी आखो से सबकुछ देख ही लिया होगा। तो मेरा विचार है कि मिल जाओ विजयपाल की बाहो मे बाहे डालकर एक-दूसरे से।

रूपसिह : नम्बरदार, मैने यहा न आकर गलती की। मैं अपनी गलती के लिए भरी पचायत मे क्षमा मागता हू। बाप-दादा की दुश्मनी को भुलाकर विजयपालसिहजी को अपना बडा भाई समझूगा। **(गले मिलते हैं)**

हरनामसिह : जुग-जुग जियो, जुग-जुग जियो। अरे, रूपा, तूने तो हम सबको मात कर दिया।

रूपसिह : काका, तुम्हारी कही बात मै सारे दिन सोचता रहा। मुझे लगा कि काका ठीक कहते हैं। एक गाव मे रहकर एक-दूसरे से न बोलना कोई अच्छी बात थोडे

ही है । मैं आ ही रहा था कि इतने मे कल्याणसिह मिल गये ।

हरनाम : तभी तो मुझे अचरज हो रहा था कि इतनी जल्दी कैसे आ गये !

नाहरसिंह : **(हुक्के का कश खीचते हुए)** हा, तो अब हम लोग असली बात पर आ जाय । **(हुक्के का कश)** विजयपालसिहजी ! तमाखू बहुत बढिया डाला है चिलम मे । मजा आ गया ! कहा से मगवाया है ?

विजयपालसिंह : घर ही बनाया है । सीरा इत्यादि सब चीजे घर पर ही मगवा ली थी ।

नाहरसिंह : अरे ओ छोरे, छोड दे उस बीडी को । किसका है यह छोरा ? मेरे विचार मे हमे गाव मे इस बात की भी मनाई कर देनी चाहिए कि कोई भी अठारह साल से छोटा तमाखू नही पी सकता । यह भी कोई बात है, इन लोगो ने इसे फैशन समझ लिया है । हा, तो भोपालसिह, तुमपर यह इलजाम है कि तुमने और तुम्हारे भाई ने नहर से निकलते हुए नाले से रात के समय खेतो को पानी दिया, जबकि तुम्हारी बारी के आने मे अभी आठ दिन थे । तुम इससे नाही तो कर नही सकते, क्योकि तुम्हारे खेतो मे पानी भरा हुआ था । क्या मैं पूछ सकता हू कि इस चोरी की क्या जरूरत थी ?

हरनाम : और भाई, इस तरह अन्याय से पानी लेने का मतलब तो यह हुआ कि दूसरे जरूरतमन्द किसान को

उसका जितना हक है, उससे कम पानी मिलेगा। अगर हम लोग अपने स्वार्थ का विचार त्याग दे तो नहरी पानी से हर किसान को खासा लाभ पहुच सकता है।

नाहरसिंह : ज्यादातर किसानो की यह शिकायत है कि उन्हे नहर से जितना चाहिए उतना पानी नही मिलता। शिकायत ठीक भी है, पर इसमे दोष किसका है ? उन्ही-का है, जो ऐसा कहते है, क्योकि वह उसे ठीक ढग से इस्तेमाल नही करते। आपस मे एक-दूसरे का साथ नही देते। मतलब यह कि हम सरकार का भी साथ नही देते। कम-से-कम अब हमे इसे राष्ट्रीय कार्य समझकर करना चाहिए। विदेशी सरकार की जगह अब यहा अपनी सरकार है। हमे सरकारी अधिकारियो को कहने का मौका नही देना चाहिए। बोलो भाई, तुम चुप क्यो हो ? क्या तुम इस गाव मे सबके साथ हिल-मिलकर नही रहना चाहते।

भोपालसिंह : नम्बरदारजी, असल मे हम अपनी इस करतूत पर बेहद शरमिन्दा है। बात यह है कि हमारे खेतो मे पानी ठहरता नही है।

हरनाम : इसमे किसी दूसरे का दोप थोडे ही है, भैया। यह तो अपने आलस के कारण है। पानी ठहरे कैसे ? खेतो के बाध कमजोर पड गये होगे। सूराख हो गये होगे। उनकी मरम्मत करो तब कही यह काम आगे चल सकेगा। आज सुबह छ बजे का लगा हुआ था, कालू को

लेकर बाध बनाने मे। इस दुपहरी मे खून पसीना एक हो जाता है आदमी का । पर भैया, किसान और नखरा इकट्ठा नही चल सकते ।

विजयपालसिह : वाह, क्या बात कही मेरे दोस्त ने। सोच लो कि लगातार कितने ही दिनो की कठिन मेहनत के बाद आज खलिहान से सारा अनाज निकाल सका हू । उधर बगिया मे कुछ छान-छप्पर डालकर मढैया बनवानी है । तपस्वी-जी की मढैया एक तरह से नये सिरे से बनवानी पडेगी ।

हरनाम : कब आ रहे है, वह महात्माजी ?

विजयपालसिह : बरसात के दोनो महीने यही रहेगे । तब-तक सबकुछ ठीक करना है, बगिया का । कुछ तख्त भी बनवाने होगे लोगो के लिए । महाराज का उपदेश सुनने बहुत-से लोग पहुच जाते है, आसपास के गावो से भी ।

नाहरसिह : अरे भाई, एक तो विद्वान और दूसरे सरल हृदय ! सुना है, गाव की जनता मे शिक्षा का प्रचार करने के लिए ही वह साधू हुए हैं । पहुचे हुए है । नाप-तोल-कर बात करते है । पिछली बार सारी तुलसी रामायण की कथा कर गये । हा तो, भोपालसिहजी, अब तुम्हारे पास हमारे प्रश्न का क्या उत्तर है ?

भोपालसिह : महाराज, मैं क्या कह सकता हू । मैं तो अप-राधी हू । पचायत जो भी सजा देगी, सर माथे उठा-ऊगा । हा, यह कह देता हू, मैं सबके बीच मे शरमिदा हू और आगे के लिए कभी ऐसी गलती नही करूगा । पचा-

यत माफी देदे तो उसके रहम पर। सजा दे तो उसकी मर्जी । गरीब आदमी हू ।

नाहरसिह : तुम गरीब हो, यह ठीक है। पर यहा तुम्हे अमीर कौन दीख रहा है ? सभी यहा एक जैसे है। एक किसान-परिवार के हैं। अच्छा पचो, मै अब आप लोगो की राय चाहता हू, भोपालसिह के बारे मे। तुम्ही कुछ कहो, चौधरी हरनामसिह ।

हरनाम . भाई, वैसे मेरी राय तो यह है कि जब भोपाल खुद ही अपना अपराध स्वीकार कर रहा है और अपनी करनी पर शरमिन्दा है तो एक बार हमे भी आगे के लिए उसकी ईमानदारी पर यकीन करना चाहिए और उसे अच्छा आदमी बनने का मौका देना चाहिए ।

[**बहुत-सी आवाजें उठती है—"ठीक है, ठीक है ।"**]

नाहरसिह शान्त हो जाओ, भाइयो। हा, तो और पचो की भी यही राय है। मेरी निजी राय भी यही है। अब भोपालसिह स्वय सोचे कि वह किस तरह अपने गाव की शोभा बनकर रह सकते हैं और बनवारीभाई, जिनके कि खेत को पानी ठीक ढग से नही मिल सका, उसका भी इन्तजाम किया जायगा। किसीको और कुछ कहना हो तो कह ले ?

हरनाम : मुझे एक बात पचायत के आगे रखनी है। मै समझता हू, उसमे गाववालो का ही भला होगा ।

विजयपालसिह : ऐसी बात है तो जहातक होगी, हम लोग उसे

पूरी करने की कोशिश करेगे ।

हरनाम : सज्जनो, बात यह है कि हमारे बच्चो के लिए स्कूल का प्रबन्ध होगया है। यह हमारी बहुत बडी खुश-किस्मती है । मै सोचता हू कि यदि कुछ बड़े भी पढने की इच्छा बनाये तो पचायत को चाहिए कि उनके पढने के लिए रात की पाठशाला खोले और उन पढनेवालो मे मै सबसे पहले उपस्थित हू ।

विजयपालसिह : हरनामसिहजी ठीक कहते हैं । मै भी पढने के लिए तैयार हू । अक्षरज्ञान तो सभीको हो जाना चाहिए ।

सब : हम सभी तैयार है ।

नाहरसिह : यह तो बहुत ही शुभ लक्षण है । पचायत से जहा-तक होगा, इस माग को पूरा करेगी । सिर्फ जगह और मास्टरजी की बात ही रही ।

भोपालसिह : जगह के लिए तो मै अपनी चौपाल दिये देता हू । उसके सामने कितना वडा चबूतरा है ।

कालू : पढा मै दिया करूगा ।

नाहरसिह : मैं किस मुह से आप लोगो की तारीफ करू । धन्य है आप सब लोग ! यदि हम इसी तरह से अपने-अपने कर्त्तव्य का ध्यान करे और अपनी-अपनी जिम्मेवारी को ईमानदारी से निभाये तो हमारे गाव स्वर्ग से होड ले सकते है । हम किसान है। देश की स्वतन्त्रता के साथ-साथ हमारी जिम्मेदारी कितनी बढ गई है, इसे आप सब लोग जानते ही है ! यह हम लोगो की मेहनत पर

एक कलक है कि हमारे देश की जनता के लिए दूसरे देशो से अन्न आये ? हमे, जितनी अधिक-से-अधिक मेहनत हो सकती है, करके अधिक अन्न उपजाना चाहिए। हम अन्नदाता है। हमे आराम नही चाहिए। हमारे होते हुए देश के लोग भूखे रहे, यह वास्तव मे दु ख का विषय है।

रूपसिह : नम्बरदारजी, आपकी सब बातो पर हम लोग ध्यान देगे। पर मेरी दो बाते है। एक तो यह कि गाव मे कुछ अखबार आ जाया करे तो अच्छा है। दूसरी यह कि रात की पाठशाला मे कालू न पढाकर यदि दिन के लडको को पढानेवाले मास्टरजी पढाये तो ठीक है या और मास्टरजी रख लिये जाय।

नाहरसिह : क्यो, कालू के पढाने मे क्या हर्ज है ?

रूपसिह : अजी, हर्ज यह है कि हम चाहते हैं कि कालू अभी और शहर जाकर पढे, वहा से काश्तकारी के बारे मे सबकुछ सीखकर आये और फिर यहा आकर खेती करे।

नाहरसिह : हा हरनामसिह, यह रूपा ठीक कहता है। अच्छा भाई, तुम्हारी यह बात भी मानी। कल्याणसिह, ठीक है भाई। तुम्हारी पढाई मे पचायत नुकसान नही पहुचायगी। इसमे भी तो पचायत का भला है कि उसमे पढे-लिखे आदमी आये। पर देखो बेटा, पढ-लिखकर शहर मे नौकरी न कर लेना। हा, हमे तुम्हारी सख्त जरूरत रहेगी। हरनामसिह भाई, इस लडके को आगे

पढाओ। यदि किसी बात की कमी होगी तो हम पूरी करेंगे।

हरनाम : सब आप लोगो की दया है, नम्बरदारजी।

नाहरसिंह : अच्छा, तो भाइयो, अब पचायत समाप्त होती है।

[सब जाते है।]

तीसरा दृश्य

[हरनामसिंह के मकान का बाहरी भाग। रामो इन्तजार कर रही है। ताक में दिया जल रहा है। तभी हरनामसिंह और कालू आते है]

रामो . क्यो जी, हो आये पचायत मे ? कैसी रही आज की पचायत ? क्या रूपा भी आ गया था वहा ?

हरनाम : आज तो पचायत का श्रीगणेश ही बडा अच्छा हुआ। फिर अन्त तो अच्छा होता ही। मै और विजयपालसिह गले मिले। फिर रूपा और विजयपालसिह एक-दूसरे से वैर-भाव भूलकर बोले। एक हुक्के से हम लोगो तमाखू पिया।

रामो : तुम वहा पचायत करते रहे, इधर नम्बरदारिन आई हुई थी। साथ मे उनकी वहन भी थी। कालू के ब्याह की बाते करती रही।

हरनाम : तुम्हारे तो दिमाग की चूल कुछ ढीली है। मै उसे आगे पढाने की सोच रहा हू. और तुम बहू के लिए घूम रही हो।

रामो : क्या अब यह जनमभर पढता ही जायगा ?

हरनाम : जनमभर ! कही पागल तो नही हो गई तू रामो ।

रामो : मै कहती हू, इसका व्याह करो, वहू घर आये, तो मै तीरथ कर आऊ ।

हरनाम : लो जी, यह भी खूब रही ! हम तो काश्तकारी और देश के भले के लिए सोच रहे है और यह है कि इन्हे तीरथ और बहू की पडी है । कही उसने दहेज-वहेज की बात तो नही की ?

रामो हा-हा, मुझे तो उनकी बातो से पता चल रहा था कि दहेज मे काफी-कुछ मिलेगा ।

हरनाम : बस, सारी इतनी-सी बात थी । सीधी तरह से क्यो नही कहती कि तुझे धन-दौलत का लालच है ? अरी, कभी दूसरो के पैसे से भी आजतक किसीकी पटी है । फिर, मैं तो इस दहेज-वहेज सबके खिलाफ हू ।

रामो : तो फिर मेरे व्याह मे इतना क्यो मागा था ?

हरनाम . मैने मागा था ? मुझपर इतना अन्याय न करो, रामो । वह सब मेरे पिताजी की इच्छा थी । वह जमाना ही कुछ और था । किसीमे इतनी हिम्मत नही होती थी कि उन बूढो के खिलाफ कुछ कह सके । पर आज तो समय बदल रहा है । और हमे समय के साथ बदलना है । आज हमे अपना भला नही, समाज का भला सोचना है । हमारा कर्तव्य अपने प्रति न होकर समाज के प्रति सोचना होगया है, उसमे चाहे हमारा अपना घाटा क्यो

न हो ।

रामो : यह सब तो ठीक है, पर हमारे भी घर मे बेटी है। अगर हम लेगे नही तो उसके ब्याह मे शोभा के लिए देगे कहा से ?

हरनाम : अरी, जब हम लेगे नही तो हम देगे ही क्यो ?

रामो : तो तुम पुरखो के चलाये हुए रीति-रिवाज हटा दोगे ?

हरनाम : जो रीति-रिवाज समाज के लिए नुकसान दे, उन्हे तो हमे हटाना ही होगा । चाहे वे पुरखो ने चलाये हो, चाहे किसी और ने । आज का समाज पुराने ढाचे पर चल नही सकता। और सुनो, पहली बात तो यह है कि मैं दहेज का विरोधी हू और दूसरी यह कि मै चार साल तक लडके की शादी के हक मे नही हू ।

रामो : तुम्हारी बाते मेरी समझ मे तो आती नही । अपनी ही हेकडी रखते हो, जैसे लडका मेरा तो कुछ है नही ।

हरनाम : यह मैने कब कहा । पर मै लडके को पढाना चाहता हू ।

रामो : पढाई के लिए रुपये कहा से लाओगे ? बूढे होने आये हो । लडका खेती-बाडी मे हाथ बटाये, इससे बढकर लडके के लिए और क्या हो सकता है ?

हरनाम : जीभर के मेहनत करूगा । अनाज पैदा होगा और लडका पढता जायगा । जब वह पढकर आ जायगा तब वह खेतो को सम्भाल लेगा और मैं आराम कर लूगा ।

कालू : **(आते हुए)** किस बात पर चर्चा हो रही है, काका ?

हरनाम : कुछ नही, तेरी मा की जरा वोलने की आदत है न !
सो वेचारी दिनभर चुप रहने के कारण अपनी थकान
उतार रही थी। तू कहा गया था, रे ?

कालू : नम्बरदार अपने साथ ले गये थे। पढाई-लिखाई की
वाते करते रहे। चाचा विजयपालसिहजी भी वही थे।
(**हँसता है**) कहते थे, बेटा, कभी पैसे-वैसे की कमी हो तो
हमे लिख देना। विजयपालसिह तो बडे बढिया आदमी
हैं, काका।

हरनाम : हा वेटा, मै, नम्बरदार और विजय तीनो ही पुराने
दोस्त है। अच्छा, अब तू सो जा। काफी रात होगई
है। कल तुझे तेरे मामा के यहा भेज दूगा। वही तुझे
दाखिल करा आयेगे। पर अपना फर्ज ध्यान मे रखना।

कालू : अवश्य काका ! हम किसान है और हमारा कर्तव्य
है देश को धनधान्य से भरपूर करना।

हरनाम : जुग-जुग जियो।

[**पटाक्षेप**]

न हो ।

रामो : यह सब तो ठीक है, पर हमारे भी घर मे बेटी है। अगर हम लेगे नही तो उसके ब्याह मे शोभा के लिए देगे कहा से ?

हरनाम : अरी, जब हम लेगे नही तो हम देगे ही क्यो ?

रामो : तो तुम पुरखो के चलाये हुए रीति-रिवाज हटा दोगे ?

हरनाम : जो रीति-रिवाज समाज के लिए नुकसान दे, उन्हे तो हमे हटाना ही होगा। चाहे वे पुरखो ने चलाये हो, चाहे किसी और ने। आज का समाज पुराने ढाचे पर चल नही सकता। और सुनो, पहली बात तो यह है कि मैं दहेज का विरोधी हू और दूसरी यह कि मै चार साल तक लडके की शादी के हक मे नही हू ।

रामो : तुम्हारी बाते मेरी समझ मे तो आती नही । अपनी ही हेकडी रखते हो, जैसे लडका मेरा तो कुछ है नही ।

हरनाम : यह मैने कब कहा । पर मै लडके को पढाना चाहता हू ।

रामो : पढाई के लिए रुपये कहा से लाओगे ? बूढे होने आये हो। लडका खेती-बाडी मे हाथ बटाये, इससे बढकर लडके के लिए और क्या हो सकता है ?

हरनाम : जीभर के मेहनत करूगा । अनाज पैदा होगा और लडका पढता जायगा । जब वह पढकर आ जायगा तब वह खेतो को सम्भाल लेगा और मै आराम कर लूगा ।

कालू : (आते हुए) किस बात पर चर्चा हो रही है, काका ?

हरनाम : कुछ नही, तेरी मा की जरा बोलने की आदत है न ! सो बेचारी दिनभर चुप रहने के कारण अपनी थकान उतार रही थी । तू कहा गया था, रे ?

कालू नम्बरदार अपने साथ ले गये थे । पढाई-लिखाई की बाते करते रहे । चाचा विजयपालसिहजी भी वही थे । **(हँसता है)** कहते थे, बेटा, कभी पैसे-वैसे की कमी हो तो हमे लिख देना । विजयपालसिह तो बडे बढिया आदमी है, काका ।

हरनाम · हा बेटा, मै, नम्बरदार और विजय तीनो ही पुराने दोस्त है । अच्छा, अब तू सो जा । काफी रात होगई है । कल तुझे तेरे मामा के यहा भेज दूगा । वही तुझे दाखिल करा आयेगे । पर अपना फर्ज ध्यान मे रखना ।

कालू : अवश्य काका ! हम किसान है और हमारा कर्तव्य है देश को धनधान्य से भरपूर करना ।

हरनाम : जुग-जुग जियो ।

[**पटाक्षेप**]

: ७ :

सपनों के बहाने

पात्र

राधेश्याम	.	गाव के एक पुरोहित
अब्दुल करीम	:	मौलवी
सुन्दर		राधेश्याम का नौकर
गणपति	:	एक किसान
भगवती	:	गणपति की पत्नी
पुजारी	:	मन्दिर का पुजारी

पहला दृश्य

[गांव मे पंडित राधेश्याम की चौपाल। पंडित अपनी चौपाल पर बैठे हुक्का पी रहे है। तभी मौलवी अब्दुल करीम आते है।]

अब्दुल करीम : (आते हुए) कहिये, पडितजी, क्या हाल-चाल हैं?

राधेश्याम : अरे वाह-वाह, हमारे भाग्य खुल गये जो आज आप इधर आ निकले। सुनाइये, मौलवीसाहब, ठीक-ठाक तो है। आइये, बैठिये। वाह भाई, वाह खूब आये।

[मौलवीसाहब एक मूढ़े पर बैठते है]

अब्दुल : भाई, बहुत दिनो से मिला नही था, सोचा कि आज

चलू । चलकर आपके दर्शन ही करू । इसी विचार से इधर चला आया ।

राधे : चिलम तो पीजियेगा ही ?

अब्दुल : हा-हा, पी लूगा । यह भी भला कोई पूछने की वात है ।

राधे : **(हुक्के का कश लगाते हुए)** ओ सुन्दर !

सुन्दर : **(दूर से, हकलाता हुआ)** आ-आ-आ-आया मा मा . मालिक **(आता है)** क्या हु-हु-हुक्म है ?

राधे : अरे, जल्दी से शरीफ भाई के यहा से हुक्का ले आ । कहना, पडितजी ने मगवाया है । उनके यहा मौलवी अब्दुल करीम आये हैं । उनके लिए चाहिए ।

सुन्दर : अ अ अभी, ल ल लाया **(जाता है)**

राधे : और सुनाओ, आजकल काम-काज का क्या हाल-चाल है ?

अब्दुल : तुमसे क्या छिपा है, पडितजी । वुरा ही हाल है । सुन्दर जवतक हुक्का लाये, तवतक लाओ दो कश चिलम से ही लगा ले ।

राधे : **(हुक्के से उतारकर चिलम देते हुए)** हा-हा, क्या हर्ज है । **(मौलवी चिलम पीते है)** हा भाई, काम-काज के मामले मे अपना भी यही हाल है । असल वात यह है, मौलवीसाहव, कि लोगो के मन से अव धरम-करम के भाव उठते जा रहे है । घोर कलजुग आ गया है, घोर कलजुग । अव इस धरती का ठिकाना नही है ।

अब्दुल : (सांस भरकर) दीखता तो मुझे भी यही है, पडित-जी । लोग अब अपने बडे-बूढो की राह पर चल ही नही रहे है। पहले यह था कि घरबैठे रोटी खाने को आ जाती थी । और अब पूरी मेहनत करो तो भी रोटी नसीब नही होती ।

राधे : बुरा हाल है, साहब ! पुरोहिताई मे तो अब बहुत ही कम बचत है । कुल-पुरोहित को तो अब कोई पूछता ही नही । जिससे चाहा, व्याह पढवा लिया । जिससे चाहा क्रियाकरम करवा लिया । और जनाब, अपना रहा-सहा बेडा गर्क कर दिया है इन समाज-सुधारको ने । हरेक को पढाने पर तुले हुए है । दिन-रात की पाठशालाए खोल दी है । बच्चो की तो बात छोडो, बडे-बूढो तक को पढा रहे है । अपनी पाठशाला का काम ही ठप्प होगया है, नही तो पचास-साठ उसीमे से निकाल लेते थे ।

अब्दुल : यही अपने साथ हुआ है, भैया । अपने मदरसे मे भी अब कोई नही आता । इस नई रोशनी ने तो हमे कहीका नही छोडा । ये कल के छोकरे अपने-आपको हमसे ज्यादा अक्लमंद मानने लगे है । किसान भी अब बहुत समझदार होते जा रहे हैं । पुरानी बातो से तो लोगो का यकीन ही उठता जा रहा है । ये नई-नई योज-नाए ! न जाने इस मुल्क का क्या होगा ?

राधे : मुल्क का नही, अपना और हमारा कहिये मौलवीसाहब ! कभी लोग हमारे पुरखो को देवता समझकर पूजते थे ।

अब हमे निठल्ला और निकम्मा समझते है।

अब्दुल : बिल्कुल यही बात अपने साथ है, पडितजी।

[तभी सुन्दर हुक्का लेकर आता है]

सुन्दर : य यह यह ली लीजिये, हुक्का। व व वो कहते है कि मौ ल वी सा . हेव इ...इधर भी...हो...के... जाय।

अब्दुल . वहुत अच्छा। अपना क्या है ! आज घूमने निकले है तो उनसे भी मिलते चलेगे।

राधे : सुन्दर, ज़रा चिलम तो ताजी कर ला।

सुन्दर : अच्छा जी। **(जाने लगता है)**

अब्दुल : अरे भाई, जरा सुनना। तम्बाकू तेज डालना।

सुन्दर : अ...अच्छा जी।

राधे · अच्छा जी का वच्चा। जा, जाकर जल्दी काम कर।

सुन्दर : अच्छा जी।

राधे : **(रुककर)** क्यो, क्या सलाह है, मौलवीसाहव। एक वाजी चौपड ही खेल ली जाय।

अब्दुल : अजी वाह, क्या बढिया बात कही ! इसमे सलाह का क्या काम। बिछाओ चौपड, हो जाय दो-दो हाथ।

[राधेश्याम चौपड़ बिछाते है और कौड़िया फेकते है]

राधे : यह लो आ गये पच्चीस, चल निकले हम तो।

अब्दुल . अपने कौन पीछे रहनेवाले है ! **(कौड़ियां फेंककर)** यह लो गिन लो ! है कि नही पैतीस ?

राधे : बस साहब ! चौपड तो राजा नल खेल गये। राजाओ

का खेल है, कोई हँसी-मजाक थोडे ही है ! या फिर उनके बाद राजा युधिष्ठिर ने खेला।

अब्दुल : हमारे भी एक बादशाह हुए है। बहुत बढिया खेलते थे। (**सोचते हुए**) नाम भूले जा रहा हू। बडा भला-सा नाम है।

राधे ऐसे कई बार मै भी बाते भूल जाता हू। अजी, मै दो-चार नाम और गिनाने को था। ध्यान मे ही नही आ रहे। खैर, चलो छोडो। (**कौड़ियां फेंकते हुए**) यह लो पैतीस (**फिर दुबारा फेंककर**) और यह लो चार। पिट गई तुम्हारी गोट।

अब्दुल : चलो, फिर क्या हुआ। (**हुक्का का कश लगाकर**) कुछ दिन कही सैर करने चला जाय, दोस्त राधेश्याम, तो कैसा रहे ? इन दिनो हम तो घरेलू झझटो से इतना उकता गये है कि क्या कहे।

राधे : विचार तो कोई बुरा नही। असल मे हम भी इन दिनो यहा की हवा से उकताये हुए है।

अब्दुल : सो तो दीखता ही है। फिर ज़रा हवा-पानी भी बदल जायगा। तो पडितजी, बात पक्की हो गई।

राधे : अरे वाह ! सवा सोलह आने। (**बीच-बीच में हुक्का चलता है**) अब सोचने-विचारने का सवाल नही है। बस, तैयारी कर लो।

अब्दुल : तैयारी करने मे कौन-सी देरी लगती है ! दो जोडे कपडे झोले मे डाले, लोटा-डोरी ली और चल दिये।

[तभी चौधरी गणपतिसिंह का प्रवेश]

गणपति : बन्दगी मौलवीसाहब । पालागन, पडितजी ।

अब्दुल : जीते रहो, खुदा खुश रक्खे ।

राधे : भगवान बडी उम्र करे । कहा से आ रहे हो ? दिनभर दीखे ही नही ।

गणपति : पास ही के गाव मे गया था । माधो के बैल बिकाऊ थे, सो वे खरीदने थे । भाव नही पटा, लौट आया । हा, सुनाओ तो, यह सफर की क्या बाते हो रही हैं ? कही बाहर जाने के इरादे है क्या ?

राधे : भई, है तो सही, भगवान पूरे कर दे तो । लो आओ, चौपड की एक बाजी लगाओ ।

गणपति : चौपड खेलने का तो अब समय ही नही मिलता, महाराज । हा, सफर की क्या बात कर रहे हो ?

अब्दुल : अरे भैया ! तुमसे क्या छिपाना ! बैठे-बैठे उकता गये थे । बरसो से कही बाहर गये ही नही, सो आज दोनो ने सोचा कि चलो, कुछ दिन बाहर ही घूम आये ।

राधे : तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी साथ चलो । एक से दो भले, दो से तीन । सफर मे तो जितने अधिक आदमी हो, आनन्द बढ जाता है । क्यो, भाई अब्दुलकरीम ?

अब्दुल : और क्या, फिर गणपति है भी दिल का सोना । तैयार हो जाओ, गणपति चौधरी । सोचने-विचारने का कोई काम नही है ।

राधे : अरे हा, इसमे ऐसी सोचने-विचारने की क्या बात है ।

खेत बो ही चुके हो। पानी भी एक-दो दे ही दिये होगे।

गणपति : हा, सो तो ठीक ही है। पर फिर भी घर के और बहुत-से काम रहते ही है ।

राधे : यह घर के काम-काज तो जिन्दगीभर खत्म नही होगे। अब मुझीको ले लो, घरेलू जिन्दगी के झझटो मे फसा-फसा ही बूढा होगया हू । अब पछता रहा हू कि कुछ धरम-पुन्न नही किया और भैया. यही हाल एक दिन तुम्हारा होगा ।

अब्दुल : फिर कौन-सी कोई महीनो की बात है, ज्यादा-से-ज्यादा छ-सात दिन । क्यो, पडितजी ।

राधे : और क्या ! आखिर हमे भी तो कोई देशनिकाला नही मिल रहा !

अब्दुल : यह बतला दू, चौधरी गणपति । यह मौका चूक गये तो फिर पछताओगे। हमारे जैसे साथी भी मिलने के नही ।

राधे : अरे नही । ऐसी भी कौन-सी बात है, मौलवीसाहब । चौधरी चलेगा हमारे साथ। इस जैसा साथी न हमे मिलने का, और न हमारे जैसे साथी इसे मिलने के। जाओ भैया, घर जाकर तैयारी करो सफर की ।

गणपति : पहले मुझे घर तो हो आने दो। नन्दू की मा से पूछ लू ।

राधे : अरे, वह कोई नाही करनेवाली है। बडी भली औरत है। बडी इज्जत करती है हमारी। हमारा नाम लोगे

तो सब काम बन जायगा।

गणपति : वह तो मै जानता हू। पर फिर भी घर से आकर उत्तर दूगा।

राधे : उत्तर मिला-मिलाया है। हमारी तरफ से बात पक्की है। यहा से चालीस कोस पर बडा भारी मेला लग रहा है। देखोगे तो तबीयत खुश हो जायगी। चलेगे भी पैदल ही।

गणपति . अच्छा, तो बात पक्की-सी ही समझो। अगर न जाने की बात हुई तो मै यहा आकर बता जाऊगा।

राधे : अब न जाने का कोई सवाल नही है, जी। चलेगे और अवश्य चलेगे कल सुबह ही यहा से चल देगे।

गणपति . जैसी बजरगबली की इच्छा। मै घर हो आऊ। **(जाता है)**

राधे : **(हँसता है)** कहो, मौलवीसाहब कैसी रही! कैसा पासा फैका, निकलने का नाम भी न ले सका।

अब्दुल : मान गये, गुरू। तुम्हारे जोड का इस गाव मे दूसरा नही है, पडित। **(हँसते है)**

राधे : अरे भाई, अपना जजमान है। हम है इसके पुरोहित। रास्ते मे साथ होगा तो कुछ टहल-सेवा तो करेगा ही।

अब्दुल : **(हँसते है)** हम लोग तो स्वरग के ठेकेदार हैं जी, धरती पर। कोई हमारी सेवा नही करेगा तो फिर किस-की करेगा?

राधे . आखिर हम विद्वान आदमी है, भाई! इसे तो बेचकर

खा जायगे। यह समझो, सफर मे सुन्दर न लिया, गणपति ले लिया।

अब्दुल : और क्या ! अच्छा, तो मै भी चलू। घरवाली राह देख रही होगी। फिर उसे बाहर जाने की बात पर राजी भी करना है। तुम्हे भी तो अभी पूछना होगा पडिताइन से।

राधे : **(हँसते है)** अरे, हम तुम लोगो की तरह जोरू के गुलाम नही है। जोरू हमारी गुलाम है।

अब्दुल : **(हँसते है)** वह तो हम अच्छी तरह जानते है। पडिताइन के सामने भीगी बिल्ली बन जाते हो। **(दोनो हँसते है)** अच्छा, तो मै चलू !

राधे : बस कल दिन निकलते ही आ जाना।

अब्दुल : बेफिक्र रहो। यह सैर भी खूब रहेगी। **(दोनो हँसते है और हुक्का पीते है)**

दूसरा दृश्य

[गणपति का घर। वह मकान के भीतर आकर अपनी पत्नी को आवाज देता है]

गणपति : **(ऊंचे स्वर मे)** अरी, सुनती हो भागवान, कहा हो ?

भगवती : **(दूर से)** ऐ है। बस आते ही शोर मचाना शुरू कर दिया ! **(पास आकर)** बच्चे को सुला रही थी। इतना चीख क्यो रहे हो ? ले आये बैल, कितने मे पटा सौदा ?

गणपति : कहा पटा सौदा ? एक बैल कुछ लगडाता था।

भगवती : फिर इतनी देर कहा लगा दी ? जल्दी आते तो कुछ काम मे ही हाथ बटाते । अब भैसो को सानी भी मै करू ! बैलो को पानी भी मैं पिलाऊ । चक्की पीसू, आखिर क्या समझ रक्खा है तुमने !

[खड़ी खाट को बिछाकर गणपति उसपर बैठता है]

गणपति : पर इतनी तेज होने की इसमे क्या बात है ! एक दिन थोडा-सा काम ज्यादा करना पड गया तो लगी सिर धुनने ! आखिर मै भी तो खून-पसीना एक करके रोटी कमाता हू । मै तो कभी नही चीखता । न होता मेरे साथ गृहस्थी का चक्कर तो मै भी यह झझट छोड किसी सन्यासी का चेला बनकर मस्ती से अपनी जिन्दगी बिताता !

भगवती : ऐ है ! अब लद गया चेला बनने का जमाना ! दुनिया वहुत वदल चुकी है। हाड तोडकर ही रोटी मिलती है आजकल !

गणपति : तेरा तो दिमाग खराव हो गया है। यह हिन्दुस्तान है, हिन्दुस्तान ! यहा अब भी साधू-सन्यासियो की बडी मानता है ।

भगवती : साधू-सन्यासी कोई और होते है, तुम्हारे जैसे नही । न कुछ आय, न कुछ जाय । बन गये स्वामीजी, **(तेज होकर)** बडी धौस देते है साधू बनने की

गणपति : (बात काटकर) छोड इस झगडे को । मेरी बात सुन ।

भगवती : कहो, क्या कहना चाहते हो ?

गणपति : मै छ -सात दिन के लिए जरा बाहर जा रहा हू ।

भगवती : कोई खास काम आ पडा है, क्या ?

गणपति : खास काम क्या ! जरा सैर-सपाटे का विचार हुआ है ।

भगवती : वाहजी धन्ना सेठ ! घर मे नही खाने को, रानी चली भुनाने को । शरम नही आती यह कहते कि सैर-सपाटे को जा रहा हू । देखते हो मेरी तबीयत ठीक नही रहती, मुन्ना बीमार है, ऐसे मे तुम्हे पडी है सैर की !

गणपति : अरी, बडा भारी मेला लग रहा है । देख आऊगा । हो सका तो बैलो की जोडी भी वही से खरीद लाऊगा ।

भगवती : बैलो के लिए तो ऐसे कह रहे हो, जैसे आस-पास कही मिलते ही नही। मगल को जाकर पैठ से खरीद लाना । गागर उठाओ, नहा-धोकर आओ और खाना खाने बैठो।

गणपति : तबीयत कुछ घुट-सी रही है । नहाने की इच्छा नही । यही हाथ-मुह धोये लेता हू ।

भगवती : यह तो बताओ, जब गाव मे जल्दी आगये थे तो घर क्यो नही चले आये । कहा बैठे रहे इतनी देर ?

गणपति : पडित राधेश्यामजी की बैठक पर कुछ देर लग गई। वही मौलवी अब्दुल करीम भी आये हुए थे । चौपड चल रही थी। कुछ इधर-उधर की बाते हो रही थी । पडितजी तुम्हारी बडी तारीफ कर रहे थे, कह रहे थे— ऐसी भली औरत इस गाव मे दूसरी नही है । साक्षात लक्ष्मी

है, लक्ष्मी ।

भगवती : (नरमी से) अजी रहने भी दो, मेरी तारीफ की ऐसी क्या जरूरत है । पर किस सिलसिले मे चल निकली मेरी बात ।

गणपति : अरी, यही बाहर जाने की बात हो रही थी । मौलवी-साहब और पण्डितजी दोनो ही मेला देखने और सैर करने बाहर जा रहे है । मुझसे बोले—तुम भी चलो हमारे साथ, जरा अच्छी निभेगी । मैने कहा—नन्दू की मा कहा जाने देगी ! वह बोले—नही, वह रोकने की नही । बडी ही भली औरत है । वह समझती है कि जिन्दगी मे आदमी को आराम की भी जरूरत है । आदमी आदमी है, कोई कोल्हू का बैल तो है नही !

भगवती · सो तो ठीक है । मै कब कहती हू कि आदमी जिन्दगी मे आराम न करे । फिर भी घर तो देखना ही पडता है । मैं समझी थी, तुम अकेले ही जाना चाहते हो । अगर साथ है तो घूम आओ दो-चार दिन ।

गणपति : नही, अब नही जाऊगा । आखिर तुम अकेली क्या-क्या काम कर पाओगी । फिर नन्दू की तबीयत भी खराब है ।

भगवती : ओहो, पर तुम कोई जादू-टोना करके तो उसकी तबीयत ठीक नही कर सकते । हकीम से दवाई आती है सो तो मैं हो ही आया करूगी ।

गणपति : नही, अब नही, फिर कभी सही । रोटी खाकर अभी

मै नाही कर आऊगा, पडितजी से।

भगवती : (**हँसकर**) वाह जी, अब लगे नखरे बघारने। मै कहती हू, कुल-पुरोहित चाहते है तो घूम आओ उनके साथ। पर इस बात का ध्यान रखना कि उनकी सेवा मे कोई कोर-कसर न रह जाय।

गणपति : इसी बात से तो मै घबरा रहा हू कि उन लोगो के साथ सारा काम मुझीको देखना पडेगा। कभी हुक्का भर, कभी यह कर, कभी वह कर।

भगवती : फिर क्या हुआ! बडो की सेवा से आदमी को यश ही मिलता है। इन छोटी-छोटी बातो से घबरा नही जाते।

राधे : (**बाहर से आवाज देते हुए**) अरे भई, गणपति चौधरी है क्या घर मे ?

भगवती : लो, पडितजी खुद ही आ गये।

गणपति : आ जाओ पडितजी, आ जाओ।

[**राधेश्याम घर के भीतर आते है**]

भगवती : चरण छूती हू, पडितजी।

राधे : जीती रहो, बेटी। अरे, सुनाओ भाई चौधरी! तैयार हो न चलने को ?

भगवती : हा महाराज, यह जरूर जायगे आपके साथ। भला गुरुजनो की सेवा का मौका कब-कब मिलता है।

राधे : जुग-जुग सुहागवती रहो, बेटी। भगवान तुमपर अपनी कृपा बनाये रक्खें। मुझे पूरी उम्मीद थी कि तुम हमारे

साथ चलने से नाही नही करोगी।

गणपति : बैठो न, पडितजी, चिलम भर के लाऊ आपके लिए।

राधे : अरे, इसकी कोई जरूरत नही। बस, अब तो मैं चलूगा अच्छा तो पौ फटते ही हमारे यहा पहुच जाना **(जाते है)**

गणपति : ऐसा ही होगा, महाराज। कल सुबह ही आपके पास पहुच जाऊगा। **(रुककर)** अरी भगवती, यह तूने क्या किया ? तुझे मैने कहा नही था कि मै नही जाना चाहूगा। इनकी टहल-सेवा के मारे मेरा नाक मे दम आ जायगा।

भगवती : पहले सोचा होता। उनकी चौपाल पर होकर क्यो आये थे ? जल्दी ही अब खाना खाओ और सामान बाध-कर रख दो। सुबह उठते ही चले जाना।

गणपति : अच्छा, जैसी भगवान की इच्छा !

तीसरा दृश्य

[राधेश्याम, अब्दुल करीम और गणपति चौधरी सफर मे]

राधे : थककर चकनाचूर हो गया मै तो।

अब्दुल : यही हाल अपना है, पडितजी। थकावट के मारे सुन्न हो रही है देह।

गणपति : आप लोगो का अभी से यह हाल है तो आगे क्या होगा ? लाओ, दोनो जने अपना सामान मुझे दे दो, ताकि चलने मे आसानी हो।

राधे : अरे नही, ऐसी भी क्या बात है, भाई !

अब्दुल : गणपति का दिल न दुखाओ, पडितजी। मान लो इसकी बात भी।

राधे : अच्छा भाई ! **(दोनो अपना बोझ उसे दे देते है।)** गणपति को हम नाराज नही कर सकते।

अब्दुल : अब जरा तेज-तेज चलो। जल्दी-जल्दी चार-पाच कोस और तय कर ले !

राधे : आज सूरज भगवान भी आग बरसा रहे है। गणपति, थक जाओ तो हमे बता देना भाई ! हमे तेरा बडा ध्यान है।

गणपति : **(व्यग से)** सो तो मै जानता हू, महाराज। **(चलते जा रहे है।)**

राधे · भाई ! अब तो इस जगह कुछ देर आराम किया जाय और दोपहर का खाना भी यही खा लिया जाय। सामने के कुए से पानी तो ले आना, गणपति चौधरी।

गणपति : अभी लाता हू, पडितजी **(जाता है)**

राधे : **(हँसकर)** कहो, मौलवीसाहब। कैसा रहा हमारा चुनाव ?

अब्दुल : दाद देनी पडती है आपकी अक्ल की। इसके साथ सफर का पता भी न चलेगा।

राधे : अभी तो देखते चलो। रात की रोटी भी इसीसे बनवायेगे। यह भी क्या याद करेगा कि किनके साथ सैर करने आया था।

अब्दुल : बुद्धू है। अगर दुनिया मे इस तरह के मूरख न हो तो हमे-तुम्हे कौन पूछे ?

राधे : अब चुप करो, वह आ रहा है।

[तीनो बैठकर खाना खाते है। खाना खाने के बाद]

राधे : खाने मे मजा आ गया। वाह क्या स्वादिष्ट था। भगवती खाना भी खूब बनाती है।

गणपति : कभी हमारे हाथ का बनाया हुआ खाना भी खाकर देखो, पडितजी।

राधे : अरे, मै तो भूल ही गया था ! तुम तो इस काम मे उस्ताद हो। अच्छा, शाम को दिखाओ अपना हुनर। हमारे लिए खीर बने और मौलवीजी के लिए हलवा।

अब्दुल : अरे हमारा क्या है, भाई, जो खिला दोगे, खा लेगे।

राधे : हलवा ही बनेगा जी। हमारे गणपति मे सेवा-भावना बहुत है। छ कोस पर ही छोटा-सा कस्बा पडता है। उसके बाहर एक छोटी-सी सराय है। वही ठहरेगे। कुछ बर्तन तो है ही, कुछ भटियारिन से किराये पर ले देगे। सामान गणपति बाजार से खरीद लायेगा। क्यो गणपति ?

गणपति : जी हा।

अब्दुल : जीते रहो, मेरे शेर, जीते रहो। आज रात को खीर और हलवा बन ही जाय। ऐसा खाना खिलाओ कि हम जिन्दगीभर न भूले।

गणपति : अजी, भूलने का क्या काम ! याद रखोगे कि चौधरी गणपति के साथ भी कभी यात्रा की थी।

राधे : अच्छे साथी हमेशा ही याद रहते है। आओ फिर आगे की यात्रा करे। आराम करने को आज की पूरी रात मिल जायगी। कल शाम को मेले मे मिल ही जायगे। फिर चले। **(तीनो चलते है)**

चौथा दृश्य

[सराय के बाहर का आंगन। राधेश्याम और अब्दुल करीम बाते कर रहे है]

अब्दुल : लो पडितजी, जगह तो रातभर के लिए अच्छी मिल गई। खुली हवा है, छत पर या आगन मे, जहा मरजी है, सोओ। कल सुबह उठते ही यहा से चल देगे और दिन का खाना कही रास्ते मे किसी पेड के नीचे बैठकर बनायेगे।

राधे : बिल्कुल ठीक। **(सोचते हुए)** गणपति को गये काफी देर हो गई है, अभी तक नही लौटा। अभी उसे खाना बनाने मे भी काफी देर लगेगी। भूख के मारे बुरा हाल हो रहा है।

अब्दुल : अरे पडितजी, इसमे घबराने की भला क्या बात है। उसके आते ही बाजार चलेगे और थोडा नाश्ता कर आवेगे।

राधे : बात पते की कही।

अब्दुल : वह भी तो कुछ खा-पीकर आयेगा बाजार से।

राधे : जी नही, यह बात कभी नही हो सकती। वह हम गुरुजनो को खिलाने से पहले कभी नही खा सकता। लो,

वह आ ही गया ।

अब्दुल : बडी देर लगा दी आने मे, गणपति भैया! क्यो, कोई खास बात हो गई क्या? हम दोनो तो यहा घबरा रहे थे। कही कोई झगडा वगैरह न हो गया हो ।

गणपति : वाह, ऐसी कोई बात नही थी। जरा बढिया चावल ढूढने मे देर लग गई, फिर बादाम ढूढता रहा। नया शहर है। इसलिए कुछ वक्त लग गया। फिर कल पौ फटते ही चल देना है, इसलिए कल के लिए भी सामान खरीदना था ।

राधे : मतलब यह कि तुम कल के लिए भी सामान खरीद लाये।

गणपति : और क्या?

अब्दुल : रुपये कम तो नही पड गये थे?

गणपति : नही महाराज, उल्टा, यह एक रुपया बचा ही है। लो, इसे रख लो।

राधे : **(रुपया लेते हुए)** बहुत अच्छा, जीते रहो। हा भाई, कहो तो हम भी कुछ देर कस्बे की सैर कर आये?

गणपति . जरूर, जरूर! पर जल्दी लौट आना ।

राधे : बस आना-जाना ही समझो। सुनो, खाना बनाने के बाद आग मत बुझा देना। खाने के बाद हुक्का पियेगे ।

[कहते हुए दोनों जाते है। गणपति खाना बनाने मे लगता है। मंच पर थोड़ी देर के लिए अन्धकार, कुछ देर बाद पुजारी आता है।]

पुजारी : बडे जतन से खाना बना रहे हो, चौधरी ।

गरणपति : बन चुका, महाराज। आज जरा पडितजी और मौलवीसाहब को अपने करतब दिखाने है। बेचारे आ ही रहे होगे। भूख के मारे उनके बुरे हाल होगे।

पुजारी : भूख के मारे! अरे भाई, पर वे तो कस्बे मे ग्यामू हलवाई की दुकान पर बैठे ठाठ से पूरिया उडा रहे है।

गरणपति : हू! यह बात! फिर यह खीर-हलवा किसलिए बनवाया है ?

पुजारी : इसे तुम ठाठ से खाना, चौधरी। **(पुजारी जाता है।)**

गरणपति : हू! वे दोनो अभी तक नही आये। भूख के मारे अपना बुरा हाल है। पता नही, कहा-कहा मटरगश्ती कर रहे होगे। खा रहे होगे बाजार मे बढिया-बढिया चीजे! कहा फस गया इनके चक्कर मे।

[दोनो आते है]

गरणपति : बडी देर लगा दी आप लोगो ने ?

राधे : अरे, क्या बताये भैया। मजूपुरवाले हरफूलसिह मिल गये थे। बातो-बातो मे सपनो की बाते चल निकली। बहस छिड गई। वह तो चले गये, पर हम और मौलवी-साहब अड गये।

गरणपति : क्यो सपनो की ऐसी क्या बात थी ?

अब्दुल : अरे यही कि कौन बढिया सपने देखता है। पडितजी कहते है, मुझे बढिया सपने आते है और मै कहता हू मुझे।

राधे : सपने तो तू भी देखता होगा, गणपति ?

गरणपति : जी हा, कभी-कभी मुझे भी दीख जाते है। पर छोडो

इन सपनो की बाते। आओ, पहले पेट-पूजा करे। भूख के मारे बुरा हाल है।

राधे : अरे भाई, भूख के मारे तो अपना भी बुरा हाल है, पर शर्त जो लग गई है हममे और मौलवीसाहब मे। बताओ क्या करे ?

गणपति : कैसी शर्त ?

अब्दुल : अरे, यही कि आज रात को हम तीनो जने सपने देखेगे। हम तीनो भूखे ही सो जायगे और सुबह उठकर अपना-अपना रात का देखा सपना सुनायेगे। जिसका सपना सबसे बढिया होगा वह पहले नम्बर पर खाना खायगा। जिसका सपना दूसरे दर्जे का होगा वह दूसरे नम्बर पर खायगा, तीसरा बचा-खुचा खायगा।

गणपति : पर महाराज, अपना तो भूख के

राधे : **(बात काटकर)** अब क्या हो सकता है, चौधरी ! एक रात भूखा रहने से हममे से कोई मर थोडे ही जायगा !

गणपति (उदासी से) अच्छा जैसी पचो की राय।

अब्दुल : अच्छा भाई, अब सोने की बात करो।

[वहीं तीनो सोते है। मच पर कुछ देर के लिए अन्धकार। फिर सुबह होती हुई दिखाई देती है। राधेश्याम पंडित राम का नाम लेकर उठते है।]

राधे : जागो न अब अब्दुल भाई !

अब्दुल : **(आंखें खोलते हुए)** अरे वाह ! दिन चढ आया ! गणपति अभी तक सो रहा है ! जगाऊ इसे भी !

राधे : नही, अभी इसे सोने दो । हम लोग तबतक नहा-धो ले । वह कुछ नाराज है ।

अब्दुल : हा, रात बेचारे को भूखा सो जाना पडा ।

राधे : कितनी ही देर तक उसकी आख नही लगी ।

अब्दुल : अजी, भूख के मारे नीद किसे आती है !

राधे : आओ, फिर जल्दी नहा-धो ले ।

[कुछ देर बाहर जाकर फिर लौटते है ।]

अब्दुल : अब जगाओ इसको । अपने-अपने सपने सुनाये और कुछ खाये । भूख भडक उठी है ।

राधे : (झकझोरते हुए) गणपति, ओ गणपति !

गणपति : (कराहते हुए) हायरे मर गया ! पता नही क्यो, सारा बदन दर्द कर रहा है । मुझे मत छेडो, पडितजी !

अब्दुल : क्यो, क्या बात है ?

गणपति : आह ! सारी देह टूट रही है ।

राधे : अच्छा, तो पहले उठकर बैठ जाओ । बोलो, तुमने क्या सपना देखा ?

गणपति : आप ही पहले सुनाइये । हाय राम, मै मर गया !

[उठकर बैठता है ।]

राधे : लो, पहले मै अपना सपना सुनाता हू । रात को सोते-सोते जैसे ही एक बजा कि मैने देखा, यहा से सम्राट विक्रमादित्य महाराज की सवारी निकल रही है । साथ मे बढिया बाजे-गाजे, ढोल-ढमक्का है । अनगिनत हाथी-घोडे है और बहुत बडी फौज ।

गरणपति : (अचम्भे से) ऐसी बात ! पर हमारी नीद कमबख्त तब भी न खुली !

राधे : मेरे पास राजदूत आया और बडे आदर-सत्कार से सिर झुकाकर बोला, श्रीमान पूज्य पडित राधेश्यामजी महाराज, चलिये, आपको महाराजधिराज विक्रमादित्य महाराज ने बुलाया है। उनके कानो मे आपके पूज्य और पवित्र कार्यो की प्रशसा पहुची है।

गरणपति : वाह, तब तो ठाठ हो गये पडितजी आपके !

राधे : अभी आगे सुनो। बीच मे मत टोको, मैने राजदूत से कहा कि मेरे इतने भाग्य कहा ! अधम पापी प्राणी हू। पर मेरी बात उसने नही सुनी। वह मुझे अपने साथ ले गया। वहा मेरे पहुचते ही महाराज ने आगे बढकर मेरा स्वागत किया। मुझे अपने पास बिठाया, फिर मेरे स्वागत मे नाच-गाने हुए।

अब्दुल : वाह, वाह ! मान गये, कितना हसीन ख्वाब है !

गरणपति : हम तो सुनकर पागल हुए जा रहे है। अभागे हैं हम, जिन्हे ऐसे सपने नही आते ! बडे ठाठ रहे होगे आपके तो, पडितजी !

राधे : छत्तीस प्रकार के भोजन आये, सोमरस आया।

गरणपति : आपने तो खाने से हाथ मुश्किल से ही हटाया होगा, पडितजी !

राधे : अरे, आगे सुनो। महाराज ने मेरे पुण्य कार्यो की सराहना की और मुझसे दरबार मे रहने के लिए बडा ही आग्रह

-क्रियाँ।

गणपति : तो फिर वही रह जाते ! यहा क्यो आ गये ! बडे भाग्य से ऐसी जगह मिली थी, उसे भी छोड आये।

राधे : पर तुम लोग जो यही थे। मैने कहा—नही महाराज, मेरे दो साथी भूखे-प्यासे सो रहे है। मुझे जाना ही पडेगा। बस, इतना कहते ही नीद खुल गई।

अब्दुल : अजी, पडितजी ! आप धर्मावतार हैं। इस धरती पर आपका कोई सानी नही।

गणपति : भाई, वैसे सपना तो बढिया रहा, पर रही पडितजी की बदकिस्मती ! राजा विक्रमादित्य जिदा नही है, नही तो असल मे अपने दरबार मे ही बुला लेते।

अब्दुल : कैसे बुला लेते ?

गणपति : जब इन्होने महाराज को देखा है तो उन्होने भी इन्हे देखा होगा। सुबह उठते ही कहते कि ढूढकर लाओ उस धर्मावतार पडित को।

अब्दुल : बात तो ठीक है।

राधे : छोडो भी इस पचडे को। मौलवीसाहब, अब आप अपना सपना सुनाइये।

अब्दुल : अच्छा लो, सुनो ! सपने मे मैंने क्या देखा कि मैं आसमान मे उडा जा रहा हू और उडते-उडते बडी ही खूबसूरत बस्ती मे जा पहुचा हू। चारो ओर फूलो और फलो के बाग-बगीचे हैं। वैसे तो अब भी समझ मे नही आ रहा है कि वह कौन-सा मुल्क था, पर मेरा

अन्दाज है कि परियो की दुनिया रही होगी ।

गणपति : अरे वाह, धन्य हो ! आपके भी यह ठाठ, मौलवी-साहब ! हा, फिर क्या हुआ !

अब्दुल : मैंने ऐसा कोई नेक काम अपनी जिन्दगी मे नही किया, जिसके लिए मै ऐसे हसीन मुल्क मे पहुचता ।

गणपति (दबी जबान से) सत्य वचन महाराज !

अब्दुल : वहा के बादशाह को खबर हुई कि मौलवी अब्दुल करीम आये हैं । बादशाह ने मुझे बुलाया । वहा जो भी आदमी मुझे देखता, सलाम करता । आखिर मुझे आया देखकर उस नेक बादशाह ने मुझे अपने पास बगल मे बिठाया और कहा—"ऐ मौलवी ! तेरे पाक इरादो और नेक कामो की हर जगह तारीफ हो रही है ।" फिर हूरो के नाच हुए । मय के दौर चले । कई तरह के जायकेदार खाने आये ।

गणपति : वाह-वाह, बडे-बडे ठाठ रहे ।

राधे : सचमुच बडी मौज रही आपकी !

अब्दुल : बादशाह बोले—तुम यही रह जाओ ! पर मैंने यही कहा कि मेरे दो साथी धरती पर है । भूखे सो रहे है । नीद खुलने पर देखा कि यही हूं ।

राधे : वाह, बहुत बढिया सपना रहा आपका ।

गणपति : हू ! तो तुम लोगो ने एक से ही सपने देखे । हा भाई, तुम लोग ठहरे धर्मात्मा आदमी । हमे ऐसे सपने कैसे आ सकते है !

राधे : अब तुम सुनाओ ।

गणपति : (कराहते हुए) मुझ सपने की याद मत दिलाओ महाराज ! मेरा सारा शरीर दर्द कर रहा है ।

अब्दुल : क्यो, ऐसी क्या बात है ?

गणपति : मत पूछो महाराज, अपना तो बहुत ही बुरा हाल रहा । जैसे ही रात का एक बजा .

अब्दुल : तुम्हे कैसे पता चल गया कि रात का एक बजा है ?

गणपति : जैसे आप लोगो को लग गया था ।

राधे : हमने तो अन्दाजे से समझा ।

गणपति : तो अपना भी अन्दाजा ही रहा होगा । अचानक मेरी पीठ पर ऐसे लगा, पडितजी, जैसे पहाड टूट पडा हो । हडबडाकर जो मैने आखे खोली तो देखता क्या हू साक्षात् घासी नाई का भूत मेरे सामने खडा है । मुझे जगा देख एक लात और मारी मेरी पीठ पर । पडितजी, क्या बताऊ मेरी पीठ की क्या हालत हुई । मैने उसके आगे हाथ जोडकर पूछा—मेरे लिए क्या आज्ञा है, महाराज ? गुस्से से बोला–महाराज का बच्चा ! क्यो बे गणपति, तू भूखा क्यो सो रहा है ? और यह सोधी-सोधी पकवान की सुगन्ध कहा से आ रही है ? तुम लोग तो जानते ही हो कि सुगन्ध के पाते ही भूत आ जाते है । मैने सपनेवाली बात बता दी और कहा कि महाराज, वह पडितजी और मौलवीसाहब के लिए पकवान बनाये है । साथ ही मेरे चार बाजरे के रोट रक्खे है ।

सुनते ही वह बड़े ज़ोर से गरजा, साथ ही एक लात और तानकर मेरी पीठ पर जमाई। फिर कडककर बोला—खा सारी खीर, खा सारा हलवा। **(सास भरकर)** मै बडी परेशानी मे पडा।

अब्दुल . (हँसते हुए) फिर क्या हुआ ?

गणपति : होना क्या था, मौलवीसाहब ! मैने हिम्मत बाधकर प्रार्थना की—मै नही खाऊगा, महाराज ! मुझे उन दोनो के शाप का डर है। सुनते ही गुस्से से वह लाल-पीला हो गया। बोला—भाड मे जाय वे दोनो ! हमारे होते किसकी हिम्मत है, जो तुझे कुछ कह सके। खा यह सब ! मजबूरन मुझे सबकुछ खाना पडा। फिर बोला—बाजरे के चारो रोट भी खा। पेट मे जगह न होते हुए भी मुझे वे खाने पडे। बडी मुश्किल से सब निबटाया। वह बडा प्रसन्न हुआ। बोला—सुन, सुबह होते ही अपने घर चले जाना। होगई सैर। जाकर अपने घर का काम-काज देख। नही लौटा तो फिर मुझे आना पडेगा। इतना कहकर वह गायब होगया। **(सांस भरकर)** महाराज, मै गाव जा रहा हू।

राधे : क्या मतलब ?

गणपति . मतलब यही कि भूत की आज्ञा है। उसे कैसे टाल सकता हू ?

अब्दुल : अरे सपनो की बातो पर इतना यकीन कर बैठा !

गणपति : सपना कौन कहता है, महाराज ! यह तो असली

बात है।

राधे : (बर्तन देखकर) अरे सचमुच, ये सब खाली हैं।

अब्दुल : तूने हमे क्यों नही जगा लिया ?

गणपति : बहुत जगाया, महाराज ! काफी शोर मचाया, पर मुझ ग़रीब की सुनता ही कौन था। आप दोनो उस समय राजाओं और बादशाहो के दरबारो मे नाच-गाने मे मस्त थे। छत्तीस प्रकार के भोजन उडा रहे थे। मैं गरीब यहां मार खा रहा था। हाय, हायरे, मेरी बोटी-बोटी दुःख रही है। अच्छा, मैं चलू।

राधे : अरे ठहर ! हम भी तेरे साथ चलते है।

गणपति : नही महाराज, अकेले जाने का ही हुक्म हुआ है।

[हँसता हुआ जाता है।]

राधे : (रोते हुए) अरे, इसने तो हमारे साथ बहुत बुरा किया' मौलवीसाहब। सपने के बहाने सबकुछ खा-पी गया। अब हम क्या करें ?

[पटाक्षेप]

●